सुगन्ध

जून - 2015
वर्ष - 13 अंक - 3

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका

संपादकीय

आइए पलाश बनें...

नंगी हरेक डाल, हरेक फूल है यतीम
फिर भी सुखी पलाश है इस तेज धूप में।।

गोपाल दास 'नीरज' की उपरोक्त पंक्तियाँ हमारे जिजीविषा को संबल देती हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी हमें जीतने के लिए अभिप्रेरित करती हैं। हमारी भावनाओं की धार को तीक्ष्ण और संघर्षशील बनाने का उपक्रम करती हैं। संभवत: ऐसी ही कल्पना हमारे संविधान निर्माताओं, स्वतंत्रता आंदोलन के मतवालों और लाखों बेनाम देशवासियों के मन में भी रही होगी, जो अपनी माटी और परिपाटी के लिए पलाश बनकर संघर्ष किया था। जी हाँ! उन्होंने ऐसा चाहा कि जिएंगे तो अपनी शर्त पर और कभी नहीं कहेंगे कि हमारी मजबूरी थी। उन्होंने कभी बड़े-बड़े गगनचुंबी इमारतों और तेज रफ्तार भागती बुलेट ट्रेन की कल्पना नहीं की थी। उनकी आँखों में स्मार्ट सिटी की अवधारणा तो बिल्कुल नहीं थी।

वे उधार माँगी गई भौतिकता से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। उनकी कल्पनाओं में कैक्टस और विदेशी कुत्ते कहीं नहीं थे। उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी कि उनकी भावनाओं की कीमत कभी विश्व बैंक तय करेगा। उनके खाता-बही में किसान की आत्महत्या और सरेआम माँ-बहनों के साथ दरिंदगी का उल्लेख नहीं था। वे कभी नहीं चाहते थे कि उनके गाँव का नौजवान अपने गाँव के लहलहाते खेतों को छोड़ शहर की बेदर्द गलियों में रोटी की तलाश करे। उनकी कल्पनाओं में आज जैसा बहुत कुछ नहीं था।

वे अपने आकाश और अपनी धरती के हिमायती थे। उनकी आँखों में गौरैये जैसी अलमस्त जिंदगी और कबूतर की ऊँची उड़ान वाली जिंदगी की तलाश थी। उनके स्पंदन में अपनी भाषा और संस्कृति की गुटरगूँ थी। वे लालटेन की टिमटिमाती रोशनी से अधिक कुछ नहीं चाहते थे। उनकी आँखों में गंगी-जमुनी तहजीब थी और उनके आँसुओं का स्वाद एक ही था। उनके मन में खुशहाल गाँव था और शहरी बाबुओं के लिए नेह-निवेदन। उनके मन में नव-भारत के लिए नव-सृजन का बीज था, जिसे वे अपनी भाषा में बोना व उगाना चाहते थे। वे पलाश की अवधारणा से अनुप्राणित थे। वे पतझड़ में भी मुस्कराना और तपती धूप में भी खिलखिलाना चाहते थे। उनकी रगों में संवेदनाओं की ऐसी प्रबल धारा प्रवाहित होती थी कि शरद की ठंड और ग्रीष्म की लू भी उनसे लजा जाती थी।

इसीलिए तो विशाल भारत की कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए हिंदी को राजभाषा बनाया गया था। नहीं तो महात्मा गांधी को यह कहने की क्या जरूरत थी कि 'दुनिया से कह दो कि गांधी अंग्रेजी भूल गया।'

गांधी जी अंग्रेजी के विरोधी नहीं थे, बल्कि उन्होंने अपने देश की माटी और उसकी भाषा व संस्कृति के माध्यम से देश में समग्र विकास की परिकल्पना की थी, क्योंकि उनका मानना था कि अपनी भाषा और संस्कृति के माध्यम से होने वाले विकास में स्थायित्व और समेकित विकास की अवधारणा अंतर्निहित है। उनमें विज्ञान और तकनीक का विरोध लेशमात्र भी नहीं था।

भाषा के मामले में भी हमारे पुरखों की अवधारणा मौलिक चिंतन के विकास से जुड़ी थी। लेकिन एक नौजवान देश के रूप में विकसित हो रहे भारत की भाषायी अवधारणा को हम उनकी आकांक्षा के अनुरूप पहचान नहीं दे पाए हैं। ऐसी बात नहीं है कि हिंदी का विकास नहीं हुआ है, बल्कि सच तो यह है कि हिंदी के विकास के मामले में भी हमने बहुत तरक्की की है। हमारी फिल्मों और टी वी कार्यक्रमों ने हिंदी का खूब विकास किया है। विदेशी धरती पर भी भारतीय अपनी भाषाओं और हिंदी का खूब सम्मान करते हुए दीख रहे हैं।

हम केवल सरकारी कामकाज के क्षेत्र में पिछड़ रहे हैं। हमारे देश में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए केवल **45000** हजार के आस-पास सरकारी कर्मचारी नियुक्त किए गए हैं, जिनका काम केंद्र सरकार, सार्वजनिक उपक्रमों तथा बैंकों एवं बीमा कंपनियों में राजभाषा को स्थापित करना होता है, जिसे प्राय: संगठन दोयम दर्जे का काम मानते हैं। सवाल यह नहीं है कि राजभाषा को कार्यालयीन भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए लोग कम हैं, बल्कि सवाल यह भी है कि आखिर उनके काम करने का दायरा कितना बड़ा है?

इन सबके बावजूद 'सुगंध' के पाठकों और लेखकों से मेरा अनुरोध है कि हम हिम्मत न हारें और राजभाषा के स्थाई विकास के लिए हम 'पलाश' की तरह डटे रहें। पतझड़ की मार से जब जंगल के सभी वृक्ष पत्र-पुष्प विहीन हो जाते हैं और पूरा जंगल वीरान सा लगने लगता है, तब पलाश अपनी क्षमता का प्रदर्शन करते हुए जंगल को पुष्प विहीन नहीं होने देता। आशा है 'पलाश' की भांति हम सभी भाषाप्रेमी अपने कर्तव्य पथ पर निरंतर चलते हुए हिंदी को कार्यालयों में भी स्थापित करने में सफल होंगे और अपने पूर्वजों की आकांक्षाओं पर खरा उतरेंगे।

संपादक

विषय सूची

'सुगन्ध'

वी एस पी की त्रैमासिक गृह-पत्रिका

वर्ष-13 अंक-3 जून, 2015

संपादक
टी सुंदर

उप-संपादक
वी सुगुणा
गोपाल

संपादकीय कार्यालय
राजभाषा विभाग
कमरा सं.245, पहला तल
मुख्य प्रशासनिक भवन
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
विशाखपट्टणम-530 031
दूरभाष व फैक्स: 0891-2518471
मोबाइल: 9989888457 & 9949844146
ई-मेल: vspsugandh@rediffmail.com
vspsugandh@gmail.com

'सुगन्ध' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और उनके प्रति 'विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र प्रवंधन' जिम्मेदार नहीं है।

सृजनात्मक स्तंभ

कहानी

धत् तेरे की...	श्री गोपाल	9
सहधर्मिणी	डॉ मदन सैनी	16
आवारा बच्चे	डॉ मंजु शर्मा	31
स्वर्गलोक में वफे पार्टी	श्री ओम प्रकाश मंजुल	41
बाल-सुगन्ध		
शहीदों को सलाम, माँ	मास्टर गुरुविंदर सिंह	37
दो शिकायतें हैं आपसे	फरमान अली अंसारी	37
एक सपना	सुश्री किरण हरदे	38
मदर्स डे	शेख शमीम बानू	38
सपना जलेवियों का	शेख शमीम बानू	39
कविता		
चक्रधर शुक्ल के हाइकु, मुक्तक		22-23
चाँद शेरी के मुक्तक		24-25
डॉ वीरोत्तमा पातर की कविता व गजलें		18, 33, 47
लेख		
इस्पात और कौशल	सुश्री नमिता सहारे	5
नशा	श्री वारनाल पापाजी	12
इतिहास के मौन साक्षी - भारतीय किले	श्री सुभाष सेतिया	19
शरद जोशी एवं उनका व्यक्तित्व व कृतित्व	श्री ललन कुमार	29
लगा वर्दी में दाग... (व्यंग्य)	श्री सुजीत आर कर	34
राम की मुस्कुराहट : आज का अनिवार्य आदर्श	डॉ टी हैमावती	45
मानक स्तंभ		
अध्यात्म - मौन		40
संगीत सरिता		28
वी एस पी के बढ़ते कदम - वातानुकूलन प्रणाली विभाग (ए सी एस)		35-36
आओ भाषा सीखें		48
कार्य-कलाप		26-27

माननीय केंद्रीय खान व इस्पात मंत्री का वी एस पी दौरा

माननीय केंद्रीय खान व इस्पात मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने 22 जून, 2015 को राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र का दौरा किया। इस अवसर उन्होंने संगठन के वरिष्ठ प्राधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में संयंत्र के निष्पादन की समीक्षा की। उन्होंने संयंत्र के आधुनिकीकरण और विस्तारण कार्य में विलंब और बढ़ती लागत के मूल कारणों का विश्लेषण करते हुए भविष्य में इस प्रकार की समस्याओं के निराकरण की सलाह दी। उन्होंने कहा कि इकाइयों के यथाशीघ्र स्थिरीकरण के प्रयासों, आधुनिकीकरण, विस्तारण, लागत में कमी और ऊर्जा बचत जैसे उपायों के माध्यम से लाभदायिकता में वृद्धि लाने हेतु ठोस प्रयास किए जाएँ। राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी मधुसूदन ने मंत्री महोदय से समय-समय पर प्राप्त मार्गदर्शन व समर्थन हेतु उनके प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने माननीय मंत्री महोदय को भारत सरकार की 300 मिलियन टन प्रतिवर्ष लक्ष्य प्राप्ति के उद्देश्य को पूरा करने के क्रम में संगठन की भावी योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदय ने संयंत्र के डेडिकेशन पार्क में पौधरोपण किये। कार्यक्रम में विशाखपट्टणम के माननीय सांसद डॉ के हरिबाबु, इस्पात मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती उर्विला खाती और राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के निदेशकगण एवं वरिष्ठ प्राधिकारी, श्रमिक संघों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

आदरणीय संपादक महोदय,

आप हिंदीतर भाषी राज्य में 'सुगंध' के माध्यम से हिंदी को समर्पित कार्यक्रम कर रहे हैं। इस बार 'सुगंध' का मन को छूनेवाला संपादकीय 'आजाद मन से राष्ट्रीयता का विकास' भी तो ऐसी भावना व्यक्त कर रहा है। अंक की सभी रचनाएँ ध्यान खींचती हैं। 'आओ भाषा सीखें' मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरे पड़ोस में तेलुगु भाषी रहते हैं, यहाँ से पढ़कर उन्हें कोई वाक्य बोलकर मैं उन्हें चौंका देता हूँ।

- *श्री कमल,* जमशेदपुर

'सुगंध' का मार्च, 2015 का खूबसूरत अंक और 'कौशल' संगोष्ठी विशेषांक पाकर मन प्रसन्न हो गया। नए संपादक का संपादकीय अच्छा लगा। सभी कहानियाँ मर्मस्पर्शी हैं। लघुकथा 'विषबीज' मन को झकझोरनेवाली है। सभी लेख रोचक और ज्ञानवर्धक तथा पढ़ने योग्य हैं। बाल-सुगंध के अंतर्गत प्रकाशित रचनाएँ बच्चों ही नहीं, बल्कि सभी के लिए उपयोगी हैं। कार्यकलाप के अंतर्गत संयंत्र में हो रही विभागीय एवम् राजभाषा उन्नयन की गतिविधियाँ सराहनीय हैं। आपके कुशल संपादन से स्पष्ट है कि आपके विद्वतापूर्ण संपादन में 'सुगंध' निश्चित रूप से राजभाषा हिंदी के उत्थान में उच्च आयाम स्थापित करेगी। कुशल संपादन के लिए सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

- *श्री विष्णु वर्मा,* ककोली

'सुगंध' का समीक्ष्य अंक भी पूर्व अंकों की भाँति एक सफल अंक है। संपादकीय 'तितली बनने की चाह...' पूर्णत: राजभाषा हिंदी को समर्पित अभिव्यक्ति है, जिसमें हिंदी को 'व्यावहारिक रूप' में राष्ट्रभाषा बनाकर अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने की संपादक जी की चाह है। प्रथम दृष्ट्या ऐसा लगा मानो किसी सामान्य पत्रिका का सितंबर अंक हो और उसमें 'हिंदी दिवस' पर आधृत संपादकीय या लेख पढ़ रहे हों। जब सामान्य अंक का संपादकीय ऐसा है तो 'सितंबर, 2015' अंक का संपादकीय कैसा होगा, आह्लादकारक है। मेरी मति से नए संपादक श्री टी सुंदर अपने दायित्व में एकदम सफल सिद्ध हुए हैं और होते भी रहेंगे।

कहानी की दृष्टि से अंक का नाम, 'सुधा गोयल कहानी अंक' होता तो अच्छा रहता, क्योंकि जहाँ मात्र 6 कथा-लघुकथाएँ हों और उनमें तीन केवल एक रचनाकार की तो उसके ऊपर अंक का नामकरण किया जा सकता है। संपादक जी! आपको अनेक फोबियों का ज्ञान होगा, पर शायद यह नहीं जानते हैं कि लेखकों में सबसे बड़ी फोबिया 'जीलेसिया' की होती है। इस शीतल दाह ने मुझ जैसे न जाने कितने लेखकों को झुलसाया होगा कि 'या सुधा जी की जगह मेरी ही रचना लगा दी होती।' कहानियों में डॉ रामप्यारे प्रजापति की 'मुक्ति कामी शिलाएँ' पहाड़ी संस्कृति को प्रदर्शित करनेवाली अच्छी कहानी है, जो प्रणय से प्रारंभ होकर परिणय पर संपन्न होती है। श्री कमल और डॉ अमिता दुबे दोनों की ही कहानियाँ संयोग और विडंबना के ताने-बाने पर बनी गयी अंक की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ हैं। श्री कमल की कहानी 'सोने का हिरण' जहाँ अथ से इति तक जिज्ञासा और कुतूहल बनाये-बढ़ाये रखती है और समय-संगत है, वहीं डॉ अमिता दुबे की कहानी 'सुखमनी' दुखांत बनकर और भी मर्मस्पार्शी बन जाती है। संपूर्ण कहानी में मुझे अमृतसर के बंबूकर्ट वाले ताँगा चालक का डायलॉग 'हट जा जीणे जोगिये, हट जा करमाँ वालिए, हट जा पुत्ता प्यारिए, बच जा लंबी वालिये' सुनाई पड़ता है। संयोग देखें कि सरदार बलवंत सिंह के आफ्ट स्पोकेन डायलॉग 'आओ जी ... चाय पी के जाओ जी... पराठे खाके जाओ जी... आओ जी' वाली 'सुखमनी' का कथानक भी अमृतसर ही है। लगता है, अमृतसर कहानी लेखन के लिए सर्वाधिक अनुकूल स्थान है। भीष्म साहनी की कहानी, 'अमृतसर आ गया है', चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' की तरह इसी शहर से संबद्ध है। श्रीमती सुधा गोयल की कहानी 'जोगति' भी अच्छी कहानी है, पर 'जोगति' का अर्थ समझ में नहीं आया। काश! यह शब्द 'जागृति' होता। जहाँ तक विषबीज की बात है तो मैं सुधा जी के समानतासूचक विचार बीज से बिल्कुल सहमत नहीं हूँ। शायद सुधा जी ने बंदरों के व्यवहार को नहीं देखा। एकसमान सम्मान तो सभी इंसानों को भी नहीं दिया जा सकता। दूसरी रचना 'भक्ति ऐसी भी होती है' निश्चित रूप से लघुकथा नहीं कही जा सकती। पौराणिक आख्यान 'प्रेरक प्रसंग' होते हैं, 'लघुकथा' नहीं। सर्वश्री कुँवर जावेद तथा राजेंद्र तिवारी की गजल-गीत-मुक्तकों की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। बहुत लंबे समय के बाद 'सुगंध' में अच्छी कविता की मन-मुग्ध सुगंध सूँघने को मिली है। डॉ टी महादेव राव के 'सेलफोन ...' की कालटोन से दिल में ऐसी घंटी बजी कि अब भी 'कुच-कुच' हो रहा है। शेष सभी लेख एवं स्तंभ आदि स्तरीय हैं।

- *डॉ राजनारायण अवस्थी,* हैदराबाद

इस्पात और कौशल

- सुश्री नमिता सहारे -

प्राक्कथन:

इस्पात भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया की अर्थव्यवस्था को निर्बाध रूप से आगे बढ़ाने वाला एक प्रमुख घटक है। मुख्यत: निर्माण और बुनियादी ढाँचे के विकास में इस्पात की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके साथ-साथ इस्पात ने इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाइल, जहाजरानी और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के निर्माण में अत्यंत अग्रणी भूमिका निभायी है। अब तो इस्पात हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। तभी तो नारा दिया जा रहा है 'हर एक के जीवन से जुड़ा हुआ है इस्पात।'

आज दुनिया की इस्पात उत्पादन क्षमता 1990 के दशक की तुलना में दोगुनी हो चुकी है। कम विकसित देशों में चल रही विकास गतिविधियों एवं विकासशील देशों की मूलसंरचनाओं, औद्योगिकीकरण के विकास एवं बड़े पैमाने पर हो रहे शहरीकरण के कारण इस्पात उत्पादन क्षमता में विकास की भावना को बल मिला है। वैसे तो पहले भी इस्पात का उपयोग होता था। लेकिन उस समय इस्पात का उपयोग मुख्यत: सैन्य उपकरणों एवं युद्ध की सामग्री बनाने में ही होता था। विश्वयुद्ध के उपरांत इस्पात उद्योग की महत्ता को पर लग गए, क्योंकि विश्वयुद्ध की विभीषिका को देखकर वैश्विक स्तर पर लोगों की मन:स्थिति में बदलाव आया। अधिकांश लोगों के मन में युद्ध से विरक्ति पैदा होने लगी। इसी के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। जापान बुरी तरह से तबाह हो चुका था।

अब लोगों के मन में इस्पात से तीर, तलवार, तोप, तमंचे की जगह मानव विकास एवं उसके उपयोग की वस्तुओं को बनाने की महत्ता बलवती हो उठी। समाज की सोच में काफी परिवर्तन आने लगे। इस प्रकार 20वीं सदी के मध्य से इस्पात उत्पादन का एक बहुत बड़ा हिस्सा मुख्य रूप से बुनियादी ढाँचे और निर्माण कार्य के लिए उपयोग होने लगा। इस बदलाव से इस्पात की माँग निजी स्तर पर भी होने लगी और दुनिया के बहुत से देशों में इस्पात की उपलब्धता आम जनता के लिए होने लगी। नई तकनीकों और कंपनियों के बीच परस्पर सहयोग बढ़ने से इस्पात उत्पादकों को प्रोत्साहन मिलने लगा। आज दक्षिण कोरिया और जापान जैसे देश इस्पात उत्पादन में सबसे नवीन तकनीक का इस्तेमाल करने वाले माने जाते हैं। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में घरेलू और वैश्विक स्तर पर इस्पात का उत्पादन प्रतिस्पर्धी हो चुका है। भारत जैसे विकासशील देशों के विकास कार्य के लिए बहुत अधिक मात्रा में इस्पात की आवश्यकता है, जबकि चीन ने अपने विकास कार्य को लगभग पूरा कर लिया है और इसके लिए जो इस्पात उत्पादन की योजना के तहत इस्पात उत्पादन की जिस क्षमता का विकास किया था, अब उसका उपयोग निर्यात के माध्यम से धनार्जन के लिए करना आरंभ कर दिया है।

इस्पात उद्योग - रोजगार का एक प्रमुख स्रोत:

इस्पात उद्योग में सीधे तौर पर विश्व के 20 लाख से अधिक लोगों और इसके अनुषंगी उद्योगों में 40 लाख लोगों को रोजगार मिलता है। यदि इस्पात उत्पादों को प्रमुख आपूर्तिकार के रूप में देखा जाए तो यह उद्योग मोटरवाहन, निर्माण, परिवहन, बिजली और मशीनरी आदि जैसे अन्य उद्योगों को कच्चामाल उपलब्ध कराता है और इस प्रकार यह उद्योग लगभग 5 करोड़ लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है।

संभावित अनुमान:

एक अनुमान के अनुसार अब (2014 तक) दुनिया का कच्चा इस्पात उत्पादन 1.2% की वृद्धि के साथ 1661.5 मिलियन टन तक पहुँच चुका है। 823 मिलियन टन प्रतिवर्ष उत्पादन क्षमता के साथ चीन दुनिया का सबसे बड़ा कच्चा इस्पात उत्पादक है। 110.7 मिलियन टन प्रतिवर्ष उत्पादन क्षमता के साथ जापान अब दूसरे नंबर पर है। 88.3 मिलियन टन प्रतिवर्ष उत्पादन करने वाला संयुक्त राज्य अमेरीका तीसरे और लगभग 83.2 मिलियन टन प्रतिवर्ष उत्पादन करने वाला भारत चौथे स्थान पर है। विश्व इस्पात संगठन के अनुमान

> कंपनी के उत्पादों की गुणवत्ता की जाँच एवं परीक्षण भी निर्धारित मानकों के अनुरूप हो, इसको सुनिश्चित करना बहुत जरूरी होता है, अन्यथा कंपनी की साख को बट्टा लग सकता है। बाजार में प्रवेश करने से पहले कंपनी के सभी उत्पाद सभी दोषों से मुक्त और अच्छे गुणवत्ता वाले होने चाहिए। कर्मचारियों को निर्धारित गुणवत्ता मानकों से अवगत कराया जाए तो इससे कंपनी के उत्पादों की गुणवत्ता के साथ-साथ अपने काम की अहमियत को जानने में सहायता मिलेगी और उत्पादों को बनाने, उनका परीक्षण व प्रेषण करने की पूरी प्रक्रिया पर पूरी कुशलता से ध्यान दिया जा सकेगा। हालांकि इस तरह के काम में अत्याधुनिक मशीनें बहुत उपयोगी सिद्ध होती हैं, फिर भी मानव कौशल की भूमिका अपरिहार्य है।

के अनुसार वैश्विक इस्पात का उपयोग 2014 में 2% के विकास के साथ 1562 मिलियन रहा। 2015 में वैश्विक इस्पात की माँग में लगभग 2% की वृद्धि के साथ यह 1594 मिलियन टन तक पहुँच जाएगा। पूर्वानुमान के अनुसार भारत में इस्पात खपत की संभावनाओं में सुधार आया है, जिसके अनुसार 2014 के दौरान भारत में इस्पात की माँग 3.4% की वृद्धि के साथ 76.2 मिलियन टन हो जाएगी। साथ ही संरचनात्मक सुधारों पर बल और भारत की अर्थव्यवस्था में बढ़ रहे विश्वास के कारण वर्ष 2015 के दौरान इस्पात की माँग में 6% की वृद्धि दर्ज हो सकती है। लेकिन बढ़ती मुद्रास्फीति दर और राजकोषीय घाटे के कारण इस विकास दर पर कुछ नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

उबरती अर्थव्यवस्था और इस्पात की बढ़ती माँग के कारण भारतीय इस्पात उद्योग वर्ष 2007-08 से ही एक नए विकास के चरण में प्रवेश करने लगा है। आज भारत दुनिया में स्पंज आयरन या डी आर ई का सबसे बड़ा उत्पादक है। 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए परिकल्पित परियोजनाओं पर एक नजर डालने से पता चलता है कि देश के बुनियादी ढाँचे के विकास के क्षेत्र में ही लगभग एक खरब डालर का निवेश होगा। इससे देश में प्रति व्यक्ति इस्पात खपत बहुत बढ़ जाएगी। साथ ही इससे निर्माण क्षेत्र की विकास दर वर्तमान 8% से बढ़कर 11-12% तक पहुँच जाएगी। साथ ही अनुमान यह है कि वर्ष 2030 तक देश की मौजूदा शहरी आबादी 40 करोड़ से बढ़कर 60 करोड़ हो जाएगी। इसके लिए शहरों में भारी निवेश की जरूरत पड़ेगी। इसके अतिरिक्त प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, भारत निर्माण, राजीव गांधी आवास योजना जैसी परियोजनाओं से ग्रामीण क्षेत्र में इस्पात की खपत बहुत बढ़ेगी।

चीन के इस्पात क्षेत्र में कौशल विकास से परिवर्तन:

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक चीन इतिहास में परिवर्तनकारी विकास का हिस्सा नहीं था। बाजारोन्मुख सुधारों और अंतर्राष्ट्रीय बाजार के रुख में आए बदलाव से चीन के एकीकृत इस्पात उत्पादन और क्षमता विस्तारण को मदद मिली। चीनी इस्पात उत्पादन, जो कि 1978 में 32 मिलियन टन था, लेकिन आज चीन विश्व का सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक है और अपने गुणवत्तापूर्ण व सस्ते इस्पात को एशियाई बाजार में निर्यात करता है। चीन के इस्पात उद्योग के व्यापक विस्तार में उच्च्य उत्पादकता और उत्पादों की उच्च्य गुणवत्ता और नए उत्पादों की गुणवत्ता की जाँच उसकी योजना के हिस्से रहे हैं। साथ ही, प्रबंधकों को आर्थिक स्वायत्तता के साथ कार्य सौंपना, कर्मचारियों के डोमेन विशेष के ज्ञान को बढ़ाना, तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देना आदि भी बहुत हद तक चीनी इस्पात उद्योग के विकास में सहयोगी रहे हैं। लेकिन इन सबका संबंध कौशल विकास से जुड़ा रहा।

कौशल विकास:

विशिष्ट उद्देश्यों या आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान का व्यवस्थित उपयोग करना कौशल विकास कहलाता है। किसी भी संगठन का कर्मचारी उसके लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन होता है। यदि संगठन के कर्मचारी कौशलवान हों तो संगठन का विकास अवश्य होगा। मोटे तौर पर कर्मचारी का विकास कर्मचारी के ज्ञान और कौशल के विकास के साथ भी जुड़ा हुआ है। बदलती परिस्थितियों में अर्थव्यवस्था की माँग है कि कर्मचारियों की मेधाशक्ति का भरपूर उपयोग हेतु उनको पूर्णत: तैयार करना होता है। इसे ही दूसरे शब्दों में कर्मचारियों का कौशल विकास करना कहा जाता है। प्रबंधन प्रणाली में ऐसा माना जाता है कि व्यवस्थित और निरंतर प्रयास के माध्यम से हासिल क्षमता द्वारा जटिल समस्याओं का समाधान आसानी से किया जा सकता है। इसके लिए कर्मचारियों के वैचारिक स्तर को सकारात्मक और कार्य करने की शैली में उत्कृष्टता लाने के साथ-साथ उनके अंतर्मन में समूह भावना का संचार करना पड़ता है।

कौशल विकास का अर्थ है कि हम अपने आप को और अपने कौशल की परिधि को कुछ इस प्रकार से विकसित करें कि हम स्वयं अपने कैरियर और अपने संगठन के विकास में कुछ मूल्य जोड़ सकें। 'आजीवन सीखने के लिए सराहना' के दृष्टिकोण को

बढ़ावा देना कार्यस्थल की सफलता की कुंजी होती है। लगातार सीखने और उसमें विकास के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता भी होती है।

इस्पात क्षेत्र और कौशल विकास:

इस्पात उद्योग एक तकनीक बहुल उद्योग है और इस्पात की बढ़ती माँग के कारण उन्नत प्रौद्योगिकी, नवाचार, अनुसंधान एवं विकास आदि की माँग निरंतर बढ़ती जा रही है। साथ ही इस बात की जरूरत भी बढ़ रही है कि बदलती प्रौद्योगिकियों को चलाने के लिए उसी स्तर और अनुपात में कुशल कार्यबल भी उपलब्ध हो।

जैसाकि हम जानते हैं, हमारे देश में कुशल मानवशक्ति का सर्वथा अभाव है और कुशल मानवशक्ति से ही उद्योगों को दक्षतापूर्वक संचालित किया जा सकता है। इसीलिए कौशल विकास की महत्ता को नजरंदाज नहीं किया जा सकता। इसके लिए 'कौशल विश्लेषण' एक कारगर माध्यम है। इससे कर्मचारियों को आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करके कर्मचारियों की प्रविधि का विकास किया जाता है तथा भविष्य में केरियर प्लानिंग का अवसर प्राप्त होता है। हो सकता है कि कोई कर्मचारी पहले से कौशलवान न हो, इसीलिए विश्लेषण द्वारा कर्मचारी में अंतर्निहित कौशल की पहचान की जाती है और तदनुसार उसे प्रशिक्षित करके कौशलवान बनाया जाता है एवं वास्तविक परिस्थितियों के दौरान उससे काम कराकर उसके प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाता है।

उदाहरणार्थ कोई कर्मचारी तकनीकी ज्ञान में अच्छा होते हुए भी यदि एक्सेल शीट में आंकड़ों को भर नहीं पाता हो तो इसका मतलब उसे कंप्यूटर के ज्ञान का अभाव है। यदि उसे कंप्यूटर चलाने में कुशल बना दिया जाए तो वह कंप्यूटर पर काम करने में भी माहिर हो सकता है।

प्रशिक्षण:

किसी भी संगठन की सफलता में प्रशिक्षण एक आवश्यक घटक होता है। यह उसी तरह से महत्वपूर्ण होता है, जिस तरह से प्रौद्योगिकी उन्नयन का कार्यक्रम महत्वपूर्ण होता है। सांख्यिकीय आंकड़ों से पता चलता है कि अब कंपनियाँ पहले की तुलना में कर्मचारी प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि पर अधिक निवेश कर रही हैं और कर्मचारी प्रशिक्षण पर विशेष बल देते हुए प्रशिक्षण की अवधि को बढ़ा रही हैं। जैसे **1995** में औपचारिक प्रशिक्षण पर होनेवाले प्रत्यक्ष खर्च की राशि प्रति कर्मचारी **190** डालर थी, जबकि **2011** में यह प्रति कर्मचारी **1182** डालर हो गयी। **2011** में अमेरीकी संगठनों द्वारा कर्मचारी प्रशिक्षण पर **156** बिलियन डालर से अधिक खर्च किए गए, साथ ही औसत प्रशिक्षण घंटों की संख्या जो **2003** में **26.2** थी, वह **2011** में बढ़कर **30.5** हो गई।

कुछ इस्पात कंपनियों ने तो अपने कर्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सुप्रसिद्ध शैक्षिक संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन भी किया है तथा कुछ ने तो अपनी आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम चलाना शुरु कर दिया है। उदाहरणार्थ आजकल अर्सेलर मित्तल और टेनारिस विश्वविद्यालय में निगमित कर्मचारियों, ग्राहकों और आपूर्तिकारों के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

अब कर्मचारी प्रशिक्षण सूचकांक की गणना की पद्धति विकसित हो चुकी है। इसके माध्यम से प्रत्येक प्रशिक्षित कर्मचारी के प्रशिक्षण की उपयोगिता और आवश्यकता के आँकड़े एकत्र किए जाते हैं।

कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण के प्रकार:

इस्पात उद्योग में स्थाई व अस्थाई एवं प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से काम करने वाले लोग होते हैं। इन्हें समान रूप से प्रशिक्षित करने से अभीष्ट की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसीलिए प्रशिक्षण विभाग को प्रौद्योगिकी और कौशल के बीच के अंतर को पाटने के लिए आवश्यकताओं के अनुसार अलग-अलग तरीकों से कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना होता है।

स्थाई कर्मचारियों को बदलती प्रौद्योगिकी पर काम करने के लिए नवीनतम तरीके से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, क्योंकि एक अनुमान के अनुसार भारत में वर्ष **2020** तक इस्पात उद्योगों से लगभग **450** मिलियन टन तक कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जित होने लगेगी, क्योंकि **2020** तक भारत में **200** मिलियन टन तक इस्पात का उत्पादन होने लगेगा। अत: कार्बन डाई ऑक्साइड के उत्सर्जन को कम करने के लिए पर्यावरण मैत्री प्रौद्योगिकी अपनाने पर बल दिया जा रहा है। **12**वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत इस्पात उद्योग के कार्यसमूह की रिपोर्ट में पुराने तथा अप्रचलित सुविधाओं को बदलने की सिफारिश की गई है। साथ ही पर्यावरण पर उद्योगों के प्रतिकूल प्रभाव को रोकने के लिए व्यर्थ ऊर्जा के उपयोग पर भी बल दिया गया है। इस पूरे मामले में कौशल विकास की दो बातें उभरकर सामने आती हैं। पहली यह कि तकनीक के विकास के कौशल एवं दूसरी यह कि विकसित की गई तकनीक को प्रचालित करने के कौशल का विकास करना होगा, जो भारतीय संगठनों के लिए एक चुनौती होगी। अर्थात हमें उभरते कौशल सेट में मौजूदा कौशल अंतर और कौशल की कमियों को समझने की जरूरत है। जैसे-जैसे नई तकनीकों का आगमन होगा, वैसे-वैसे बदलती तकनीक की जरूरतों से मेल खाने वाले श्रमिकों की माँग बढ़ेगी।

वर्तमान में बदलती प्रौद्योगिकी और पर्यावरण के प्रति जागृति तथा कच्चेमाल की घटती उपलब्धता के कारण वैकल्पिक ईंधन की तलाश और उपयोग बढ़ा है और प्रक्रिया के दौरान उत्सर्जित होने वाली व्यर्थ ऊष्मा, कार्बन कैप्चर और ऑक्सि-ईंधन प्रौद्योगिकी को पुन:प्राप्त करके उसका अधिकाधिक उपयोग किया जा रहा है। प्रशिक्षण में इससे जुड़े कौशल सेट को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इसके साथ-साथ ऊर्जा दक्ष उपकरणों, कल-पुर्जो और नियंत्रण प्रणाली की खरीद-फरोख्त हेतु प्रशिक्षित मानव शक्ति की आवश्यकता होती है। इसके लिए भी विशेष अभियान के तहत इंजीनियरों और श्रमिकों का दल तैयार किया जाना चाहिए।

भारत में लगभग **4650** व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान हैं, जो निम्नलिखित व्यावसायिक क्षेत्रों की आवश्यकता के अनुरूप शिल्पकार, शिक्षुता एवं साफ्ट स्किल के प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। फिर भी भारत की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इस्पात उद्योग के कर्मचारियों के समग्र विकास के लिए प्रभावी संचार, औपचारिक और अनौपचारिक संचार, पारस्परिक कौशल विकास, व्यवहार संबंधित प्रशिक्षण दिया जाता है।

इस्पात उद्योग की प्रक्रियाएँ काफी जोखिम भरी होती हैं। अत: यहाँ सुरक्षा को सुनिश्चित करना एक बहुत बड़ी चुनौती होती है। हालांकि इसके लिए पर्याप्त सुरक्षा मानक निर्धारित किए गए होते हैं, फिर भी कतिपय कारणों से तकनीकी और गैर तकनीकी दुर्घटनाएँ हो जाती हैं।

इस समस्या से निपटने के लिए भी इस्पात क्षेत्र से जुड़े कर्मचारियों को प्रशिक्षित करके उनके कौशल में विशेष इजाफा करना बहुत जरूरी होता है। इसी प्रकार कुछ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानक होते हैं, जिनके लिए प्रमाणन प्राप्त करना संगठनों की आकांक्षा होती है। साथ ही प्रमाणन प्राप्त हो जाने के बाद उसे बनाए रखना एक अलग चुनौती होती है। इस चुनौती से निबटने के लिए कर्मचारियों के विशेष कौशल का विकास करना होता है।

कंपनी के उत्पादों की गुणवत्ता की जाँच एवं परीक्षण भी निर्धारित मानकों के अनुरूप हो, इसको सुनिश्चित करना बहुत जरूरी होता है, अन्यथा कंपनी की साख को बट्टा लग सकता है। बाजार में प्रवेश करने से पहले कंपनी के सभी उत्पाद सभी दोषों से मुक्त और अच्छे गुणवत्ता वाले होने चाहिए। कर्मचारियों को निर्धारित गुणवत्ता मानकों से अवगत कराया जाए तो इससे कंपनी के उत्पादों की गुणवत्ता के साथ-साथ अपने काम की अहमियत को जानने में सहायता मिलेगी और उत्पादों को बनाने, उनका परीक्षण व प्रेषण करने की पूरी प्रक्रिया पर पूरी कुशलता से ध्यान दिया जा सकेगा। हालांकि इस तरह के काम में अत्याधुनिक मशीनें बहुत उपयोगी सिद्ध होती हैं, फिर भी मानव कौशल की भूमिका अपरिहार्य है।

दुनिया के इस्पात उत्पादकों को धातु विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, इंजीनियरिंग और गणित में प्रतिभा की कमी खल रही है। इस बात को स्वीकार करते हुए उद्योगों द्वारा कौशलवान लोगों को आकर्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसी ही एक पहल के तहत विश्व इस्पात विश्वविद्यालय का गठन हुआ है। यह विश्व इस्पात विश्वविद्यालय एक मुफ्त ऑनलाइन सेवा है। यह विश्व के इस्पात उत्पादकों की सहयोगी कंपनियों की वित्तीय और तकनीकी सहायता से इस्पात प्रौद्योगिकी हेतु इंटरैक्टिव ई-लर्निंग संसाधन उपलब्ध कराता है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि इस्पात उद्योग लगातार आगे बढ़ रहा है और भविष्य में इसके उत्तरोत्तर बढ़ते रहने की संभावना है। आगे भी यह किसी देश की अर्थव्यवस्था के विकास को ऐसे ही प्रभावित करता रहेगा, जैसे आज कर रहा है। इसीलिए कौशल विकास को कंपनी के उद्देश्यों में शामिल किया जाना चाहिए। इस्पात उद्योग के कौशल विकास की रणनीति में आधुनिक तकनीक के साथ-साथ सकारात्मकता एवं सृजनशीलता से लबरेज मानवशक्ति एवं लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध प्रबंधन तथा आह्लाद पूर्ण वातावरण का होना आवश्यक है। जिस संगठन में उपरोक्त गुणों से संपन्न लोगों का वर्चस्व हो, उनका विकास अवश्यंभावी है।

- सहायक प्रबंधक (निगमित संचार)
राष्ट्रीय इस्पत निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
मोबाइल: +91 9975235669

धत् तेरे की...

- श्री गोपाल -

जैसै-जैसे दिन चढ़ता जा रहा था, चौधरी दीनबंधु की ऊबन वढ़ती जा रही थी। वे कभी वाहर निकल कर टोह ले रहे थे, तो कभी मन बहलाने के लिए छत पर चले जा रहे थे। कभी मन ही मन अपने नौकर सोमारू को कोस रहे थे कि अभी तक वह कोई खबर क्यों नहीं लाया। वे पिछले दो दिनों से जनानी वखरी में पड़े हुए थे, क्योंकि उनके बैठक में रुस्तम मियाँ की वेटी नफीसा की बारात रुकी हुई थी। वे बार-बार बाहर आकर पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि उनके मवेशी कैसे हैं।

उनका बैठक इतना बड़ा था कि एक बड़ी बारात आराम से रुक जाए। इसीलिए मुहल्ले के कम कूवत वाले लोगों की बेटियों की बारातें अक्सर यहीं रुका करती थीं। इसलिए उस समय चौधरी दीनबंधु को अपना बैठक छोड़ जनानी बखरी में रहना पड़ता था। उन्हें अपना बैठक छोड़ना बिल्कुल गँवारा नहीं था। लेकिन गाँव की बेटियों के लिए वे इतनी कुर्बानी तो दे ही सकते थे।

वैसे चौधरी साहब प्राय: अपनी बैठक छोड़कर कहीं नहीं जाते। लेकिन क्या करें, गाँव की आबरू के खातिर वे भी मजबूर थे। गाँव की भलाई के लिए उन्हें ऐसा करना अच्छा भी लगता था। फिर भी उनके मन-मस्तिष्क में एक चिंता बनी रहती थी कि कहीं कोई रिश्तेदार न आ जाए। रिश्तेदार आ जाएगा तो उसकी खातिरदारी कैसे हो पाएगी? रिश्तेदारी निभाने के लिए ही तो वे हमेशा अपने बैठक में मौजूद रहते थे। बैठक पर मौजूद रहना उनकी एक जिम्मेदारी भी थी। इसके लिए उनके साथ घटी एक घटना जिम्मेदार है। वैसे तो चौधरी साहब की गिनती खानदानी धनाढ्य एवं सिद्धांतवादी लोगों में की जाती है। घटना आज से लगभग तेरह-चौदह साल पहले की है। उस समय नजदीक के कस्बे में चौधरी साहब की आढ़त चलती थी। लाखों का कारोबार था। जिले के व्यापारियों में उनका बहुत नाम था। चौधरी साहब आढ़त के काम में खूब रचे-बसे थे। वे प्राय: वहीं कस्बे में रहा करते थे, कभी दो-चार दिन में घर घूम जाते थे। गाँव की खेतीबारी और मवेशियों को संभालने के लिए दो-चार नौकर रखे हुए थे। घर और बैठक का सारा काम नौकर-चाकर ही संभालते थे।

चौधरी साहब की एक लाड़ली बहन है। वह आजमगढ़ के चौधरी रामधन के बेटे से ब्याही हुई है। रामधन भी एक बहुत नामी गिरामी काश्तकार हैं। एक बार चौधरी रामधन, चौधरी दीनबंधु के गाँव आए। उस समय उनके बैठक पर नौकरों के अलावा घर का कोई सदस्य मौजूद नहीं था। वैसे तो नौकरों ने चौधरी रामधन की दो दिनों तक खूब खातिरदारी की। वैसे चौधरी साहब के अखाड़े पर मुहल्ले के बच्चे रोज शाम को कुश्ती का अभ्यास करते थे। लेकिन उस दिन शाम को चौधरी रामधन की इच्छा के अनुसार कुछ अच्छे पहलवानों को भी लड़ाया गया। चौधरी रामधन भी नवोदित पहलवानों को कुछ दाँव-पेंच सिखाए। रात को भोजन के उपरांत नाई आकर हाथ-पाँव दबा गया। रात में बैठक पर गवनई का इंतजाम किया गया। लेकिन बावजूद इन सबके इन दो दिनों में उनकी मुलाकात न तो चौधरी दीनबंधु से हो सकी और न ही उनके परिवार के किसी अन्य सदस्य से। यह बात चौधरी रामधन को बहुत नागवार गुजरी। इसीलिए बातों ही बातों में उन्होंने नौकरों के सामने ही यह कह दिया कि 'बड़ा बनने के लिए सिर्फ धन जरूरी नहीं है, उसके लिए यह भी जरूरी है कि आपके दरवाजे पर रिश्तेदार कितने आते हैं और उनकी खातिरदारी कैसे की जाती है। अरे भाई, आपके दरवाजे पर कोई भात खाने थोड़े ही आता है। रिश्तेदारी निभाने के लिए अपना अकाज करना पड़ता है।'

यह बात चौधरी दीनबंधु को तीर की तरह चुभ गई और तभी से वे आढ़त का पूरा काम नौकरों पर छोड़ अपने बैठक पर ही रहने लगे और बैठक न छोड़ने का उन्होंने प्रण भी ले लिया था। उन्होंने अपने बैठक पर दो जोड़े बैल, दो-तीन देशी गाय और दो घोड़े हमेशा पालते थे। इन मवेशियों की देखरेख और खेतीबारी के हिसाब-किताब में वे अपना सारा समय लगा देते थे। रोज सुबह-शाम अखाड़े पर कसरत करते गाँव के बच्चों को पहलवानी के गुर सिखाते थे। उनकी गायें अच्छी देखभाल की वजह से खूब दूध देती थीं। दिन भर में लगभग

> चौधरी दीनबंधु को बैठक पर अचानक आते देख रुस्तम मियाँ सकपका गए। भागकर उनके पास आए। चौधरी दीनबंधु ने सीधा सवाल दागाा, 'रुस्तम! क्या बात है? बारात अभी तक विदा क्यों नहीं हुई?' रुस्तम सच बताने से हिचक रहे थे। लेकिन चौधरी साहब के प्रश्न की तीक्ष्णता और उनके रोव ने उन्हें सच उगलने पर मजबूर कर दिया। रुस्तम ने बैलों की जोड़ी की बात साफ-साफ बता दी। रुस्तम की बात सुनकर चौधरी दीनबंधु को लगा कि उनके सिर पर किसी ने पत्थर दे मारा हो। वे अपने बैलों को मवेशी नहीं, बल्कि घर का सदस्य मानते थे। उन्होंने सपने में भी इस तरह के धर्म-संकट के बारे में नहीं सोचा होगा। उनके चेहरे पर क्रोध और समझदारी के मिश्रित भाव उभरने लगे थे।

चार-पाँच लीटर तक गाय के दूध का उपयोग तो वे स्वयं कर लेते थे। लगभग साठ-बासठ की उम्र में भी वे मुंगरा भांजते थे। उनका डीलडौल बहुत ही आकर्षक और विशाल था। गाँव में उन्हें सभी अक्खड़ प्रवृत्ति वाले मानते थे। वे भी अपनी बात के बड़े पक्के थे। उनके फैसले भी बड़े तेज और अंतिम होते थे।

रुस्तम मियाँ गाँव में ही दर्जी का काम करते थे। उनका पूरा परिवार अपने इसी सिलाई-पुराई के पुश्तैनी काम में ही लगा रहता था। पूरे गाँव की महिलाएँ इन्हीं के यहाँ सिलाई कराती थीं। नफीसा रुस्तम मियाँ की अकेली बेटी थी। वह सिलाई-पुराई के काम में बहुत मन लगाती थी और अपने मधुर व्यवहार से सबका मन मोह लेती थी। गाँव की बड़ी-बुजुर्ग महिलाओं से लेकर नई-नवेली दुल्हनों तक से उसका लगाव था, क्योंकि ग्राहकों के घर के भीतर जाने और नाप लेने का काम नफीसा ही करती थी। साथ ही दादी, चाची, भाभी, जिससे जैसा फबता वैसे रिश्ते जोड़कर वह अपनी दिलचस्प बातों से उनको पटाने में माहिर भी थी। वह रुस्तम मियाँ की चार संतानों में सबसे बड़ी थी तथा उसे अपने बड़े होने का मतलब भी बखूबी मालूम था। वह रुस्तम की बेटी नहीं, बल्कि कमाऊ बेटे की तरह थी। नफीसा घर में अपनी अम्मी, दादी तो बाहर अब्बू का हाथ बटाती रहती थी। रुस्तम के मन में नफीसा की शादी के बाद की स्थिति जब कभी कौंधती तो उन्हें बिजली की करंट सी लगती थी। इस तितली सी चंचल बेटी की जुदाई की कल्पना मात्र से उनकी रूह काँप जाती थी। लेकिन बेटी तो आखिर बेटी ही है। उसे एक न एक दिन पराए घर जाना ही है। माँ-बाप अपने सौ बेटों का बोझ सह सकते हैं, लेकिन एक बेटी का बोझ उनसे सहा नहीं जाता।

नफीसा भी इस बात से भली-भाँति वाकिफ थी कि उसके बाद उसके पिता के धंधे पर बुरा असर पड़ सकता है। इस बात से वह भीतर ही भीतर घुलती भी रहती थी। लेकिन उसके हाथ में कुछ भी नहीं था, वह बेटी जो थी। अब उसके प्रति परिवार का बदलता व्यवहार उसे साँप की तरह डँसने लगा था। जो दादी शउर सीखने के लिए हमेशा कोसती रहती थी, वहीं अब अपने हाथों उसके साज और श्रृंगार की चीजों को सहेजते हुए उसे प्यार से समझाती कि वहाँ जाकर ऐसा करना, वैसा करना। मायके की जगहँसाई न हो इस बात का ध्यान रखना। नफीसा के भाई, जो उससे हमेशा छीना-झपटी करते थे, अब उसका विशेष ध्यान रखने लगे थे। जो अम्मी जान उसके कपड़ों की माँग पर झुंझलाती थीं, वही अब उसके नये-नये कपड़ों पर गोटे व कसीदे काढ़ती थी। रुस्तम मियाँ की हालत तो और खराब थी, उनको अपनी बेटी की आँखों में आँखें डालकर बातें करना मुश्किल था।

नफीसा का निकाह बगल के मुबारकपुर गाँव में तय हुआ था। उसके होने वाले ससुर का नाम कमरुद्दीन मियाँ था। नफीसा अच्छे खेतीहर परिवार में ब्याही जा रही थी। उसके होने वाले ससुर दो हल की हैसियत रखने वाले किसान थे और शौहर शहर में कहीं कोई नौकरी कर रहा था। इधर आस-पास के मुसलमानों में रुस्तम मियाँ की इज्जत भी अच्छी थी। उनको अच्छे खाते-पीते परिवार का माना जाता था। उनके परिवार को बेहतर तहजीब वाला परिवार माना जाता था। इसीलिए नफीसा को अच्छे परिवार में ब्याहने का फायदा मिल रहा था। बेटी की अच्छे घर में शादी हो रही थी, इस बात से रुस्तम मियाँ बहुत खुश थे। बेटी के निकाह और बारातियों की खातिरदारी के लिए उन्होंने अपनी कमर अच्छी तरह कस ली थी।

चौधरी दीनबंधु के बैठक पर बड़ा सा तंबू डलवाया गया था। तोशक तकिया शहर से मंगवाया गया था। बारातियों को खिलाने-पिलाने और उनकी सेवा-सुविस्ता के लिए गाँव के नौजवान लड़कों का एक दल बनाया गया था, ताकि किसी को किसी तरह से कोई परेशानी न हो। चौधरी दीनबंधु ने भी अपने बैठक को पूरी तरह से रुस्तम मियाँ को सुपुर्द कर दिया था। आखिर नफीसा भी तो गाँव की ही बेटी थी। नफीसा के निकाह से पूरा टोला-मुहल्ला उत्साहित था। जिससे जो बन पड़ा नफीसा के लिए कर रहा था।

नफीसा का निकाह रात में हो चुका था। अब बारात की विदाई होनी थी। बाराती लोग नाश्ता वगैरह कर रहे थे। टोले-मुहल्ले की महिलाएँ नफीसा की विदाई का इंतजाम कर रही थीं। नफीसा की सखी-सहेलियाँ भी उसके साथ लगी हुई थीं।

कुछ सहेलियाँ तो रात भर नफीसा के साथ ही रह गईं और बारात में आये लड़कों से खूब हँसी-ठिठोली करती रहीं। पूरा माहौल खुशी में सराबोर था। पूरे गाँव में नफीसा के निकाह और रुस्तम मियाँ की खातिरदारी की तारीफ हो रही थी। साथ ही शानदार बारात और कौव्वाली लाने के लिए कमरुद्दीन मियाँ की भी खूब तारीफें हो रही थीं। तरह-तरह के छोड़े गए पटाखों और कई खुशबुओं वाले इत्रों की फुहार की चर्चा हर जुबान पर थी। नफीसा के निकाह में आए कौव्वालों ने अपने फन से जो समाँ बांधा था, वह कई वर्षों तक याद किया जाएगा।

तभी खबर आई की मियाँ कमरुद्दीन की आँख नाद पर सानी खा रहे बैलों की जोड़ी पर गड़ गई है। वे विदाई में बैलों की जोड़ी की माँग पर अड़ गए। रुस्तम मियाँ ने बताया कि 'भाई साहब बैलों की जोड़ी देना मेरे कुव्वत के बाहर है। लेकिन कमरुद्दीन मियाँ तो धीरे-धीरे अपनी माँग पर सख्त होने लगे। उन्हें यह भी समझाया गया कि बैठक की नाद पर सानी खा रहे बैल रुस्तम मियाँ के हैं ही नहीं, बल्कि किसी और के हैं। इसके बावजूद भी कमरुद्दीन मियाँ बेटहा होने के नाते अपने दंभ पर उतर आए और कहने लगे कि 'कुछ भी हो, मुझे तो एक जोड़ी बैल चाहिए ही।' जो माहौल अभी तक खूब हँसी-खुशी का था, वह अब धीरे-धीरे बदलकर कुछ किराकिरा सा हो रहा था। लोग-बाग रिश्तेदार-नातेदार समझाने-बुझाने में लगे थे। मामले को ठंडा करने के लिए कोई दो बैलों की जगह एक बैल देने का सुझाव दे रहा था तो कोई पैसा देकर मामला शांत कराना चाह रहा था।

इधर चौधरी दीनबंधु को बैठक छोड़ जनानी बखरी में रुकना अब एक-एक क्षण पहाड़ सा लग रहा था। वे जल्दी से जल्दी अपने बैठक पर जाना चाह रहे थे। तभी उन्होंने सोमारू को आते देखा। उन्होंने बड़े ही उत्साह से सोमारू से पूछा, 'बारात विदा हो गई?' सोमारू ने सिर हिलाते हुए कहा, 'ना लगता है कुछ पेंच फँसा है।' चौधरी साहब चौंक गए 'क्या पेंच फँसा है सोमारू?' सोमरू ने जूठन की बाल्टी उठाते हुए जवाब दिया, 'पता नहीं मालिक, लगता है कोई लेन-देन का मामला है।'

चौधरी दीनबंधु खीज उठे, 'लगता है अब यह दहेज का भूत मुसलमानों को भी नहीं छोड़ेगा', कहते हुए अपनी लाठी उठाये और बैठक की ओर चल पड़े। चौधरी दीनबंधु को बैठक पर अचानक आते देख रुस्तम मियाँ सकपका गए। भागकर उनके पास आए। चौधरी दीनबंधु ने सीधा सवाल दागा, 'रुस्तम! क्या बात है? बारात अभी तक विदा क्यों नहीं हुई?' रुस्तम सच बताने से हिचक रहे थे। लेकिन चौधरी साहब के प्रश्न की तीक्ष्णता और उनके रोब ने उन्हें सच उगलने पर मजबूर कर दिया। रुस्तम ने बैलों की जोड़ी की बात साफ-साफ बता दी। रुस्तम की बात सुनकर चौधरी दीनबंधु को लगा कि उनके सिर पर किसी ने पत्थर दे मारा हो। वे अपने बैलों को मवेशी नहीं, बल्कि घर का सदस्य मानते थे। उन्होंने सपने में भी इस तरह के धर्म-संकट के बारे में नहीं सोचा होगा। उनके चेहरे पर क्रोध और समझदारी के मिश्रित भाव उभरने लगे थे। उन्होंने पहले तो अपने क्रोध को छिपाया और फिर लंबी सांस लेते हुए कहा, 'धत् तेरे की, बस इतनी सी बात है? इतनी सी बात के लिए मेरे गाँव की बारात रुक गई है?' दौड़कर उन्होंने अपने हाथों से दोनों बैलों के पगहों को खूँटे से खोल लिया और रुस्तम से कहा, 'रुस्तम... समधी भाई को बुलाओ।' रुस्तम मियाँ काँपने लगे। उनके पाँव के नीचे की जमीन थरथराने लगी। रुस्तम मियाँ के साथ-साथ वहाँ मौजूद सभी हक्का-बक्का थे कि ये सब क्या हो रहा है? चौधरी साहब ने फिर से कहा, 'रुस्तम समधी को बुलाओ।' इस बार उनकी आवाज में पहले की अपेक्षा और अधिक बल था। धीरे-धीरे सभी घराती व बाराती चौधरी दीनबंधु के आसपास एकत्र होने लगे। इसी बीच कमरुद्दीन मियाँ भी उधर मुखातिब हो लिए। सभी लोग कमरुद्दीन मियाँ की ओर देखने लगे। चौधरी साहब ने स्वत: ही जान लिया कि समधी भाई यही हैं। चौधरी दीनबंधु ने हाथ जोड़कर दोनों बैलों के पगहों को कमरुद्दीन मियाँ के हाथों में सौंपते हुए कहा, 'भाई साहब, थोड़ी देर हो गई इसके लिए माफ कीजिएगा, ये लीजिए... अपनी विदाई।' कमरुद्दीन मियाँ की मानो घिघ्घी बँध गई। उनके हाथ आगे नहीं बढ़ रहे थे, मानों हाथों को लकवा मार गया हो। वे बुत की भांति खड़े-खड़े मन ही मन सोचने लगे कि जिस गाँव के बूढ़े की 'धत्त तेरे की...' तेवर में इतना दम है तो उस गाँव की बेटी का तेवर कैसा होगा। बड़ी मुश्किल से उनके मुँह से बस इतना ही निकल सका कि 'माफ कीजिए, मैं इस गाँव की बेटी को बहू के रूप में पाकर धन्य हो गया हूँ।' इसपर चौधरी दीनबंधु ने कहा, 'समधी जी नफीसा केवल रुस्तम मियाँ की बेटी नहीं है। वह इस पूरे गाँव की बेटी है। गाँव की किसी बेटी की बारात दो बैलों की वजह से रुक जाए, यह ठीक नहीं। बेटी गाँव की इज्जत होती है। आप पगहा पकड़िए और बिटिया की डोली उठवाइए। अभी मेरे गाँव की इज्जत रुकी हुई है। उसे निर्बाध रूप से आगे बढ़ने दीजिए।' थोड़ी देर के लिए सभी के चेहरों पर जो चिंता के भाव उपजे थे, उन्हें चौधरी साहब की बातों ने गर्व में तब्दील कर दिया था। कई लोग जोश के स्वर में बोल उठे, 'समधी भाई पगहा पकड़िए।' काँपते हुए हाथों से कमरुद्दीन मियाँ ने पगहा पकड़ लिया।

उस एक पल ने न जाने कितनी आँखों को बरसने पर मजबूर कर दिया और न जाने कब नफीसा पूरे गाँव की बेटी और इज्जत बन गई।

- क्वाटर नं: 208/ई/सेक्टर - 9
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम - 530032
मोबइल: 9989888457
ई-मेल: neelugopal@rediffmail.com

नशा

- श्री बारनाल पापाजी -

'नशा' मन की वह अर्धचेतनावस्था की स्थिति है, जिसमें मन अपने शरीर पर नियंत्रण नहीं रख पाता और अच्छा-बुरा या सही-गलत का निर्णय नहीं कर पाता या फिर जानकर भी सही निर्णय नहीं ले पाता। इस तरह मन को प्रभावित करके उसे अपना दास बनानेवाली आदत ही नशा है। नशे से बाहर निकलने के बाद ही सच्चाई का पता चलता है। नशा कुछ घंटे या दिन ही नहीं, बल्कि मरते दम तक मन पर सवार रह सकती है। सामाजिक या वैयक्तिक भय या स्वार्थ के कारण यह विकृत रूप धारण करके समूचे समाज या देश को नष्ट-भ्रष्ट कर सकती है। विस्तृत दृष्टिकोण से देखें तो हमारी मूर्खतापूर्ण आदतें भी नशा ही हैं।

नशा चार प्रकार की होती है, जो मन को प्रभावित करती है:

1) मुँह, नाक व नसों के द्वारा ग्रहण किए जाने वाले नशीले पदार्थों, जैसे - गुटखा, तंबाकू, भांग, गांजा, धूम्रपान, हीरोइन, अफीम, शराब, जर्दा, तंबाकू, नींद की गोलियाँ, नशे के इंजेक्शन, कड़ी चाय आदि से होने वाला नशा।

2) मन एवं मस्तिष्क पर दृश्य अथवा श्रव्य से होने वाली नशा जैसे- कुछ लोग अश्लील पुस्तकों अथवा दृश्यों को देखने के आदी होते हैं और ऐसी पुस्तकों को पढ़कर अथवा दृश्यों को देखकर अपना आपा खो बैठते हैं।

3) स्पर्श की अनुभूति का नशा (चुंबन, संभोग, बलात्कार आदि)।

4) संप्रदायों के अंधानुकरण की नशा।

पहले तीन प्रकार की नशा को सभ्य समाज ने तिरस्कृत किया है। लेकिन चौथी नशे को बिना किसी तर्क के अपना लिया है, जो सर्वाधिक हानिकारक है। वैसे तो नशीले पदार्थों के पैकेटों अथवा बोतलों पर नशा से होने वाली हानि से बचने के लिए सावधानी के कुछ वाक्य लिखे रहते हैं। साथ ही उपरोक्त तीन नशीले पदार्थों का सेवन चोरी-छिपे या समाज की नजरों से बचाकर किया जाता है। लेकिन चौथे प्रकार की नशे का आनंद सरेआम और गाजे-बाजे के साथ किया जाता है और साथ में ईश्वर भक्ति का महिमा मंडित भाव जोड़कर इसे अलौकिक भी बना दिया जाता है।

महात्मा गांधी व नशा:

बुद्ध, ईसा, मुहम्मद, नानक और महात्मा गांधी आदि महापुरुषों ने मद्यपान, धूम्रपान और सांप्रदायिक कुरीतियों का विरोध किया। गांधीजी ने कहा है कि 'जब आप दुखी होते हों तो उस दु:ख से निजात पाने के लिए नशा न करें, बल्कि अपने से अधिक पीड़ित व्यक्ति की ओर देखें। इससे आपकी पीड़ा आपको कम महसूस होगी।' लेकिन आजकल हम ईर्ष्यावश दूसरों के दु:खों को जानने का प्रयास भी नहीं करते और स्वयं को और अधिक यातना देने के प्रक्रम को बढ़ावा दे देते हैं। गांधीजी ने अपने प्रसिद्ध गुजराती भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीड़ पराई जाणे रे' के माध्यम से दूसरों की पीड़ा को जानने वाले को ही वास्तविक वैष्णव माना है। **25** जून **1934** को गांधीजी ने जब पूणे में अछूतोद्धार के लिए जुलूस निकाला, तब उसका भारी विरोध हुआ। वे जिस गाड़ी पर बैठे थे, उसे बम से उड़ाने की कोशिश की गई। हालांकि **30** जनवरी **1948** को जो गांधी जी की हत्या की गई थी, वह भी लगभग इसी तरह की नशा का परिणाम था। महात्मा गांधी की हत्या के बाद कुछ सांप्रदायिक संगठनों द्वारा दिल्ली में खुशियाँ जताई गई और मिठाइयाँ भी बांटी गई।

सामान्य आदतों की नशा:

कुछ लोग अपनी बुरी आदतों के इतने बुरी तरह से शिकार होते हैं कि उन्हें किसी की अच्छी बातें भी ठीक नहीं लगतीं। जैसे मोटापे, मधुमेह या रक्तचाप के मरीज को डॉक्टर की सलाह होती है कि वे मिठाई, आइसक्रीम, पिज्जा, बर्गर, कबाब, बिरयानी आदि न खाएँ। डॉक्टर की सलाह उचित होने के बावजूद वे अपनी आदतों से मजबूर उपरोक्त चीजों से परहेज नहीं कर पाते और तत्पश्चात दवाइयों का भरपूर सेवन करते रहते हैं। इसी प्रकार कुछ लोग घर में बचे हुए कुछ खाने-पीने की चीजों को खराब होने तक किसी को नहीं देते। खराब हो जाने के बाद भी जब किसी भिखारी या जरूरतमंद को देने लगते हैं, तब भी उन्हें देने का दु:ख होता है। हमारे घरों में बहुत से कपड़े पुराने या छोटे जब हो जाते हैं, तब भी हम उन्हें महीनों तक रख कर पुराने करते रहते हैं। लेकिन उन्हें गरीब अथवा जरूरतमंदों को नहीं देते। मेरी समझ से यह भी एक नशा है। लेकिन चिंतनशील लोग ऐसा नहीं करते।

सुप्रसिद्ध स्पेनिश कवि 'जॉन बेर्मिन' ने कहा था कि 'अंध विश्वास तर्क रहित होते हैं। सच्चे धर्म अर्थात कर्तव्य, सुकर्म, न्याय, दान के बिना विज्ञान के नशे में मानव अनैतिक दानव बन जाता है। इसका ज्वलंत उदाहरण एडोल्फ हिटलर का जीवन व कृत्य हैं। तेलुगु कवि श्रीरंगम श्रीनिवासराव (श्री श्री) ने भी कहा है कि 'धर्म (मतमु) मदिरा है और कुल कचरा है।' लेकिन वास्तविक धर्म व विज्ञान एक दूसरे के पूरक व नियंत्रक हैं।

स्वार्थपूर्ण अधिकार का नशा:

अखबारों में आए दिन किसी प्राधिकारी या राजनीतिज्ञ के स्वार्थपूर्ण रवैये अथवा करतूतों का वर्णन छपता रहता है। जो लोग सरकारी अथवा सामाजिक अधिकार प्राप्त कर लेते हैं, उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने कार्य का निर्वाह बिना किसी भेदभाव या स्वार्थ से करेंगे। इसके लिए धार्मिक ग्रंथों पर हाथ रखकर कसम भी खा लेते हैं। लेकिन वास्तव में वे अपने व्यक्तित्व व मानसिकता से अभिप्रेरित होकर काम करते हैं, जिससे देश की संवैधानिक और सामाजिक दोनों भावनाएँ कुचली जाती हैं।

जैसे कि सरकारें विकास के नाम पर जमीन अधिग्रहण करने के लिए नए-नए तरीकों से किसानों की जमीन का अधिग्रहण करती हैं और उनके लिए हरियाली भरे सपनों का सृजन भी करती हैं। लेकिन बाद की वास्तविकता उसके उलटे होती है। धीरे-धीरे स्वार्थी तत्व (जिसमें शासन से जुड़े राजनीतिक लोग भी शामिल रहते हैं) व अधिकारी अपने जेब भरने की नशे में उस जमीन को किसी देशी अथवा विदेशी कंपनी को देकर मोटी रकम कमा लेते हैं। उस जगह पर ऐसा कोई कारखाना, स्टूडियो, होटल, शापिंग माल या कार्पोरेट अस्पताल बना दिया जाता है कि गरीब खेतिहर किसान उस जगह पर पाँव रखने में हिचकता है। तथाकथित विकास पुरुषों के इस नशे के कारण गरीब किसान न घर का रह जाता है और न घाट का। इस नशे के शिकार किसानों को मजबूर होकर विस्थापित मजदूर बनना पड़ता है। साथ ही आज जिस तरह से श्रम कानूनों की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं, उससे विस्थापित किसानों की हालत सुधरना बहुत ही मुश्किल है, क्योंकि असंगठित क्षेत्र में मजदूरों की हालत तो बद से बदतर होती जा रही है। हमारे देश के संगठित क्षेत्र में मात्र तीन प्रतिशत मजदूर काम कर रहे हैं। यह संख्या **1991** से पहले लगभग आठ प्रतिशत थी। संगठित क्षेत्र के मजदूरों को श्रम कानूनों के तहत दिए जाने वाले सारे अधिकार लगभग प्राप्त हैं, जबकि असंगठित क्षेत्र को सुविधाएँ देने के मामले में सरकारी और निजी दोनों संगठन कोताही बरत रहे ही रहे हैं, साथ ही सरकारी कानून और उनके कार्यान्वयन का विधान भी उनके साथ नहीं है। इससे मानवीय मूल्यों में गिरावट आ रही है। मारुति उद्योग में हड़ताल के दौरान हुई एक महाप्रबंधक की हत्या इसका एक उदाहरण है। सरकारी कानून और उसके कार्यान्वयन में यदि सख्ती होती है तो जनता को उसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों लाभ मिलते हैं। कानून और व्यवस्था के नाम पर समाज के साथ बहुत से अन्याय होते हैं, जिसका खामियाजा जब कोई भुगतता है तो उससे समाज कराहता है और उस व्यक्ति की भावी पीढ़ियाँ पिछड़ जाती हैं। लोकतांत्रिक सरकारों एवं हुक्मरानों को ऐसी नशा से बचना चाहिए।

खैर! समस्या-ए-नशा पर हम बात कर रहे हैं। सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री व साम्यवाद के प्रणेता कार्लमार्क्स ने अपनी किताब 'दास कैपिटल' में लिखा है कि 'दुनिया में दो ही वर्ग होते हैं एक शोषक और दूसरा शोषित। शोषकवर्ग के लोग शोषितों में धार्मिक नशा के सहारे फूट डाल कर उन्हें धोखा देते हैं।'

नियमों के साधारणीकरण की नशा:

भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। फिर भी देश में धार्मिक त्योहारों पर सार्वजनिक छुट्टी घोषित करने की परंपरा है। होली अथवा दीपावली पर मुसलमानों या ईसाइयों को और रमजान पर हिंदुओं और अन्य धर्म के अनुयायियों को छुट्टी दी जाती है। चलिए मान लेते हैं कि स्कूलों अथवा कालेजों में सभी बच्चों की कक्षाएँ एक साथ चलती हैं, इसलिए उन्हें छुट्टी दी जा सकती है। लेकिन जो लोग कार्यालयों, अदालतों, अस्पतालों या कारखानों में काम करते हैं, उन्हें क्यों छुट्टी दी जाती है? एक तर्क यह भी दिया जाता है कि इससे आपसी भाईचारा बढ़ता है। तर्क यह भी तो हो सकता है कि त्योहार के दिन उस धर्म विशेष के अनुयायियों को छुट्टी दी जाए और दूसरे धर्म के उनके सहकर्मी काम को सुचारू रखते हुए उन्हें एवं देश को सहयोग दें।

त्योहारों पर सार्वजनिक छुट्टी देने के कारण करोड़ों लोगों के कार्य अनावश्यक रूप से प्रभावित होते हैं। साथ ही इससे आवश्यक सेवाएँ जैसे अस्पताल, अदालत, सरकारी कार्यालय, स्कूल, कालेज आदि एवं अन्य संस्थानों के बंद होने से जनता को काफी परेशानी होती है, साथ ही अन्य धर्मवाले कर्मचारियों के कार्य-दिवस और विद्यार्थियों के अध्ययन-दिवस व्यर्थ होते हैं। यदि इन छुट्टियों को प्रदान करने के तरीके को आवश्यकता के अनुरूप किया जाता तो इससे समाज और देश को बहुत फायदा होता।

भारत की धर्म-निरपेक्षता को मजबूत करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्वों को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती, अंबेड्कर जयंती आदि को प्राथमिकता देते हुए विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व सद्भावना दिवस, अंतराष्ट्रीय मातृदिवस आदि जैसे दिवस जो भारतीय संस्कृति के लिए उपयुक्त हों, उन्हें बढ़ावा देना चाहिए। इससे भारत के संवैधानिक और सामाजिक भावना को मजबूती मिलेगी और हम विश्व-बंधुत्व की धारणा को ठीक से चरितार्थ कर सकेंगे।

पहले हमारा समाज जातियों और कुलों के कुत्सित बंधनों में अधिक जकड़ा हुआ था। उस समय हर प्रयोजन में कुल, गोत्र, जाति आदि पूछे जाते थे। लेकिन जब जाति सूचक शब्द का नाम लेना असंवैधानिक है और समाज में हर व्यक्ति को देश के किसी कोने (जम्मू-कश्मीर को छोड़कर) में रहने एवं घर व जमीन खरीदने

का अधिकार प्राप्त है तो ऐसे में जाति सूचक टाइटिल और स्थान सूचक उपनाम (सरनेम) लिखने की क्या जरूरत है? सरकार भी इसको बढ़ावा देती हैं। हम वैश्विक गाँव (ग्लोबल विलेज) की धारणा स्थापन भाव में जीने लगे हैं। ऐसे में हमारे नाम के आगे या पीछे अपने गाँव और वंश का नाम लिखने का प्रचलन क्यों है?

आध्यात्मिक आचार की नशा:

वैसे तो प्राय: सभी धर्म अथवा मत ईश्वर की सत्ता को सर्वशक्तिमान के रूप में स्वीकार करते हैं। फिर भी अपनी अलग पहचान बनाए रखने के उद्देश्य से अपनी पूजा-अर्चना और मूर्ति निर्माण की पद्धति में भिन्नता बरतते हैं। ऐसा क्यों? क्या यह निरा मूर्खता और उस सर्वशक्तिमान का अपमान नहीं है?

विकृत रूपों में मूर्तियों का निर्माण करके दूध, दही, घी, मधु, जल आदि से उनका अभिषेक करना, फल-पुष्प-धूप-नैवेद्य समर्पण करते हुए बड़े-बड़े लाउड स्पीकरों में चिल्लाना, मंत्र और तरह-तरह के कर्मकांड करना कहाँ तक तर्कसंगत है? बहुत से समाज सुधारकों और दार्शनिकों जैसे बुद्ध, चार्वाक, ईसा, मुहम्मद, कबीर, वेमना, पेरियार, अंबेड्कर आदि सभी ने इन कर्मकांडों का खंडन किया है। फिर भी ये कर्मकांड निर्वाध रूप से सरकारी देखरेख में चलते रहते हैं। ऐसे कर्मकांडों को सरकारी प्रश्रय देना क्या संवैधानिक रूप से न्यायसंगत है? इस संदर्भ में सरकार और उसके तंत्र को स्पष्ट होना चाहिए। सरकार और उसके तंत्र को समाज में न्यायपूर्ण शुचिता स्थापित करने के लिए चुना जाता है, न कि चंद स्वार्थी लोगों के स्वार्थ को पूरा करने के लिए।

छद्म संप्रदाय व कर्मकांड की नशा:

भगवान बुद्ध ने मानव समाज को कर्मकांड आदि से मुक्ति और ज्ञान की ओर प्रवृत्त होने के लिए ईसा पूर्व छठीं शताब्दी में बहुत प्रयास किया था। तत्पश्चात चौदहवीं शताब्दी में कबीर ने भी लगभग उसी अंदाज में इस काम को आगे बढ़ाया। लेकिन धर्म के स्वार्थी लोगों ने गरीब और अज्ञानी जनता को कर्मकांड के जाल में फँसाकर हमेशा लूटने का काम किया है। आज भी नरबलि, पशुवलि के माध्यम से देवताओं अथवा प्रेतात्माओं को खुश करने के लिए कर्मकांड होते रहते हैं। गुप्त धन प्राप्त करने के लिए पिछले वर्ष उत्तर-प्रदेश के उन्नाव जिले में जिस तरह से सरकार को मुँह की खानी पड़ी, उसे पूरी दुनिया देखकर हम पर हँस रही थी (हाल ही में 19.02.15 को ईनाडु (तेलुगु) दैनिक समाचार पत्र के पृष्ठ संख्या-5 पर एक समाचार छपा कि 'गुप्त धन के लिए एक छोटी बच्ची की उंगलियों को काट कर चढ़ाया गया)। लंबे अरसे से विरोध और कानूनी रूप से गलत घोषित किए जाने के वाद भी भारत में विधवाओं (हिंदू धर्मावलंवी) को जलालत की जिंदगी जीना पड़ता है। उन्हें मंगल-सूत्र, चूड़ी, विंदी आदि लगाना मना तो होता ही है, साथ ही उन्हें मांगलिक कार्यों में सहभागिता की अनुमति नहीं होती। ऐसे ही प्रत्यक्ष दैवतुल्य माँ-बाप को छोड़ अब भी न जाने कितने ढोंगी बाबाओं के पीछे लोग भागते रहते हैं।

हमारे देश में घर या दूकान के द्वार पर कुम्हड़े, कद्दू, घृतकुमारी के पौधे, कुरूप मुखौटे का चित्र टाँगना अथवा अपनी मशीन या वाहन पर नींबू, सूखा मिर्च एवं अपने गले व हाथ में ताबीज आदि बांधना बहुत ही आम बात है। यह भी एक प्रकार का नशा है।

धर्म व विज्ञान की नशा व परिणाम:

भारत व पाकिस्तान के विभाजन के समय हिंदू व इस्लाम के मतावलंबियों की परस्पर सामूहिक हत्या, धार्मिक उन्माद की भावना से प्रेरित होकर महात्मा गांधी, इंदिरा गांधी, बेअंत सिंह एवं सामुदायिक दुर्भावना से प्रेरित राजीव गांधी की हत्याएँ, बाबरी मस्जिद को गिराना, गुजरात में गोधरा और उसके बाद के दंगे, मुजफ्फरनगर और आंध्र-प्रदेश के कारंचेडू व चुंडूरु के हत्याकांड, बिहार के जहानाबाद हत्याकांड आदि सांप्रदायिक और सामुदायिक नशा के प्रबल प्रतिफल हैं। आई ई पी (इंस्टियूट आफ एकनामिक्स एण्ड पीस) द्वारा प्रकाशित 'वैश्विक आतंकवाद सूचकांक के अनुसार ऐसी नशा से प्रभावित देशों की ऊपरी श्रेणी में इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नाइजीरिया, सिरिया और भारत क्रमश: शामिल हैं। (18 दिसंबर 2014 के ईनाडु के सौजन्य से) शायद इसीलिए सुप्रसिद्ध स्पेनिश कवि 'जॉन बेर्मिन' ने कहा था कि 'अंध विश्वास तर्क रहित होते हैं। सच्चे धर्म अर्थात कर्तव्य, सुकर्म, न्याय, दान के विना विज्ञान के नशे में मानव अनैतिक दानव बन जाता है। इसका ज्वलंत उदाहरण एडोल्फ हिटलर का जीवन व कृत्य हैं। तेलुगु कवि श्रीरंगम श्रीनिवासराव (श्री श्री) ने भी कहा है कि 'धर्म (मतमु) मदिरा है और कुल कचरा है।' लेकिन वास्तविक धर्म व विज्ञान एक दूसरे के पूरक व नियंत्रक हैं।

पुरुषत्व की नशा :

आज लगभग पूरे भारतीय समाज में पुरुष बाहुल्य व्यवस्था लागू है, जिसके कारण सामाजिक व्यवस्था में बराबर की भागीदार महिलाओं को उनका संवैधानिक अधिकार दिलाना कठिन हो रहा है। बहुत से आदिवासी, जिनमें मातृ संस्कृति का चलन था, उनमें भी इसका प्रचलन बढ़ता जा रहा है। प्राचीन काल में भारत में मातृ संस्कृति का बोलवाला था, जैसे कि चंद्रगुप्त मौर्य के गुरु चाणक्य ने नंद वंश का नाश करके चंद्रगुप्त की माता मुरा के नाम पर मौर्य वंश के राज्य की स्थापना की थी, जो वर्षो तक सफलता पूर्वक चलता रहा। भारतीय स्त्रियाँ आमतौर पर अपने पति को सभी मामलों में अपने से ऊपर देखना पसंद करती हैं और पुरुष अपनी पत्नी को सभी मामलों में अपने से कम रखना पसंद करते हैं। हालांकि अब ऐसी धारणाओं में गिरावट देखी जा रही है।

भविष्य एवं वास्तुशास्त्र की नशा :

अपना भविष्य जानने की उत्सुकता सहज है। लेकिन बहुत लोग इसे जन्म के आधार पर अपना भविष्य जानने के लिए आतुर रहते हैं। इसलिए वे ग्रह, नक्षत्र आदि की गणना करने वाले ढोंगी बाबाओं के जाल में फँसकर अपने वास्तविक कर्म से विमुख होते जाते हैं और शीघ्र लाभ प्राप्त करने के व्यामोह में पड़कर अपना नुकसान तो सहते ही हैं, साथ ही उनकी स्थिति समाज में हास्यास्पद भी हो जाती है। दुर्भाग्य तो यह है कि देश के जाने-माने टी.वी. चैनल ऐसे ढोंगी बाबाओं के प्रवचन एवं कर्मकांड तथा अंधविश्वास की बातों को प्रचारित करने का अवसर प्रदान करते हैं और संविधान के दायरे में काम करने वाली लोकतांत्रिक सरकारें भी इनके प्रसारण को नजरंदाज करती हैं, जबकि असत्य का प्रचार-प्रसार करना पत्रकारिता के आचार की पहली प्राथमिकता होती है। फिर भी मीडिया इस मुद्दे पर चुप रहती है। हालांकि जो समाज ज्ञान-विज्ञान के आधार पर विकसित होता है, वह चिरायु और सभ्य होता है और जिस समाज में अंध विश्वास और मूर्खता अधिक होती है, वह समाज अस्थिर और असभ्य होता है। इसीलिए रामभक्ति शाखा के सुप्रसिद्ध कवि तुलसीदास ने भी ज्ञान को अधिक प्रधानता देते हुए कहा है:

'रैन का भूषण इंदु है, दिवस का भूषण भान।
दास का भूषण भक्ति है, भक्ति का भूषण ज्ञान।।'

इसी तरह कृष्णभक्ति शाखा के महान कवि सूरदास ने भी अपने भ्रमरगीत नामक ग्रंथ में उद्धव जैसे महाज्ञानी के माध्यम से निर्गुण ब्रह्म की उपासना को प्रचारित करने का प्रयास करते हैं। लेकिन गोपियों ने अपनी अज्ञानता के कारण उद्धव के ज्ञान को हास्यास्पद बताते हुए नकार दिया। लाख कोशिशों के बावजूद भी उद्धव अपने अभियान में सफल नहीं हो पाए।

देश में परंपराओं की स्थिति :

देश के अधिकांश भागों में रावण को राक्षस मानकर विजय दशमी के दिन उसका पुतला जलाया जाता है, तमिलनाडु में रावण को महान शिवभक्त मानकर पूजा जाता है। हिंदू धर्म के अधिकतर लोग वामन को विष्णु भगवान का अवतार मानते है, लेकिन केरल में ओणम के दिन उसी वामन द्वारा वध किए गए असुर राजा बलि की पूजा की जाती है। पूरे उत्तर व मध्य भारत में होली व राखी के त्योहार धूमधाम से मनाए जाते हैं, लेकिन ये त्योहार तमिलनाडु व केरल में नहीं मनाए जाते। बंगाल, त्रिपुरा, असम एवं अन्य ठंडे व पहाड़ी क्षेत्रों के ब्राह्मण भी मांसाहार करते हैं, लेकिन मैदानी इलाकों के ब्राह्मणों ने इसे निषेध माना है। आज गाय का दूध बहुत कम उपलब्ध है और भैंस के दूध पर सारी खान-पान व्यवस्था निर्भर हो चुकी है। फिर भी गाय को गोमाता कहते हैं और भैंस को कोई अहमियत नहीं देते। भारत में बहुत सी ऐसी मानव प्रजातियाँ हैं, जो साँप, मेंढ़क, भैंस, कुत्ते, बिल्ली आदि जैसी प्राणियों को खा जाते हैं। लेकिन देश के तथाकथित सभ्य समाज में इसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। महान वैज्ञानिक डार्विन के अनुसार सभी जीव एक-दूसरे पर परस्पर निर्भर हैं।

इसी प्रकार उत्तर भारत के कुछ राज्यों में शादी के बाद ही औरतें अपने होंठों पर होठलाली लगाती हैं, जबकि बहुत से राज्यों में कुंवारी लड़कियों द्वारा होठलाली लगाना सामान्य सी बात है। उत्तर के बहुत से राज्यों की विवाहित महिलाओं का माँग में सिंदूर लगाना अनिवार्य है, जबकि दक्षिण की महिलाओं के लिए यह आवश्यक नहीं।

वेदोत्तर कालीन आर्य लोग प्राकृतिक प्रकोपों से बचने के लिए अग्नि (जंगली की आग), वायु (तूफान), वरुण (वर्षा या बाढ़) की पूजा करते थे। लेकिन गुप्त वंश के शासनकाल से भारत में राम, कृष्ण आदि की मूर्तियों की पूजा आरंभ हुई माना जाता है। बौद्ध व चार्वाकों ने इसका विरोध किया था। इसी तरह पुराने बाइबिल (ओल्ड टेस्टामेंट) में यहोवा और कुरान के अल्ला निराकार माने जाते थे। फिर भी कालांतर के ईसाई मतावलंबियों में ईसा, क्रॉस और मेरीमाता की मूर्तियों की पूजा की नशा व्याप्त है। आमतौर पर ईसाई दुल्हनों को सफेद वस्त्र, हिंदू विधवाओं को सफेद साड़ी और मुसलमान औरतों को काले वस्त्र पहनाने की नशा व्याप्त है।

दूसरों से बराबरी का नशा :

स्पर्द्धा की भावना का सभ्य समाज में बहुत आदर है, लेकिन भौतिक सुविधाओं को भोगने के लिए अपनी क्षमता से बाहर जाकर व्यय या व्यवहार करने की प्रवृत्ति को ओछा माना जाता है। इस प्रवृत्ति की नशे का प्रदर्शन आजकल बहुत अधिक देखने के लिए मिलता है। इससे न परिवार का भला होता है और न समाज का, उल्टे यह कई तरह के विवाद और कलह का कारण बनता है।

अत: मादक पदार्थों की नशे से मानसिक मनोवृत्तियों की नशा अधिक अनिष्टकारी होती है। इसलिए सामाजिक विकास के लिए अपने विचारों में वैज्ञानिकता एवं नैतिकता लाते हुए युवा पीढ़ी को जागरूक करते रहना चाहिए, ताकि सामाजिक विकास की गति से दूर खड़े करोड़ों गरीबों, आदिवासियों, दलितों एवं वंचितों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।

- सेवानिवृत्त प्रबंधक (हिंदी)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
30-19-5, पोस्ट ऑफीस के पीछे
वड्लपूडि, विशाखपट्टणम-530046
मोबाइल: +91 9963231087

सहधर्मिणी

- डॉ मदन सैनी -

यश को मैं पाँच वर्ष पहले तक नहीं जानता था। पाँच वर्ष पहले किसी पत्रिका में मेरी कहानी के साथ उसके चित्र छपे थे। यश को वह कहानी अपने ही इर्द-गिर्द घटी घटनाओं को मूर्तिमान करती सी लगी। तभी तो उन घटनाओं को जीवंत करने वाले जीते-जागते चित्रों का निर्माण करके उसने मेरी कहानी को अर्थपूर्ण बनाने में कोई कोर-कसर नहीं रखी थी। इसी के साथ उस ने एक भावपूर्ण पत्र भी मुझे भिजवाया। मैंने उसके पत्र का प्रत्युत्तर भी दिया और इस प्रकार हमारी मित्रता गहराती गई।

यश उस समय बी.एफ.ए., अंतिम वर्ष का विद्यार्थी था। उसकी कला में कमाल का आकर्षण था। अध्ययन के दौरान वह अपनी आर्थिक जरूरतें कला के बूते पूरी कर लेता था। इतना ही नहीं, कुछ पैसा बचाकर घर भी भिजवा देता था। उसके बार-बार आग्रह करने पर एक बार मैं उसके गाँव जा आया था। गाँव के मध्य में ऊँचाई पर आबाद उसका घर किसी छोटे से किला जैसा था। मुझे आश्चर्य तो तब हुआ जब यश के साथ मुझे देखते ही उसके घर वाले मुझे नाम लेकर पुकारने लगे। यश ने बताया कि उसने मेरी वह कहानी सभी को पढ़कर सुनाई थी। गाँव में मुझे खूब आदर मिला। गाँव वालों की आत्मीयता से मैं अभिभूत हो उठा। यश की माँ ने मुझे यश के लिए कोई अच्छा सा रिश्ता ढूँढ़ने के लिए भी कहा। मैंने उनसे वायदा भी किया, पर वह वायदा मैं नहीं निभा पाया।

उस समय मैं यश के गाँव के नजदीक के एक शहर में नौकरी कर रहा था। वह राजधानी से गाँव आते-जाते बराबर मुझसे मिलता रहा। उन्हीं दिनों यश के साथियों की कलाकृतियों की प्रदर्शनी रवींद्र कला दीर्घा में लगी थी। यश के आग्रह पर मैं भी एक दर्शक की हैसियत से उस प्रदर्शनी का अवलोकन करने राजधानी पहुँचा। मैंने सभी कलाकृतियों का अवलोकन किया और उन पर एक आलेख लिखकर राजस्थानी के एक प्रमुख पत्र में प्रकाशनार्थ भेज दिया। उस आलेख के प्रकाशन से यश की प्रतिभा को चार चांद लग गए। अपने सहपाठियों में उसका कद कुछ और ऊँचा हो गया। यश के मित्र भी मुझे जानने लगे। मैंने यश के साथ उसके मित्रों से मुलाकात भी की। उसके बाद उन लोगों के कई पत्र मुझे मिलते रहे। उन पत्रों के केंद्र में अमूर्तन कला ही रहती थी।

गाँव की यादें शहर में रहने वालों के लिए यादें ही बनकर रह जाती हैं। उन यादों को हरा-भरा रखने का काम करते हैं पत्र। उन दिनों मेरे दफ्तर में दो पत्र आए थे। एक यश के गाँव से उसके पिता ने भिजवाया था और दूसरा शहर से यश ने भिजवाया था। मैंने दो पत्र पढ़े। यश के पिता ने लिखा था कि मैं यश को समझाऊँ कि 'वह विवाह के लिए राजी हो जाए...। हमने उसके लिए फूल सी दुल्हन देख रखी है पर वह ना कर रहा है।'

यश ने लिखा था कि 'मेरे माता-पिता ने मेरे लिए जीवन-संगिनी का चयन कर लिया है, पर मैंने उन्हें साफ मना कर दिया है। अब मैं उन्हें कैसे बताऊँ कि मेरा लव अफेयर मिस कीर्ति से चल रहा है और मेरी नजरों में कीर्ति ही मेरी सहधर्मिणी बनने के लिए सर्वथा उपयुक्त है।'

यश ने इस पत्र को अत्यंत गोपनीय बताते हुए मुझसे मिलने की इच्छा जाहिर की थी। मैं दफ्तर के कामों में बहुत व्यस्त था, फिर भी उसे आने से मना नहीं किया। मेरा पत्र पाकर वह दौड़ा चला आया। अपने कालेज और कला की बातों के बीच ही उसने संकोच एवं झिझक के साथ कहना शुरु किया, 'मैं क्या करूँ भाई साहब, मेरा मार्गदर्शन कीजिए। मिस कीर्ति से तो कला प्रदर्शनी के समय आप मिल ही चुके हैं। अमूर्त कला में उसकी बहुत गहरी पकड़ है और वह मुझे बेहद पसंद है। उसके बिना मेरा जीवन अधूरा है। आप मेरे माता-पिता और मिस कीर्ति को मेरा मंतव्य बताकर मेरे व्यर्थ हो रहे जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकते हैं। मैं आपका एहसान कभी नहीं भूलूँगा।'

'तो क्या मिस कीर्ति को तुम्हारे 'इकतरफा प्रेम' के बारे में बिल्कुल भी पता नहीं है?' मुझे घोर आश्चर्य हुआ। 'नहीं, ऐसी बात तो नहीं है। मिस कीर्ति और वैभव के मध्य में मैं मध्यस्थ का काम करता रहा हूँ। मेरे कहने से ही कीर्ति ने वैभव को प्रेम पत्र लिखे थे और मैंने ही वैभव की ओर से उसके प्रेम पत्रों के प्रत्युत्तर लिखे थे। उनके मध्य प्रेम व्यापार का सूत्रधार तो मैं ही रहा हूँ..., मिस कीर्ति सच्चा प्यार तो मुझसे ही करती है।' यश ने मेरे सामने एक नई पहेली रख दी।

मैं कुछ देर तक विचार मग्न रहा। ऐसा अद्भुत प्रेम-प्रसंग मैंने पहली बार देखा था। मुझे यश का प्रेम व्यवहार उसकी अमूर्त कला की भांति ही ओर-छोर रहित नजर आ रहा था। मैं कल्पना कर रहा था कि कीर्ति के मन में तो वैभव को लेकर ही कल्पनाएँ चल रही होंगी, उसे यश के इकतरफा प्यार का अनुमान तक नहीं होगा। कुछ ऐस ही विचार कर मैंने तनिक गुस्सा प्रकट करते हुए यश से कह दिया कि 'यह ठीक नहीं है, वह अन्य रास्ता खोजे और

वैभव व मिस कीर्ति के रास्ते में रोड़ा न अटकाए।'

शायद उसकी समझ में मेरी बात आ गई थी। कुछ दिनों बाद उसका पत्र आया। लिखा था, 'आपको जानकर प्रसन्नता होगी, मिस कीर्ति अब मेरे वैभव की सहधर्मिणी हो गई है। वैभव लखपति पिता का इकलौता पुत्र है। उसकी निजी कार, कोठी, कृषि फार्म और फोटो स्टूडियो हैं। नौकरों की भी कोई कमी नहीं है। उसके यहाँ कीर्ति सुखी रहेगी। मेरे लिए भी इससे बढ़कर संतोष की और क्या बात हो सकती है।'

यश के उस पत्र को कोई चार वर्ष होने को आए, उसका दूसरा पत्र नहीं मिला। इस दौरान सुनने में आया कि वह राजधानी के किसी अखबार के कला विभाग में काम कर रहा है। उसके गाँव से जरूर कुछ पत्र मिलते रहे। उसके माता-पिता एक ही बात लिखते थे कि उसे विवाह के लिए किसी तरह राजी करो। किंतु इस तरह के मेरे किसी भी पत्र का यश ने जवाब नहीं दिया और अंततः हमारा पत्र व्यवहार बंद हो गया।

कोई बीस दिन पहले अचानक ही यश मेरे कार्यालय में आ धमका। उसके पीछे-पीछे ही कीर्ति मुस्कुराती हुई मेरे सामने आ खड़ी हुई और दोनों हाथ जोड़ कर 'नमस्ते' करते हुए उसने निवेदन किया, 'हम दोनों को साथ निभाने का आशीर्वाद दीजिए।'

'पर, वैभव...!'

'नाम मत लीजिए उस जानवर का ... वह एक नंबर का लंपट है ... शराबी, जुआरी और व्यभिचारी ... सारे अवगुण हैं उसमें। चार वर्ष एक पुत्र के अलावा मुझे क्या मिला उससे? मेरी तरफ देखो, क्या हालत कर डाली है मेरी... रोज रात्रि में शराब पीकर घर आना, बर्तन-भांडे बिखरा देना, मेरे साथ मारपीट करना तो उसका रोजमर्रा का काम था। खुद तो कहीं मुँह मारकर आता, सो तो आता ही था, आते वक्त अपने जैसे ही अपने बिगड़ैल मित्रों को मुझे सताने के लिए साथ ले आता था। मेरी हालत तो दांतों के बीच घिरी हुई जीभ जैसे होकर रह गई थी। यह तो किसी तरह यश तक समाचार पहुँचाने का मुझे मौका मिल गया, वरना पता नहीं क्या होता। यश ने मेरा दुख दूर करने का बीड़ा उठाया। छह महीने पहले मैंने वैभव से तलाक लेने हेतु अदालत में अर्जी दे दी थी। अब आज ही हम दोनों ने लव मैरिज का सर्टिफिकेट प्राप्त किया है और सबसे पहले आपका आशीर्वाद लेने आपके पास आए हैं। कीर्ति अब मिसेज यश के रूप में मेरे सामने थी। मैंने उन्हें बैठने का संकेत किया। यश के चेहरे पर संतोष के भाव थे। वह मेरी तरफ निहार रहा था।

'बच्चा कहाँ है?' मैंने पूछा।

'बच्चा अभी तो अपनी नानी के पास है। हम लोग आठ-दस दिनों तक आपके पास रहना चाहते हैं और यहाँ आस-पास के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण भी करना चाहते हैं जैसे कोलायत, देशनोक, गजनेर, दियातरा इत्यादि', यश ने कहा।

मैंने उन्हें सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी। यश और कीर्ति ने दो दिन तक तो मेरे शहर के सारे दर्शनीय स्थलों का भ्रमण किया। उसके बाद विश्वप्रसिद्ध चूहोंवाली देवी करणी माता का मंदिर भी वे देख आए। कोडमदेसर के भैरव मंदिर और गजनेर झील की यात्रा भी वे एक ही दिन में कर आए। मुझे लगा कि यहाँ के दर्शनीय स्थलों ने उन दोनों को शायद ही प्रभावित किया हो। उस दिन सांख्य-दर्शन के प्रणेता कपिल मुनि की कर्मभूमि कोलायतजी की यात्रा से लौटने पर तो मैंने महसूस किया कि मिसेज यश का चेहरा विवर्ण सा है, उसके चेहरे पर अमूर्तन कला की भांति ही उलझन भरे भाव उभर रहे हैं। मैंने सवाल दाग दिया, 'कोलायत पसंद नहीं आया क्या?'

'एक बात बताइये भाई साहब!' उसने मेरे सवाल का जवाब दिए बिना ही पलट कर पूछा, 'यदि कोई पुरूष अपनी सहधर्मिणी की रक्षा नहीं कर सके, तब उस स्त्री को क्या करना चाहिए?'

'तलाक ले लेना चाहिए, और क्या? जैसा कि आपने किया।' मैंने उसके साहस की सराहना करते हुए कहा। कीर्ति मेरी बात सुनकर गंभीरतापूर्वक पुनः बोली, 'आज बस में तीन वाली सीट पर हम दोनों बैठे थे, तभी एक मनचला युवक मेरे पास आकर बैठ गया। वह मुझसे छेड़छाड़ करने लगा। मैंने यश से कहा तो पता है, ये जनाब क्या बोले? बोले कि क्या बिगड़ गया, वैभव और उसके मित्र कौन सी आपकी आरती उतारा करते थे।'

कहते हुए कीर्ति की आँखों में आँसू छलछालाने लगे।

मैंने यश को डांटा भी और हिदायत भी दी कि 'भविष्य में अतीत की बातें की, तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। मेरे आशीर्वाद का भी कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। अब आप दोनों कोई बच्चे नहीं हो, समझदारी से काम लो।'

यश ने सफाई देते हुए कहा, 'मैंने तो केवल मजाक में ही वह बात कही थी।' उस दिन उन दोनों के आपसी तनाव को दूर करने की इच्छा से मैं उन्हें फिल्म दिखाने सिनेमा ले गया। फिल्म की भावपूर्ण कहानी उनके मनमुटाव को दूर करने में काफी कारगर रही और हम तीनों हँसी-खुशी बातें करते घर पहुँचे।

अगले दिन छुट्टी का दिन था। हम लोगों ने देवीकुंड सागर की सैर करने का निश्चय किया। योजना के अनुसार प्रात: चाय-नाश्ता करके हम लोग देवीकुंड सागर जा पहुँचे। सागर के तलाव के मेड़ पर बैठकर देखने से आस-पास के दृश्य बहुत ही सुहावने नजर आ रहे थे।

तभी छतरियों की तरफ से आठ दस कुत्ते 'भों-भों' करते हुए दूसरी दिशा में दौड़ पड़े। हमने देखा कि उधर एक कुत्ता और कुत्तिया अपनी ही धुन में अठखेलियाँ कर रहे थे। उन कुत्तों की नजरें उन दोनों पर पड़ चुकी थीं। किंतु उनसे बेखबर वे दोनों अपने खेल में मस्त थे। उनका ध्यान उन दरिंदों की ओर नहीं गया। वे दोनों अचानक इतने सारे कुत्तों से घिर गये। कुत्तों ने उस कुतिया पर हमला कर दिया। कुतिया 'कोंय-कोंय' करने लगी। बलिष्ठ कुत्ते ने जैसे ही कुत्तिया की कातर वाणी सुनी, वह रुक गया। उसने आव देखा न ताव, उन कुत्तों पर इस तरह झपटा कि एक बार तो वे सभी सकपका गए। कुत्तिया उनके चंगुल से छूटकर कुछ दूर जा खड़ी हुई और 'भों-भों' करने लगी। पर उन दरिंदे कुत्तों के घेरे से वह अकेला कुत्ता कब तक जूझता? अंतत: वह बेसुध होकर धरती पर गिर पड़ा। कुत्ते उसके शरीर को नोचते रहे और अंत में उसे घसीट कर एक ओर डाल दिया। फिर सभी पुन: छतरियों की ओर दौड़ गए।

कीर्ति खड़ी हो गई। वह बोली, 'भाई साहब, देखा आपने। वह बलिष्ठ कुत्ता चाहता तो अपनी जान बचाकर भाग सकता था। पर, उसने ऐसा नहीं किया। अपनी सहधर्मिणी की जान बचाने के लिए उसने खुद अपनी जान की बाजी लगा दी और अपने प्राणों से हाथ धो बैठा। आपने देखा न भाई साहब, एक पशु होकर भी वह एक अकेला कुत्ता ... और एक ये।' कहते कहते कीर्ति की नजरें यश के चेहरे पर स्थिर हो गई।

- अनाथालय के पीछे
विवेक नगर
बीकानेर-334001 (राजस्थान)
मोबाइल: +91 7597055150

वृक्ष और पर्यावरण

- डॉ वीरोत्तमा पातर 'सरगम' -

आइए शुद्ध हवा के परवानों
स्वस्था साँसों को ढूँढ़नेवालों
आपको परिचित कराऊँ उस अनोखी चीज से
हम जिसे वृक्ष कहते रहते हैं
शिव की भाँति ये विष तो पीते हैं
पर हमें जिंदगी देते हैं ये
इनकी रक्षा अगर नहीं करेंगे हम
घुटके दम, मर ही जाएँगे एक दिन
खुद तो खाते नहीं हैं ये कुछ भी
फिर भी देते हैं फल और सब्जियाँ हमको
देते रहते हैं शुद्ध हवाएँ भी
बूटियाँ, साए और ठंडक भी
इनपे आशिक हैं बारिशों की खतें
मीत है बादलों की हरियाली
हो न जाए हवाएँ प्रदूषित
इसलिए ......
वृक्ष बोते रहिए आँगनों में सब
हाशियों में खेतों के और किनारे सड़कों पर
अपने गमलों, खलिहानों, नदी किनारों पर
हमको इनकी जरूरतें हैं बहुत
अपने लिए न सही ऐ जमानेवालों
अगली नस्लों के स्वास्थ्य की खातिर
कम से कम एक पेड़ ही लगा जाइए
वो अगर फल भी दे नहीं पाए
कम से कम छाँव तो ये देंगे ही
इनकी ताजी हवा ही क्या कम है
और देते हैं बहुत कुछ इनके सिवा
जो हमारे हैं ज्ञान से बाहर
पेड़ बोकर ही उनको पाएँगे
हम तो क्या कल हमारे बच्चे भी
जिंदगानी में मुस्कुराएँगे
याद कर करके अपने पुरखों को
रात-दिन वो दुआएँ भी देंगे
आइए, मिलकर लगाएँ पौधे हम
और रक्षा करें सदा इनकी।

- सहायक निदेशक
हिन्दी शिक्षण योजना, विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9581341715

इतिहास के मौन साक्षी - भारतीय किले

- श्री सुभाष सेतिया -

हर धर्म और दर्शन में शांति को मानव अस्तित्व के लिए उपयोगी माना गया है। इसके बावजूद युद्ध से मनुष्य मुक्ति नहीं पा सका है। एक विद्वान ने तो शांति की परिभाषा लिखते हुए कहा है कि 'यह दो युद्धों के बीच का अंतराल है।' भारत का इतिहास बताता है कि हमने अपनी महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया। फिर भी हमारा देश भी महाभारत से लेकर कारगिल युद्ध तक अनेक बड़ी लड़ाइयों में लिप्त रहा है। प्राचीनकाल तथा मध्यकाल में सैन्य संगठन में दुर्गों, यानी किलों का बहुत महत्व था। ये किले किसी राज्य की सुरक्षा व्यवस्था के बुनियादी अंग होते थे। आज भले ही इन किलों की कोई उपयोगिता नहीं रही, लेकिन ये आज भी विभिन्न युगों में हुए युद्धों में जय-पराजय के साक्षी और स्थापत्य कला के प्रतीक के रूप में हमारी सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर के गौरवपूर्ण अंग हैं।

ये दुर्ग, भारत की विविधतापूर्ण तथा समृद्ध वास्तुकला के शानदार नमूने हैं, जो अपने-अपने समय की सभ्यता, संस्कृति तथा कला के प्रतीकों को भी अपने में समेटे हुए हैं। सच तो यह है कि ये दुर्ग मात्र इमारतें न होकर भारत के समूचे इतिहास के प्रमाणिक मौन साक्षी हैं। ऐतिहासिक स्थलों की खुदाई से प्राचीनकालीन वास्तुकला, मूर्तिशिल्प, चित्रकला के नमूने तथा महलों एवं दुर्गों के अवशेष मिल रहे हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही ऐतिहासिक एवं पुराणकालीन स्थलों की खुदाई कर रहा है। इन्हीं प्रयासों से मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा जैसी प्राचीन संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं, जिनसे भारत के अतीत के प्रति इतिहासकारों की दृष्टि ही बदल गई। इस खुदाई में हड़प्पा दुर्ग के भी अवशेष प्राप्त हुए।

जहाँ तक दुर्गों से इतिहास का संबंध है, इनका उल्लेख भारत के सबसे प्राचीन वैदिक वाङ्मय में भी उपलब्ध है। पुराणों में मेरु पर्वत पर बसे सुदर्शन नामक नगर का उल्लेख आया है, जिसके मध्य में एक दुर्ग है, जिसमें देवराज इन्द्र का वास है। सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में दाशराज्ञ युद्ध का वर्णन है, जिसमें कहा गया है कि राजा सुदास ने परुष्णी (रावी) नदी पार करके सात दुर्गों को नष्ट किया। रामायण में अयोध्या के रामकोट दुर्ग का उल्लेख है, जिसके बीस द्वार और आठ राजप्रसाद थे। रामायण में अयोध्या की किलेबंदी अर्थात् दुर्ग सन्निवेश का भी उल्लेख है। महाभारत काल के अवशेष दिल्ली के पुराना किला में मिले हैं।

इसके अलावा अनेक पुराणों, कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र', वास्तुशास्त्र के अनेक ग्रंथों, शुक्राचार्य की शुक्रनीति तथा अन्य पुस्तकों में न केवल दुर्गों की आवश्यकता, बल्कि उनके प्रकारों, उनकी निर्माण विधि, उनके विविध अंगों तथा अन्य पहलुओं का विस्तार से वर्णन किया गया है। सन् 400 ईस्वी में भारत की यात्रा पर आए चीनी यात्री फाह्यान ने पाटलिपुत्र के भव्य दुर्गों तथा महलों का उल्लेख किया है। किलों का सबसे अधिक निर्माण मध्यकाल में हुआ। किलों के अध्ययन के लिए हम देश को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं, उत्तर तथा मध्य भारत, पश्चिम एशिया और दक्षिण भारत। पूर्वी भारत में बहुत कम किले मौजूद हैं।

उत्तर और मध्य भारत मध्यकाल में अनेक बड़े युद्धों तथा सैनिक कार्रवाइयों का केंद्र रहा है। दिल्ली, आगरा, ग्वालियर, मांडू, इलाहाबाद, रोहतासगढ़, बुंदेलखंड, बघेलखंड आदि स्थानों पर बने किले अपने-अपने समय के इतिहास का बखान करते हैं। उत्तर भारत में किलों की संख्या की दृष्टि से देश की वर्तमान राजधानी दिल्ली का पहला स्थान है, बल्कि दिल्ली को किलों की नगरी ही कहा जा सकता है। विश्व में शायद ही कोई ऐसा नगर है, जहाँ दस दुर्ग हों। यहाँ पर पांडव काल से लेकर सन् 1600 तक के बने दुर्ग अथवा उनके अवशेष मौजूद हैं। पुराने किले के समीप जो खुदाई की गई है, उसमें ईसा पूर्व 1000 वर्ष तक के अवशेषों की पुष्टि हुई है। दिल्ली के किलों में इन्द्रप्रस्थ, लालकोट, राय पिथौरागढ़, सीरी, तुगलकाबाद, जहांपनाह, दीनपनाह, शेरगढ़ (पुराना किला), सलीमगढ़ और लालकिला प्रमुख हैं। सन् 1639 में शाहजहाँ द्वारा बनाए गए लाल किले को छोड़कर अन्य कोई भी दुर्ग इस समय पूर्ण दुर्ग के रूप में सुरक्षित नहीं है। उनके खंडहर ही बचे हैं। लाल किला न केवल संपूर्ण किले के

चित्तौड़गढ़ की तुलना विश्व के श्रेष्ठ दुर्गों में की जाती है। इसके संबंध में कहावत प्रचलित है, 'गढ़ों में गढ़-चित्तौड़गढ़, बाकी सब गढ़ैया।' इसी कारण इसे महादुर्ग कहा जाता है। यह किला इतना विस्तृत और विशाल है कि यह अपने आप में एक नगर है। इसके साथ कई शौर्यगाथाएँ तथा त्याग एवं बलिदान की गौरवगाथाएँ जुड़ी हैं। यह किला केवल विशाल ही नहीं, वरन् अपने साए में फैले महलों, स्तंभों, छतरियों, दरवाजों, अंत:पुरों, तलघरों, बाजार, बावड़ियों और बुर्जो समेत अनगिनत स्मारकों के साथ आजादी के दीवानों के लिए प्रकाश-पुंज और प्रेरणास्रोत भी रहा है।

रूप में सुरक्षित है, बल्कि वह आधुनिक भारत के इतिहास का हिस्सेदार भी है।

लाल किला केवल दिल्ली का दिल ही नहीं, पूरे देश की धड़कन है। हर **15** अगस्त को भारत के स्वाधीनता दिवस पर इस किले पर प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। सन् **1857** के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से ही किला विजयगढ़ के रूप में हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बन गया था। आजादी की लड़ाई के दिनों में यह किला स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। नेता जी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज के सेनानियों पर मुकदमा इसी ऐतिहासिक किले में चला, जो अंग्रजों के भारत से प्रस्थान को गति देने का एक कारण बना। इस प्रकार यह किला हमारी राष्ट्रीय चेतना को झंकृत करता रहा है। लाल किला भारत का महान् ऐतिहासिक स्मारक तथा आजादी और कौमी एकता का प्रतीक है।

दिल्ली के लाल किले की तरह आगरा का लाल किला भी मुगलकालीन स्थापत्य कला का अनुपम मिसाल है। मजबूती की दृष्टि से यह संसार के श्रेष्ठ किलों में से एक है। यह भी शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया था। संयोगवश दिल्ली और आगरा दोनों के लाल किले यमुना नदी के किनारे पर बने हुए हैं। गंगा-यमुना संगम पर बसा इलाहाबाद किला, कालिंजर दुर्ग, झांसी का किला, वाराणसी के निकट गंगा तट पर बना चुनार किला तथा ग्वालियर किला और मांडू दुर्ग इस क्षेत्र के अन्य महत्वपूर्ण किले हैं। मांडू किले के साथ रानी रूपमती और राजा बाज बहादुर की प्रेम-कथा जुड़ जाने से इसकी छवि रोमांटिक किले की बन गई है। हर साल करीब दो लाख पर्यटक इस किले तथा इसके साथ बने महल को देखने आते हैं।

ग्वालियर दुर्ग को किलों में मोती की संज्ञा दी गई है। आगरा से मात्र **118** किलोमीटर की दूरी पर विंध्य पर्वतमाला के आखिरी छोर पर बना यह किला दूर से बड़ा ही शानदार लगता है और ज्यों-ज्यों समीप आते जाइए, किले की चारुता, विशालता और ऊँची प्राचीरों को देखकर आँखें चौंधिया जाती हैं। किले की ऊँचाई ऐसी है कि वह समूचे ग्वालियर शहर पर छाया हुआ दीखता है। आज किला भले ही गुमसुम हो, इसने कई सदियों का इतिहास देखा है। उत्तर से दक्षिण जाने वाले राजमार्ग पर होने के कारण यह अक्सर आक्रमणों का शिकार भी रहा है।

पश्चिम भारत में राजस्थान, गुजरात और गोवा के किले शामिल हैं। राजस्थान तो दुर्गो का प्रदेश ही है। प्रदेश के हर भाग में दुर्ग अथवा उनके अवशेष देखे जा सकते हैं। इनमें चित्तौड़गढ़, रणथंभौर, कुंभलगढ़, जैसलमेर का सोनार किला, जोधपुर का मेहरानगढ़, अजमेर का तारागढ़, जयपुर का आमेरगढ़, भरतपुर का लोहागढ़ तथा गढ़ बूंदी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। राजस्थान की रियासतों के बीच निरंतर लड़ाइयाँ होती रही हैं, जिनके लिए समय-समय पर दुर्ग बनाए गए। इनमें से अनेक किले पहाड़ियों या टीलों पर बने हैं। चित्तौड़गढ़ की तुलना विश्व के श्रेष्ठ दुर्गो में की जाती है। इसके संबंध में कहावत प्रचलित है, 'गढ़ों में गढ़-चित्तौड़गढ़, बाकी सब गढ़ैया।' इसी कारण इसे महादुर्ग कहा जाता है। यह किला इतना विस्तृत और विशाल है कि यह अपने आप में एक नगर है। इसके साथ कई शौर्यगाथाएँ तथा त्याग एवं बलिदान की गौरवगाथाएँ जुड़ी हैं। यह किला केवल विशाल ही नहीं, वरन् अपने साए में फैले महलों, स्तंभों, छतरियों, दरवाजों, अंत:पुरों, तलघरों, बाजार, बावड़ियों और बुर्जो समेत अनगिनत स्मारकों के साथ आजादी के दीवानों के लिए प्रकाश-पुंज और प्रेरणास्रोत भी रहा है। अजमेर का तारागढ़ भी राजस्थान के महत्वपूर्ण दुर्गो की श्रेणी में आता है। पर्वत श्रृंखलाओं में बसा यह किला राजस्थान का प्राचीन गिरिदुर्ग है। तारागढ़ अपने प्राचीरों और सुदृढ़ बुर्जो के लिए प्रसिद्ध है। इसकी रचना से प्रभावित होकर बिशप हैवर ने इसे पूर्व का दूसरा जिब्राल्टर कहा था। दुर्ग का निर्माण सातवीं सदी में शाकंभरी के चौहान नरेशों ने अरब खलीफाओं के आक्रमणों से बचने के लिए कराया था।

राजस्थान में बहुत से ऐसे दुर्ग भी हैं, जहाँ न कभी कोई आक्रमण हुआ और न ही लड़ाई हुई, किंतु फिर भी वे देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं। जयपुर के निकट जयगढ़-आमेरगढ़- नाहरगढ़ किले ऐसे ही हैं। वास्तव में ये किले राज्य को रक्षा कवच के घेरे में लेने के लिए बनाए गए थे।

जयपुर में आने वाले पर्यटकों को दूर से ही आमेरगढ़-नाहरगढ़ (सुदर्शनगढ़) दीखने लगते हैं। नाहरगढ़ तो पूरे शहर पर छाया हुआ सा लगता है। वस्तुत: आमेर का वर्तमान किला जिस स्वरूप में है, उसे मोर्चाबंदीयुक्त महलों की संज्ञा प्रदान करना ही अधिक उपयुक्त होगा। जयगढ़ ही सही अर्थो में किला है, इसके सुदृढ़ गोलाकार बुर्ज, ऊँचे प्राचीर और उन्नत द्वार सुरक्षा की दृष्टि से आदर्श हैं। पहाड़ों की सघनता, वृक्षों का आधिक्य और तलहटी की संकीर्णता मिलकर आमेर दुर्ग को बड़ा सुरक्षित स्थान बना देते हैं। बाद में नाहरगढ़ बन जाने पर उधर की पाँच किलोमीटर की पहाड़ी जब प्राचीरों से ढक गई तो सुरक्षा की दृष्टि से यह स्थान और भी सुदृढ़ बन गया।

इतिहासकारों के अनुसार गुजरात की संस्कृति हड़प्पाकालीन थी। गुजरात प्रदेश अपेक्षाकृत शांत और आक्रमणों तथा लड़ाइयों से मुक्त रहा है। फिर भी वहाँ कई प्राचीन दुर्गो के अवशेष मौजूद हैं। द्वारका द्वीप के निकट हुई खुदाई में **3500** वर्ष पूर्व प्राचीन दुर्ग की दीवार का पता चलता है। इस क्षेत्र में सागर के भीतर भी

एक परकोटा मिला है। राजकोट जिले में भी खुदाई में एक दुर्ग के अवशेष प्राप्त हुए हैं। गुजरात के प्रमुख दुर्गों में जूनागढ़, पावागढ़, दवोही, आंडा आदि गिनाए जा सकते हैं। इनमें जूनागढ़ का किला विशेष उल्लेखनीय है। जूनागढ़ किला गिरनार पहाड़ी पर है। गिरनार पहाड़ी गुजरात की सबसे ऊँची पहाड़ी है। यहाँ अशोक कालीन शिलालेख आज भी सुरक्षित हैं। जूनागढ़ का शाब्दिक अर्थ ही पुराना किला है। जूनागढ़ के आज दो रूप हैं - एक खूबसूरत शहर और दूसरा प्राचीन किला, जिसमें मंदिरों, गुफाओं, शिलालेखों, कुंडों आदि की प्रचुरता है। आज का जूनागढ़ ऊपरी कोट (गढ़) का विस्तृत अंश है और इसकी स्थापना सन् **875** में चुंडुसामा राजपूत वंश के ग्रहारियू प्रथम ने की थी। इतिहास में जूनागढ़ का अस्तित्व ईसा पूर्व **250** में भी था।

पश्चिमी भारत के सुंदर एवं मनोहारी तटवर्ती क्षेत्र गोवा पर लगभग **450** वर्षों तक पुर्तगाल का शासन रहा। इस दौरान पुर्तगालियों ने अनेक सागरदुर्गों का निर्माण किया तथा कई किलों का पुनर्निर्माण किया। गोवा पर कब्जा जमाने के लिए डच, फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के साथ पुर्तगालियों की लडाइयाँ भी हुई। गोवा के किलों में आग्वाद, मझगाँव, नरोआ, राइसमागोस, टीविम, चादोम, कोलवाल आदि उल्लेखनीय हैं। ये सभी किले **1612** ई. से **1739** ई. के बीच बनाये गये थे। आग्वाद दुर्ग गोवा के किलों में सबसे बड़ा और संरक्षित दुर्ग है। यह किला मांडवी नदी और अरब सागर के मुहाने के ठीक सामने समुद्र तल में **87** मीटर ऊँची पहाड़ी पर निर्मित है। इसका निर्माण **1612** ई. में हुआ।

दक्षिण भारत में बहुत से प्राचीन तथा मध्यकालीन किले अथवा उनके अवशेष मौजूद हैं। इस क्षेत्र के किलों में गोलकुंडा, गुलबर्गा, बीजापुर, वीदर, विजयनगर, शिवनेरी, राजगढ़, सिंहगढ़, प्रतापगढ़, पन्हालगढ़, रायगढ़ और श्रीरंगपट्टणम आदि प्रसिद्ध हैं। शिवाजी ने अपनी छापामार रणनीति के अनुसार किलों के निर्माण में चतुराई, कौशल तथा आक्रामक तकनीक का प्रयोग किया। गोलकुंडा **610** मीटर की ऊँचाई पर आठ किलोमीटर की परिधि में तिहरी प्राचीरों से घिरा हुआ दुर्ग है। यह आंध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद से मात्र **10** किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है और देश के पाँच प्रमुख किलों में से एक है। बंजारा पहाड़ी की ऊँची ग्रेनाइट चट्टानों पर निर्मित किला भारतीय इतिहास का एक शानदार अध्याय है। गोलकुंडा की प्रसिद्धि कुतुबशाही सुलतानों के शासन से हुई। इसी तरह बीजापुर का भारत के इतिहास में विशेष स्थान है। यह दक्षिण भारत का आगरा माना जाता है। संयोग है कि संसार की प्रसिद्ध दो बेजोड इमारतें ताजमहल और गोलगुंबद एक साथ सत्रहवीं शती में ही बनीं। किंतु स्थापत्य शिल्प में बीजापुर की अपनी अलग पहचान है। इसका श्रेय आदिलशाही सुल्तानों की है, जिन्हें इमारतें बनवाने का बड़ा शौक था। बीजापुर किला सुलतानों द्वारा निर्मित सबसे बड़ा किला है।

शिवनेरी यद्यपि एक प्राचीन गिरिदुर्ग है, परंतु उसकी प्रसिद्धि छत्रपति शिवाजी की जन्मभूमि होने के कारण है। इसी दुर्ग में **19** फरवरी **1627** ई. को छत्रपति शिवाजी का जन्म हुआ था। मौजूदा किलेबंदी भले ही मध्ययुगीन हो, परंतु दुर्ग का निर्माण प्राचीन काल में हुआ था। दुर्ग के चारों ओर **50** से ज्यादा बौद्ध गुफाएँ भी हैं। इतिहास प्रसिद्ध सिंहगढ़ भी देश के सुदृढ़ एवं अजेय दुर्गों में से एक है। दुर्ग कब बना, इसके बारे में ज्यादा पक्के प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। परंतु दुर्ग रचना को देखते हुए इतिहासकारों ने इसे प्राचीन माना है। सन् **1647** ई. में इस दुर्ग पर शिवाजी ने कब्जा किया था। शिवाजी के जीवन से जुड़े अन्य दुर्गों में प्रतापगढ़ का नाम लिया जा सकता है। प्रतापगढ़, महाराष्ट्र का सबसे नामी और चित्रोपम दुर्ग है। यह महाराष्ट्र के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल महाबलेश्वर से **24** किलोमीटर दूर पर है। छत्रपति शिवाजी ने कोंकण की ओर से दर्रों पर नियंत्रण रखने के लिए दुर्ग का निर्माण शुरू करवाया और सन् **1656** तक निर्मित हो गया। प्रतापगढ़ मूलतः गिरिदुर्ग है।

महाराष्ट्र के दुर्गों में रायगढ़ का स्थान सर्वोपरि है। दुर्ग काफी विशाल और पुराना है। इसकी विशिष्ट स्थिति, सामरिक महत्व और अजेयता को देखते हुए शिवाजी ने इसे राजधानी के लिए चुना और कल्याण के सूबेदार आबा जी सोनदेव को दुर्ग को राजधानी लायक बनाने के लिए आवश्यक भवनों के निर्माण की जिम्मेदारी सौंपी। सन् **1674** में रायगढ़ राजधानी बनी। दुर्ग में चूने के पत्थरों की तीन सौ इमारतें, राजमहल, दरबार, अन्न-गोदाम, गोला-बारूद के भंडार, दो हजार सैनिकों के लिए आवास, बाजार, मंदिर और जलाशय विशेष रूप से निर्मित किए गए थे।

दक्षिण का श्रीरंगपट्टणम किला इतिहास की अनेक घटनाओं का साक्षी है। कावेरी नदी के एक द्वीप पर बने इस दुर्ग के शासकों, हैदर अली और टीपू सुलतान ने अंग्रेजों के शासन को हिलाकर रख दिया था। टीपू सुलतान को मैसूर का शेर कहा जाता है। इस किले का निर्माण सन् **1545** में किया गया था। आज यह किला जर्जर हालत में है। वास्तव में यह दुर्ग इतिहास का जीता-जागता संग्रहालय है।

- सी-302, हिंद अपार्टमेंट्स
प्लाट नं.12, सेक्टर-5
द्वारका, नई दिल्ली-110075
ईमेल: setia_subhash@yahoo.co.in

चक्रधर शुक्ल के हाइकु, मुक्तक ...

हाइकु

1. दिन सरके
फूल झरे, पाले में
अरहर के

2. तीर कमान
व्यंग्य भरी बातें क्यों
करे जवान

3. हवा बैरन
इस कदर डोली
सांकल बोली

4. दुपट्टा अब
स्टोल में क्यों बदला
डर निकला

5. तितली डरी
भौंरों की छेड़छाड़
बागों में बढ़ी

6. पुस्तक मेला
जिज्ञासुओं का रेला
सेल का रोना

7. वाह वाही में
फूल के कुप्पा होना
ठीक नहीं है

8. बिजली गिरी
पेड़ झुलसे - मन
में आग लगी

9. मुँह लपेटे
लड़की के हाव-भाव
अच्छे कि बुरे

10. घर से बाहर
कदम रखते ही
बातें ही बातें

बेटी

1. बेटी घर में
जब तक रहेगी
ऊर्जा बहेगी

2. बेटी का प्यार
पाकर घर हर्षा
स्नेह की वर्षा

3. अच्छा लगता
बेटी का तुतलाना
नाचना-गाना

4. बेटी की जीत
घर बजी बधाई
मंगल गीत

5. बेटी ले आई
चेहरों पे मुस्कान
कार्य महान

6. इंद्रधनुष
गगन में खिलता
घर में बेटी

7. उम्मीद जगी
तोड़ेगी वर्जनाएँ
लड़कियाँ ही

8. सुख-दुख में
हाथ नहीं बँटाती
'हाय' हो जाती

क्षणिकाएँ

1. धक्के खाना
आजकल
हैसियत
रुपयों से आंकी जा रही
इंसानियत
धक्के खा रही!

2. साहसी
साहसी लड़कियाँ
शोहदों पर भारी
चोट करारी!

3. स्वभाव
कुछ लोगों का स्वभाव
रोना - हरदम रोना,
माने
सब कुछ खोना!

4. सपने बुनना
चुलबुलाहट
सपने बुनने लगी
लड़की
बारिश में भीगी
छत पर थिरकने लगी!

कविता

मुक्तक

1. सौगाती, सौगात के
नई नई शुरुआत करें
पौधे जीवित हो जाते
पौधों से भी बातें करें।
2. सीना जोरी करता है
छुप के चोरी करता है
उजला-उजला घूम रहा
चमड़ी गोरी करता है।
3. गुस्से को कल पे टालो
झुकने की आदत डालो
खाओ सब परसाद समझ
बुरी आदतें मत पालो।
4. दिखता सीधा, सादा है
करता झूठा वादा है
वाणी में आक्रोश भरा
संत भेष में दादा है।
5. छात्र को सीख दो प्यारे
पात्र को भीख दे प्यारे
फलों का जूस महँगा है
उसे तुम ईख दो प्यारे।
6. हम पर पहरेदारी है
उन पर बड़ी उधारी है
कब से चंदा माँग रहा
पहुँचा हुआ भिखारी है।
7. जालिम फंदा है उसका
मन भी गंदा है उसका
बहुरुपिए का भेषधरे
अच्छा धंधा है उसका।
8. तुलसी को जिसने जाना
रामचरित मानस माना
जीवन उसका सुखद हुआ
राम-राम के गुण गाना।
9. जीवन में कुछ कर लेते
पीर किसी की हर लेते
रंगमंच की दुनिया में
गुण से झोली भर लेते।

दोहे

1. गौरैया घर में नहीं, काटे वन के वृक्ष।
संकट पर्यावरण का, आया जीव समक्ष।।
2. गौरैया गाती नहीं, चूँ-चूँ करके गीत।
मोबाइल में बज रहा, अब उसका संगीत।।
3. छत पे अब दाना नहीं, आटा लाते लोग।
मैगी खा, खा मानसिक, गौरैया को रोग।।
4. टामी घर में है पला, खाता बिस्कुट केक।
गौरैया सब जानती, कौन यहाँ पर नेक।।
5. गौरैया माँ सोचती, कैसे रहे निरोग।
टावर तो फैला रहे, जाने कितने रोग।।
6. घर बदले अब फ्लैट में, ए.सी. की भरमार।
बालकनी पानी नहीं, गौरैया बीमार।।
7. धरा प्रदूषित कर रहे, पालिथीनिक लोग।
जीव-जंतु व्याकुल बहुत, कष्ट रहे हैं भोग।।
8. कानों में चिपका रहे, मोबाइल दिन रात।
संकेतों में हो रही, इन से उनकी बात।।

मुक्तक

1. बेमौसम बरसात हुई।
तरह तरह की बात हुई।
पानी का दोहन जारी।
पानी-पानी रात हुई।
2. महँगाई की मार पड़ी।
पत्नी जी बीमार पड़ी।
खोद दिया है सड़कों को
बोले अंदर तार पड़ी।
3. संत वेश में व्यभिचारी।
पद के मद में अधिकारी।
संबंधों के तरुवर को
काट रहे बारी बारी।।
4. जग में नाम करो तुम।
अच्छे काम करो तुम
सत्यम, शिवम, सुंदरम
पावन धाम करो तुम।
5. मंच जमाने की बात करो।
व्यंग्य सुनाने की बात करो।
चुटकुलों में कुछ नहीं रक्खा
गजल तराने की बात करो।

- एल.आई.जी.-1
सिंगल स्टोरी, बर्रा-6
कानपुर-208027, उत्तरप्रदेश
मोबाइल: +91 9455511337

चाँद शेरी के मुक्तक

1. मैं गीता, बाइबिल, कुरान रखता हूँ।
सभी धर्मों का मैं सम्मान रखता हूँ।।
ये मेरे पुरखों की जागीर है लोगों।
मैं अपने दिल में हिन्दुस्तान रखता हूँ।।

2. ये तुलसी, ये मीरा, ये रसखान की मिट्टी है।
ये गांधी, ये बिस्मिल के बलिदान की मिट्टी है।।
यहीं गूँजती हैं सदाएँ, अमन चैन की।
यही मेरे प्यारे हिन्दुस्तान की मिट्टी है।।

3. मै ही गंगा, मैं ही जमुना, मैं ही चंबल का पानी हूँ।
मैं ही दुर्गा, मैं ही रजिया, मैं ही झाँसी की रानी हूँ।।
मेरे सीने में रहती हैं नमाजें और पूजा भी।
मेरी भाषा तो हिन्दी है, मैं तो हिन्दुस्तानी हूँ।।

4. नहीं तू इस कदर धनवान।
खरीदे जो मेरा ईमान बाबा।।
ये छोड़ अभी मंदिरों मस्जिद के झगड़े।
अरे छोड़ एकता की तान बाबा।।

5. नादान न बन कोई तेरा यार नहीं है।
जुल्मत में तो साया भी वफादार नहीं है।
वो सिख है ना ईसाई ना हिन्दू ना मुस्लमाँ।
जिस शख्स में इंसान का किरदार नहीं है।।

6. हम कभी मिट्टी से बगावत नहीं करते।
हम कभी लाशों की तिजारत नहीं करते।।
हम वतन के खातिर बहा देते है अपना खूँ।
रहबरों जैसी हम सियासत नहीं करते।।

7. जब परिंदा उड़ान पर होगा।
तीर कोई कमान पर होगा।
देश की एकता का सुर इक दिन।
देखना हर जवान पर होगा।।

8. रहनुमा थे जो मदारी हो गये।
लुट गये राही भिखारी हो गये।।
एकता की नींव के दुश्मन सभी।
फावड़े-गैंती, तगारी हो गये।।

9. लोग किसको ताज पहनाने चले।
हाथ अपने खुद ही बँधवाने चले।।
राम तेरी सरजमी पर लोग अब।
नफरतों की आग फैलाने चले।।

10. आतंक देश से जो मिटाया न जायेगा।
बरबादियों से इसको बचाया न जायेगा।।
बिगड़े हों चाहे कितने ही हालात दोस्तों।
उम्मीद का चिराग बुझाया न जायेगा।।

11. इरादे की अटल चट्टान देगा।
हमें खुद हौसला तूफान देगा।।
उसे हम अम्न का पैगाम देंगे।
हमें जो जंग का मैदान देगा।।

12. तू न अमृत का पियाला दे हमें।
सिर्फ रोटी का निवाला दे हमें।।
सीख पाएँ हम जहाँ इंसानियत।
कोई ऐसी पाठशाला दे हमें।।

13. वहाँ पर अमन क्या होगा, सुकूँ की बात क्या होगी।
जहाँ बारिश लहू की हो वहाँ बरसात क्या होगी।।
गरीबों को मयस्सर अब न रोटी है न कपड़ा है।
ऐ आजादी तेरी इससे बड़ी सौगात क्या होगी।।

14. आज का राँझा हीर बेच गया।
हीरे जैसा जमीर बेच गया।।
इक कबाड़ी को वो निरा जाहिल।
मीर-तुलसी-कबीर बेच गया।।

15. क्या खूब पत्थरों में वफा ढूँढ़ते हैं लोग।
खामोश मकबरों में सदा ढूँढ़ते हैं लोग ।।
कुछ बात पीने वालों की पूछो न दोस्तों।
इंसान के लहू में नशा ढूँढ़ते हैं लोग।।

16. शहरे वफा का आज ये कैसा रिवाज है।
मतलब परस्त अपनों का खालिस मिजाज है।।
जलती रहेंगी बेटियाँ यूँ ही दहेज पर।
कानून में सुबूत का जब तक रिवाज है।।

17. उनको या रब इन बलाओं से बचा।
दुल्हनें जलती चिताओं से बचा।
खुल गई है अब हकीकत चाँद की।
हमको परियों की कथाओं से बचा।।

18. कोई दाता अमीर ढूँढ़ेंगे।
शहर में क्या फकीर ढूँढ़ेंगे।।
हम नये दौर की किताबों में।
खाक, तुलसी कबीर ढूँढ़ेंगे।।

19\. शहर में कैसे मदारी आ गए।
सूट में नंगे भिखारी आ गए।।
मंदिरों के मस्जिदों के बीच में।
आज फिर मुल्ला पुजारी आ गए।।

20\. भटका है राह में दिल मंजिल दिखाए कोई।
मझधार में है कश्ती साहिल दिखाए कोई।
हमने जिसे भी देखा भूखा हवस का देखा।
हो जो वफा का भूखा वो दिल दिखाए कोई।

21\. आवाद जिस के दम से ये मयखाने हो गये।
मयकश उन्हीं के नाम से बेगाने हो गये।।
नफरत की आग अहले सियासत ने फूँक दी।
बदनाम यूँ ही मस्जिदों बुतखाने हो गये।।

गजल

1\. सय्यादों से आजाद फजा माँग रहे हो
गुलचीनों से गुलशन की भला माँग रहे हो।

धनवानों से उम्मीद है क्या रहमो करम की
नादान हो क्यूँ इन से दया माँग रहे हो।

रहजन से भी बदतर है बहुत आज का रहबार
इक अंधे से मंजिल का पता माँग रहे हो।

जो खुद ही खतावार है इंसाफ के मुजरिम
क्यूँ अपने लिए उनसे सजा माँग रहे हो

घर खंजरों में अपना बनाया है तो 'शेरी'
क्यूँ चैन से जीने की दुआ माँग रहे हो।

2\. राही बैठे लुट कर कितने।
रहजन निकले रहबर कितने।।

पूछे उस कातिल से कोई।
जालिम काटेगा सर कितने।।

ये फिकरे बाजी रहने दो।
मारोगे अब कंकर कितने।।

उछले कूदे फिर नाचे जो।
संसद में थे बंदर कितने।।

हेराँ है मंदिर मस्जिद भी।
उनकी खातिर खंजर कितने।।

सोने चांदी की दुनिया में।
असली निकले जेवर कितने।।

'शेरी' इन जख्मों से पूछो।
हम पर बरसे पत्थर कितने।।

3\. नफरत की आंधियों से नगर सारा भर गया।
मिल जुल के जो बनाया घरौंदा बिखर गया।।

बारूद पर खड़ा था जहाँ हो के बेखबर ।
वो आया जलजला कि हर इक शख्स डर गया।।

खामोश क्यों फलक है जमीं क्यों उदास है।
रातों का चांद दिन का वो सूरज किधर गया।

मैं ढूँढ़ता रहा हूँ सराबों में मुद्दतों।
आँखों में मेरी एक समंदर उतर गया।।

वो साथ था तो खार भी गुल की मिसाल थे।
वो क्या गया कि साथ ही लुत्फे सफर गया।।

जलते थे लोग उनकी उड़ानों से इस कदर।
पर कैंच कोई आके परिंदों को कर गया।।

'शेरी' वो खेलते हैं तमंचों से आज कल।
गुड़ियों से खेलने का जमाना गुजर गया।।

4\. शहरे वफा का आज ये कैसा रिवाज है।
मतलब परस्त अपनों का खालिस मिजाज है।।

फुटपाथ से गरीवी ये कहती है चीख कर।
क्यूँ भूख और प्यास का मुझ पर ही राज है।।

जलती रहेंगी बेटियाँ यूँ ही दहेज पर।
कानून में सुबूत का जब तक रिवाज है।।

शायद इसी का नाम तरक्की है दोस्तों।
नंगी सड़क पे हर बहू बेटी की लाज है।।

क्या जाने क्या हो देश का अंजाम देखिए।
इंसानियत के खून से महंगा अनाज है।।

जब से गुलाम पैरों की टूटी है बेड़ियाँ।
सर पर हर एक शख्स के काँटों का ताज है।।

उन रहबरों का हाल न 'शेरी' से पूछिए।
खालिस लुटेरों जैसा ही जिनका मिजाज है।

- के-30, आई.पी.आई.ए.
रोड नं.1, कोटा-324005 (राजस्थान)
मोबाइल: +91 9461188530

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में कर्मचारियों को अपने दैनंदिन में राजभाषा के प्रयोग हेतु प्रेरित क

हिंदी अनुवाद प्रशिक्षण

भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अधीन केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के प्रशिक्षण व तकनीकी संस्थान में 6 से 10 अप्रैल, 2015 तक 'पाँच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण' कार्य क्रम आयोजित किया गया। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के सहायक निदेशकगण श्री एम एम भांडेकर व श्री ईश्वर चंद्र मिश्र इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के स्रोत वक्ता थे। कार्यपालक निदेशक (विपणन) श्री आर शंकर ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रतिभागियों से कार्यक्रम का लाभ उठाने और अपने दैनिक कार्य में हिंदी के प्रयोग हेतु अभिप्रेरित किया। महाप्रबंधक (मानव संसाधन)-गैर संकर्म व मानव संसाधन विकास श्री टी सुंदर ने प्रतिभागियों को राजभाषा कार्यान्वयन का महत्व समझाते हुए उन्हें इस दिशा में आवश्यक सहयोग का आश्वासन दिया। इस कार्यक्रम में भारत सरकार की राजभाषा नीति, धारा 3(3) का अनुपालन, अंग्रेजी व हिंदी की वाक्य संरचना, जटिल वाक्यों का अनुवाद, विभिन्न प्रकार की शब्दावली, सूचना प्रौद्योगिकी आधारित अनुवाद, प्रशिक्षण की उपादेयता आदि की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में कुल 22 प्रतिभागी उपस्थित थे। कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि एवं निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद ने प्रतिभागियों को संकाय सदस्यों से प्राप्त जानकारी के शत-प्रतिशत अनुपालन की सलाह दी। तत्पश्चात प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किये गये। कार्यक्रम का संचालन प्रबंधक (राजभाषा) डॉ टी हैमावती ने किया।

यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम

कर्मचारियों द्वारा कंप्यूटरों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु 07 अप्रैल व 13 अप्रैल, 2015 को संगठन में 'यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित किये गये, जिनमें वी एस पी के विविध विभागों के कुल 33 प्रतिभागी उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान उन्हें एम एस ऑफीस में यूनिकोड अपलोड करने व एम एस वर्ड, एक्सेल व पॉवरपाइंट में उसके उपयोग के माध्यम से हिंदी के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया गया।

इस्पात मंत्रालय द्वारा दिल्ली स्थित क्षेत्रीय कार्यालय का निरीक्षण

इस्पात मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री शैलेश कुमार सिंह ने आर आई एन एल के दिल्ली स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन का निरीक्षण किया। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कर्मचारियों के कार्यसाधक ज्ञान, प्रवीणता तथा कंप्यूटरों यूनिकोड के प्रयोग की स्थिति, पंजियों, फाइलों, टिप्पणियों तथा विभिन्न कार्यालयों/अभिकरणों के साथ पत्राचार में हिंदी के प्रयोग की स्थिति की जायजा लिया तथा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु आवश्यक दिशानिर्देश दिये। क्षेत्रीय प्रबंधक (उत्तर) व उप महाप्रबंधक (विपणन) श्री अरविंद पांडे ने निरीक्षण प्राधिकारी को इन दिशानिर्देशों के अनुपालन का आश्वासन दिया।

इस्पात मंत्रालय के संयुक्त निदेशक द्वारा मुख्यालय में हिंदी के प्रयोग का निरीक्षण

इस्पात मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री शैलेश कुमार सिंह द्वारा आर आई एन एल के विभिन्न

रने के ठोस प्रयास किये जाते हैं। इसी क्रम में अप्रैल से जून, 2015 तक आयोजित कार्यक्रमों की एक झाँकी नीचे प्रस्तुत है :

विभागों में हिंदी के प्रयोग का निरीक्षण किया गया। 22 जून, 2015 को मानव संसाधन विभाग के 'नागार्जुन' सम्मेलन कक्ष में आयोजित निरीक्षण कार्यक्रम में श्री शैलेश कुमार सिंह ने मुख्यालय के विभिन्न विभागों में प्रयुक्त पंजियों, उनके कॉलम शीर्षो, प्रविष्टियों, रबड़ की मोहरों, नामपट्टों, साइन बोर्डो, पत्र-शीर्षो ', विजिटिंग कार्ड एवं फाइलों पर विषय आदि में हिंदी के प्रयोग एवं पत्राचार में हिंदी के प्रयोग का जायजा लिया। साथ ही कर्मचारियों को राजभाषा नीति के अनुपालन से संबंधित विविध मदों की जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने मुख्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति संतुष्टि व्यक्त की और इसे आगे भी बरकरार रखने की सलाह दी। इस निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान महाप्रबंधक (मानव संसाधन)-गैर-संकर्म व प्रशिक्षण श्री टी सुंदर उनके साथ थे। साथ ही विभिन्न विभागों के हिंदी समन्वयक एवं राजभाषा विभाग के प्राधिकारी मौजूद थे।

संगठन के विभिन्न विभागों एवं शाखा कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण

वी एस पी के शाखा कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु 10-11 जून को प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती जे रमादेवी द्वारा फरीदाबाद स्थित शाखा कार्यालय का निरीक्षण किया गया। इसी क्रम में 11 जून को प्रबंधक (राजभाषा) डॉ टी हैमावती द्वारा इंदौर स्थित शाखा कार्यालय का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर संबद्ध शाखा कार्यालयों के कर्मचारियों का उपयुक्त मार्गदर्शन किया गया और कंप्यूटर में हिंदी के प्रयोग हेतु आवश्यक दिशानिर्देश दिये गये। साथ ही राजभाषा विभाग के प्राधिकारियों द्वारा मुख्यालय के निदेशक (वित्त) के सचिवालय, विधि मामले, सतर्कता, कृषिवानिकी, सुरक्षा, पर्यावरण विभागों में 22 से 24 जून, 2015 तक राजभाषा निरीक्षण किया गया और राजभाषा के प्रयोग के संबंध में संबद्ध विभागों के संदेहों का निराकरण करते हुए राजभाषा प्रयोग हेतु कर्मचारियों का उत्साहवर्धन किया गया।

जग्गय्यपेटा चूनापत्थर खान कार्यालय में हिंदी कार्यक्रम का आयोजन

जग्गय्यपेटा चूनापत्थर खान कार्यालय में 29 व 30 जून, 2015 को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। उप महाप्रबंधक श्री जी वी सुब्बाराव ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रतिभागियों को सरल हिंदी के प्रयोग का सुझाव दिया। तत्पश्चात प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, हिंदी व्याकरण, अनुवाद एवं विभिन्न प्रकार की शब्दावली की जानकारी दी गयी और उन्हें कोश एवं प्रमाणपत्र भी वितरित किये गये। इस अवसर पर उपरोक्त कार्यालय में हिंदी कार्यान्वयन का निरीक्षण भी किया गया और उन्हें हिंदी के प्रभावी प्रयोग के उपयुक्त सुझाव भी दिये गये। कार्यक्रम के संचालन हेतु मुख्यालय के राजभाषा विभाग से प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती जे रमादेवी, वरिष्ठ सहायक (राजभाषा) श्री जी आर ए नायुडु एवं कनिष्ठ सहायक (राजभाषा) डॉ जे के एन नाथन जग्गय्यपेटा गये थे। 30 जून 2015 की शाम को हिंदी व तेलुगु फिल्मी गीतों के समन्वय से सुगठित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसकी सभी कर्मचारियों ने प्रशंसा की।

संगीत सरिता

की बोर्ड सीखने की प्रविधि

इस अंक में 'रंग दे बसंती' फिल्म से 'लुका छिपी...' गाने का नोटेशन नीचे प्रस्तुत है। यह गाना मूल रूप से 'देश' राग पर आधारित है। लेकिन अंतरे में कुछ स्वर राग 'खमाज' से भी लिये गये हैं।

आरोह: स रे म प नि सं   अवरोह: सं नि ध, प म ग रे, प म ग, रे ग नि स   पकड़: रे म प नि, स रे नि ध प, म ग रे

जति: औडव   वादी: रे   संवादी: प

ग ग ग मा प म ग   ग ग ग मा   ग म ग रे रे ग रे स स रे गा   ग ग ग मा प म ग   ग ग ग मा   ग म ग रे रे ग रे स स रे गा

लुका छिपी   वहुत हुई   सामने आ जा ना...   कहाँ कहाँ   ढूँढ़ा तुझे   थक गई है अब तेरी माँ

स ग रे नि़ नि़ स   रे स म म म गा   स ग रे नि़ नि़ स   स रे ग प म म म ग रे स नि़ स

आ जा सांझ हुई   मुझे तेरी फिकर   धुंधुला गई   देख मेरी नजर आ जा ना ... (2)

म प नि सं रें सं नि सं सं सं   म प नि सं रें सं सं प ध मा...   ध ध म प सं ध प पा

क्या बताऊँ माँ कहाँ हूँ मैं   यहाँ उड़ने को मेरे   खुला आसमान है

म प नि नि सं रें सं नि सं प ध मा...   प प ध प म ग रे स रे

तेरे किस्सों जैसा भोला   सलोना जहाँ है यहाँ सपनों वाला

इस गाने के राग व स्वरों की जानकारी सी आर जी (रीफ्रैक्टरी) के सहायक महाप्रबंधक श्री रविदास एस गोने और नोटेशन विज्ञान इंजीनियरिंग कालेज की छात्रा सुश्री वी नंदिता ने दिया है।

ग ग ग मा प म ग   ग ग ग मा   ग म ग रे रे ग रे स स रे गा   ग ग ग मा प म ग   ग ग ग मा   ग म ग रे रे ग रे स स रे गा

मेरी पतंग   हो बेफिकर   उड़ रही है माँ   डोर कोई   लुटे नहीं   बीच से काटे न...

स ग रे नि़ नि़ स   रे स म म म गा   स ग रे नि़ नि़ स   स रे ग प म म म ग रे स नि़ स

आ जा सांझ हुई   मुझे तेरी फिकर   धुंधुला गई   देख मेरी नजर आ जा ना...

नि़ नि़ नि़ स ग रे स स प़ ध़ नि़ ध़ प़ा   ध़ प़ प़ प़ प़ प़ नि़ नि़ नि़ स

तेरी राह तके अखियाँ   जाने कैसा कैसा होये जिया (2)

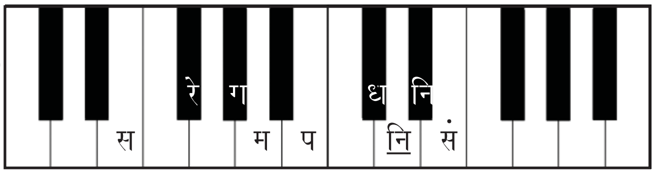

ग ग म प प ध प म...   प ध ध प म रे ग म पा

धीरे धीरे आंगन उतरे अंधेरा   मेरा दीप कहाँ

ग ग म प प ध प म...   प ध ध प म रे ग म पा   ग ग स स ग म ध प ग म रे स ग रे गा...

ढलके सूरज करे इशारा   चंदा तू है कहाँ   मेरे चंदा तू है कहाँ   (लुका छिपी)

स ग रे नि़ नि़ स   रे स म म म गा   स ग रे नि़ नि़ स   स रे ग प म म म ग रे स नि़ स

आ जा सांझ हुई   मुझे तेरी फिकर   धुंधुला गई   देख मेरी नजर आ जा ना... (2)

म प नि सं रें सं नि सं सं सं   ध ध ध नि नि सं सं प प प प पा...   प नि सं रें रें

कैसे तुझको दिखाऊँ यहाँ है क्या   मैं ने झरने से पानी माँ   तोड़के पिया है

ध ध ध नि नि सं सं प प प प पा...   प नि सं रें रें सं रें गं   गं गं रें मं गं रें सं नि नि सं नि ध पा

गुच्छा गुच्छा कई ख्वाबों का   उछलके छुआ है   छाया लिये भली धूप यहाँ है

गं गं रें मं गं रें सं नि नि नी   सं सं नि सं नि ध प म ग म प ध नि ध प   नि नि ध नि ध प म ग ग म प नि ध प

नया नया सा है रूप यहाँ   यहाँ सब कुछ है माँ फिर भी   लगे बिन तेरे मुझको अकेला

ग म प   म प ध   प ध नि ध नि सं नि ध प मा

ओ...

रे ग रे गा सा स स रे रे रे रे रे रे रे   रे ग रे गा सा स स प म प ग म ग रे   रे ग रे गा सा स सा स नि़ स पा म ग म ग रे

सं सं सं सं नि रें सं नि ध नि ध प म प ग म प   ध नि सं नि सं नि ध नि ध प म ग रे   रे ग रे गा सा स सा स नि़ स पा म ग म ग रे

रे ग रे ग रे गा रे गा रे स नि़ नि़ स रे रे रे ग रे ग मा प ग म ग रे   रे ग रे ग रे गा रे गा रें गा रे स नि़

नि़ स रे रे रे ग रे ग मा पा प म   प ध प म प प म प ध प म प प म प रें सं रें गं   रें मं गं गं रें रें सं गं रें रें सं सं

सं सं रें रें सं नि सं नि प ध प म   ग म प ध नि सं नि सं ध नि ध प ध प म प म ग म प ध नि स नि़ स

स ग रे नि़ नि़ स   रे स म म म गा   स ग रे नि़ नि़ स   स रे ग प म म म ग रे स नि़ स

आ जा सांझ हुई   मुझे तेरी फिकर   धुंधला गई   देख मेरी नजर आ जा न   (3)

शरद जोशी एवं उनका व्यक्तित्व व कृतित्व

- श्री ललन कुमार -

हिंदी साहित्य में शरद जोशी का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। वे एक मूर्धन्य व्यंग्यकार थे। वैसे तो उन्होंने साहित्य के कई विधाओं पर अपनी कलम चलाई। लेकिन सबसे अधिक प्रसिद्धि उन्हें व्यंग्य लेखन से मिली। व्यंग्य रचना में जोशी जी का कोई सानी नहीं था। उन्होंने बड़ी ही कम उम्र में साहित्य सेवा शुरू कर दी थी और अपनी लेखन विधा में शीघ्र ही एक स्थापित साहित्यकार बन गए। जोशी जी का जन्म **21** मई **1931** के दिन मध्य-प्रदेश के उज्जैन जिले में हुआ था।

पहले तो जोशी जी मध्य-प्रदेश सरकार के सूचना एवं प्रकाशन विभाग में काम कर रहे थे, लेकिन उनका मन नौकरी से अधिक लेखन में रमा हुआ था। अत: उन्होंने सरकारी नौकरी को छोड़ दिया और पूर्ण रूप से साहित्य को समर्पित हो गए। नौकरी छोड़ने के बाद अब उनकी जीविका का साधन लेखन ही बन गया। उनके लेख प्रसिद्ध अखबारों में छपते थे और आकाशवाणी से प्रसारित भी होते थे। इस सिलसिले में उन्हें आसपास के अन्य शहरों में भी जाना पड़ता। इंदौर प्रवास के दौरान ही इनकी मुलाकात इरफाना सिद्धकी से हुई। मुलाकात मित्रता में बदली और मित्रता धीरे-धीरे प्यार की सीढ़ी चढ़ गई और फिर शरद जोशी जी ने इरफाना सिद्धकी से शादी कर ली।

जोशी जी लगभग **20** वर्ष की आयु में ही नई दुनिया नामक अखबार से जुड़ चुके थे। उन्होंने **1951** से लेकर **1956** तक लगातार नई दुनिया के लिए व्यंग्य स्तंभ लिखा। नई दुनिया के तत्कालीन पाठक उनके व्यंग्य को पढ़ने के लिए उद्यत रहते थे, अर्थात पाठकों में उनके व्यंग्य की खूब धूम थी। उनके द्वारा लिखित व्यंग्य का कुछ अंश देखें, 'अभी-अभी एक ट्रक के नामकरण समारोह से लौटा हूँ। मेरे एक रिश्तेदार ने जिनका हमारे घर पर काफी दबदबा है, कुछ दिन हुए एक ट्रक खरीदा है। उसका नामकरण करने के लिए मुझे बुलाया गया। एक लड़का, जो अपने आप को बहुत बड़ा आर्टिस्ट मानता था, जिसका पैंट छोटा था, मगर बाल काफी लंबे थे, रंग और ब्रश लिए पहले से ही वहाँ बैठा था, जो नाम निकले वह ट्रक पर तुरंत लिख दे। मैं समय पर पहुँच गया, इसके लिए रिश्तेदार, जिनको मैं चाचाजी कहता हूँ, प्रसन्न थे। उनका कहना था कि नौ बजे बुलाया और कलाकार बारह बजे पहुँचे तो उसे समय पर मानो। कुछ बच्चों के नामकरण तथा कुछ कवियों के उपनाम-करण का सौभाग्य मुझे मिला है, पर उस अनुभव के आधार पर मैं ट्रक का नामकरण कैसे कर सकूँगा? यह घबराहट मुझे हो रही थी और मेरे पैर काँप रहे थे। पिछले पाँच दिनों से बाजार में ट्रकों के चारों ओर घूम-घूमकर अध्ययन कर रहा था कि इनके नाम क्या होते हैं? 'सड़क का राजा', 'हमराही', 'मार्ग ज्योति', 'बाजवहादुर', 'मुगले आजम', 'मंजिल की तमन्ना', 'फरहाद', 'हमसफर', 'स्पूतनिक', 'शेरे पंजाब' जैसे कई नाम देखे और नोट किए ताकि सनद रहे और वक्त पर काम आए।'

भारत की राजनीति और उससे जुड़े लोगों पर तो बहुतों ने लिखा है। लेकिन जोशी जी जिस तरह से राजनीतिक लोगों की आलोचना करते थे, वह काबिले तारीफ था। वे आलोचना करते थे, लेकिन उसमें ऐसा व्यंग्य का पुट डालते थे कि वह भद्दा और कड़वाहट से मुक्त होकर, हास्य और सरोकार की पूर्ति कर देता था। इसी प्रकार एक और उदाहरण देखें, 'नेता शब्द दो अक्षरों से बना है। 'ने' और 'ता'। इनमें से एक भी अक्षर कम हो, तो कोई नेता नहीं बन सकता। मगर हमारे शहर के एक नेता के साथ अजीब ट्रेजडी हो गई। एक दिन यह हुआ कि उनका 'ता' खो गया। इतने बड़े नेता और 'ता' गायब? उन्हें सेक्रेटरी ने बताया कि साहब आपका 'ता' नहीं मिल रहा है। आप सिर्फ 'ने' से काम चला रहे हैं। नेता बड़े परेशान। नेता का मतलब होता है, नेतृत्व करने की ताकत। ताकत चली गई सिर्फ नेतृत्व रह गया। 'ता' के साथ ताकत गई।

शरद जोशी पहले व्यंग्य नहीं लिखते थे। वे कविता लिखते थे। लेकिन देहरादून के एक कवि सम्मेलन में किसी ने उनकी कड़वी आलोचना कर दी। इससे खिन्न होकर वे कविता लिखना छोड़ दिया और व्यंग्यकार बन गए। जोशी के व्यंग्य में मनोविनोद, चुटीलापन और सामाजिक सरोकार की सटीक बुनावट होती थी। जोशी जी बाजार को देखकर नहीं लिखते थे। उनके व्यंग्य में सामाजिक सरोकार होते थे।

तालियाँ गई, जो 'ता' के कारण बजती थीं। नेता बहुत चीखे। पर जिसका 'ता' चला गया, उसका सुनता कौन है? खूब जाँच हुई, पर 'ता' नहीं मिला। नेता ने एक सेठ से कहा 'यार हमारा ता गायब है। अपने ताले में से ता हमें दे दो।' सेठ बोला, 'यह सच है कि मुझे 'ले' की जरूरत रहती है, क्योंकि 'दे' का तो काम नहीं पड़ता, मगर ताले का 'ता' चला जाएगा तो लेकर रखेंगे कहाँ? सब इन्कम टैक्स वाले ले जाएँगे।'

शरद जोशी जी की कहानियों पर आधारित कई धारावाहिक बने, लेकिन 'लापतागंज' और 'विक्रम बेताल' नामक धारावाहिक बहुत प्रचलित और दर्शकों द्वारा पसंद किए गए। ये जो है जिंदगी, सिहांसन बत्तीसी, वाह जनाब, देवी जी, प्याले में तूफान, दाने अनार के, ये दुनिया गजब की आदि धारावाहिक भी शरद जोशी द्वारा लिखे गए हैं। उनकी व्यंग्य रचनाओं में सामाजिक सरोकार तो होता ही था, साथ ही उनके पात्र भी जन-सामान्य का प्रतिनिधित्व करते हुए प्राय: मध्यम वर्ग के ही होते थे। उनके प्रमुख व्यंग्य संग्रहों में परिक्रमा, किसी बहाने, तिलिस्मी, रहा किनारे बैठ, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, दूसरी सतह, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, यथासंभव, जीप पर सवार इल्लियां आदि।

जोशी जी ने अपनी लेखनी से फिल्म लेखन के क्षेत्र में भी योगदान दिया। उन्होंने क्षितिज, छोटी सी बात, सांच को आंच नहीं, गोधूलि, उत्सव आदि फिल्मों के लिए पटकथा लेखन भी किया।

शरद जोशी जी को ख्याति दिलाने में अखबारों ने प्रमुख भूमिका निभाई। उनकी व्यंग्य रचनाएँ कादंबरी, ज्ञानोदय, रविवार, साप्ताहिक हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स जैसी पत्र-पत्रिकाओं में दीर्घ काल तक छपती रहीं। नवभारत टाइम्स के प्रतिदिन स्तंभ में तो उनकी रचनाएँ लगातार सात साल तक छपती रहीं।

जोशी जी की साहित्यिक सफलता को देखते हुए भारत सरकार ने **1990** में उन्हें 'पद्मश्री' पुरस्कार से विभूषित किया। इसके बाद मध्य-प्रदेश की सरकार ने उनके नाम पर साहित्य के लिए दिये जाने वाले एक पुरस्कार की घोषणा की, जिससे हर साल किसी साहित्यकार को सम्मानित किया जाता है।

समय अपनी गति से चलता रहा, शरद जोशी साहित्य की ऊँचाइयों पर चढ़ते रहे, लेकिन अंतत: समय ने उन्हें पछाड़ दिया और **5** सितंबर **1991** को मुंबई में उनका निधन हो गया। लगभग **71** वर्षो के अपने जीवनकाल में शरद जोशी ने हिंदी साहित्य को खूब सजाया और सँवारा।

शरद जोशी अपने समय के अनूठे व्यंग्यकार थे। उन्होंने अपने समय की सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक विसंगतियों को पैनी निगाह से देखा और उस विषय पर रचना की। उनकी रचनाओं में गजब का पैनापन होता था। बड़ी ही सजीवता से वे अपनी बात कह देते थे। जैसे 'अतिथि तुम कब जाओगे' में उनकी प्रस्तुति निपुणता देखने लायक है।

'तुम्हारे आने के चौथे दिन', बार-बार यह प्रश्न मेरे मन में उमड़ रहा है, तुम कब जाओगे अतिथि? तुम कब घर से निकलोगे मेरे मेहमान।

तुम जिस सोफे पर टांग पसारे बैठे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर लगा है, जिसकी फड़फड़ाती तारीखें मैं तुम्हें रोज दिखाकर बदल रहा हूँ। यह मेहमाननवाजी का चौथा दिन है, मगर तुम्हारे जाने की कोई संभावना नजर नहीं आती। लाखों मील लंबी यात्रा कर एस्ट्रॉनॉट भी चांद पर इतने दिन नहीं रुके, जितने तुम रुके। उन्होंने भी चांद की इतनी मिट्टी नहीं खोदे, जितनी तुम मेरी खोद चुके हो। क्या तुम्हें अपना घर याद नहीं आता? क्या तुम्हें तुम्हारी मिट्टी नहीं पुकारती?

जिस दिन तुम आए थे, कहीं अंदर ही अंदर मेरा बटुआ कांप उठा था। फिर भी मैं मुस्काराता हुआ उठा और तुम्हारे गले मिला। मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते कहा। तुम्हारी शान में ओ मेहमान, हमने दोपहर के भोजन को लंच में बदला और रात के भोजन को डिनर में। हमने तुम्हारे लिए सलाद कटवाया, रायता बनवाया और मिठाइयाँ मंगवाई। इस उम्मीद में कि दूसरे दिन शानदार मेहमाननवाजी की छाप लिए तुम रेल के डिब्बे में बैठ जाओगे। लेकिन आज चौथा दिन है और तुम यहीं हो। आज हम उपवास करेंगे और तुम यहीं हो। तुम्हारी उपस्थिति यूँ रबर की तरह खिंचेगी, हमने कभी सोचा न था।'

शरद जोशी पहले व्यंग्य नहीं लिखते थे। वे कविता लिखते थे। लेकिन देहरादून के एक कवि सम्मेलन में किसी ने उनकी कड़वी आलोचना करते हुए कह दिया कि 'यार! जोशी तुम बिल्कुल भाड़ दिख रहे हो।' इससे खिन्न होकर वे कविता लिखना छोड़ दिया और व्यंग्यकार बन गए। जोशी के व्यंग्य में मनोविनोद, चुटीलापन और सामाजिक सरोकार की सटीक बुनावट होती थी। जोशी जी बाजार को देखकर नहीं लिखते थे। उनके व्यंग्य में सामाजिक सरोकार होते थे।

उनके लिखने के उद्देश्य के संबंध में वे खुद लिखते हैं, 'लिखना मेरे लिए जीवन की तरकीब है। इतना लिख लेने के बाद अपने लिखे को देख मैं सिर्फ यहीं कह पाता हूँ कि चलो, इतने बरस जी लिया। यह न होता तो इसका क्या विकल्प होता, अब सोचना कठिन है। लेखन मेरा निजी उद्देश्य है।'

- सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम - **530032**
मोबाइल: **09989317329**

आवारा बच्चे

- डॉ मंजु शर्मा -

पीपल वाली गली का सबसे खूबसूरत घर है 'मंगलायतन'। भरा-पूरा संयुक्त परिवार जिसमें आये दिन मांगलिक कार्य, पूजा, विवाह, वर्षगांठ आदि होते रहते हैं और भोज के इन आयोजनों की जूठन जो गली में फेंकी जाती है, उस पर कई आश्रितों के पेट पलते हैं। रौनक लगी ही रहती है। मंगलायतन को छोड़कर बाकी गली में मध्यमवर्गीय परिवारों की ही बसावट है। मंगलायतन के ठीक सामने गंगा सदन है। गंगा सदन एक छोटा सा घर, जिसे कभी गृहस्वामी ने अपनी पत्नी गंगा के नाम से बनवाया था। अब गंगा भी बूढ़ी हो गई, गृहस्वामी के गुजर जाने के बाद घर की बाहरी दीवारें जर्जर हो गई। कहीं-कहीं से सीलन के कारण उखड़ा प्लास्टर और भीतर ईंटों का कंकाल, घर की अवस्था को खुद ही बयान कर रहे हैं। यूँ तो गंगा का बेटा-बहू, पोते-पोती कभी-कभार आते रहते हैं, पर अक्सर यहाँ वीरानी छायी रहती है। गंगा अपनी खिड़की से मंगलायतन की रौनक को देख-देख दिन व्यतीत करती है।

इन आश्रितों में आवारा घूमते जानवर जैसे गधे, गाय, कुत्ते, सुअर, साँड भी हैं तो मनुष्य योनि के दो प्राणी भी शामिल हैं। सात वर्ष की लड़की और लगभग पाँच वर्ष का लड़का। दोनों बहन-भाई रोजाना गली में आते और कचरा बीनने के साथ-साथ घर के बाहर कोने में फेंके पत्तल और दोनों में पड़ी जूठन को भी उदरस्थ कर लेते। पत्तलों में कभी जलेबी का टुकड़ा, कहीं पूड़ी, कचौड़ी या बर्फी के अवशेष होते, कभी अधखाए पकवानों की मिली-जुली संगत से तैयार एक नया भोजन का अवतार मिलता, बच्चे उस पर झपट पड़ते। कई बार तो पत्तलों में पूरा का पूरा गुलाब जामुन, कभी दोनों में खीर, रसमलाई की गाढ़ी परतें चिपकी देख दोनों उछल पड़ते। उन्हें यह कभी समझ नहीं आता कि जिन्हें भूख ही नहीं, जूठन छोड़ देते हैं? खैर, भूखे और भरे पेट का दर्शन अलग-अलग होता है। बच्चे भूखे, ऊपर से यहाँ पर भी इनके कई प्रतियोगी आवारा पशु पैनी निगाहों से भोजन पर पिल पड़ते थे। कई बार गायों, गधों और कुत्तों से संघर्ष करके दोनों बहन-भाई बड़ी मुश्किल से बचे-खुचे पकवानों का स्वाद चखने में सफल हो जाते थे। कई बार तो जमीनी संघर्ष में जीत हासिल कर मजे से किसी घर की सूनी सीढ़ी पर जा चढ़ते और जीत का जश्न मना रहे होते तो उन पर हवाई हमले हो जाते, कोई चील-कौआ झपट पड़ता और हाथ का कौर छीन ले जाता।

बच्चे अक्सर टूटी चप्पलें, टिन के डिब्बे, थैलियाँ, प्लास्टिक, लोहा, अगड़म-सगड़म जो मिलता एक कट्टे में डालते रहते। कभी भूल से भी गंगा सदन की टूटी देहरी पर बैठ जाते, तो अंदर से खड़ूस और लड़ाकी बुढ़िया आती और बच्चों को हड़का देती। बच्चों को यह नहीं समझ में आता कि पशु और गरीब को दूर से देखते ही लोग क्यों हड़काने लग जाते हैं? कभी-कभी तो गली में घुसते ही गली के लोग उन्हें भगा देते। रोजाना दुत्कार मिलने पर भी बच्चे और पशु नियमित जूठन पर झपटने पहुँच ही जाते। टूटी-फूटी चीज इकट्ठी करते बहन-भाई को कई बार लोग झांपट भी रसीद कर देते। कभी किसी की कोई चीज खो जाती तो उनका फटा-कट्टा खाली करवाया जाता, फटे कपड़ों की तलाशी ली जाती, जिन कपड़ों के झरोखों से गरीब तन झांककर गवाही देता, उनके बेकसूर होने की। पर बच्चे तो बच्चे थे फिर भी रोज आते कचरा से अवरुद्ध हो जाती और नाली का पानी नदी के रूप में सड़क पर बाढ़ ला देता, तब घर का मालिक इन दोनों आवारा बच्चों को गलियों से तलाश लाता। नाली साफ करवाता और बदले में मालकिन दो सूखी रोटियों पर अचार की फांक या कोई सूखी मिठाई, बिस्कुट बच्चों के हाथ पर रख देती।

बच्चे उस गली में रोजाना रमे रहते, दो-चार गलियों से मिले सामान का पिटारा भी उसी गली में लाकर बिछाते, गली के पीपल गट्टे पर बैठकर दिन-भर की मेहनत का हिसाब लगाते, टूटे सामान को खुशी से देखते, मुआयना करते। इधर बुढ़िया के बेटे-बहू साल भर से नहीं आए। चौके बर्तन का काम खतम कर गली की हलचल देखकर ही वह जीवन व्यतीत करती है। यूँ तो बुढ़िया बच्चों को अपने घर के पास फटकने नहीं देती थी, पर आजकल उसका व्यवहार बदला-बदला लगने लगा। अब वह बाहर निकलती तो बच्चों को उसकी गड्ढे में धँसी कीच भरी आँखे ढूँढ़ने लगतीं। अब कई बार बच्चे पिटारा लेकर उसकी टूटी देहरी पर आ बैठते, पर वह कुछ नहीं

> धक्के खाते-खाते उनकी सारी समझ भोंथरी हो गई। कितनी तपस्या के बाद साधक जिस अवस्था में पहुँचता है, 'न सुख है, न दु:ख है' उस अवस्था में बच्चे कबके पहुँच चुके। उनके सामने न भूत था, न भविष्य, बस थाली भरा वर्तमान था, जो वे पूरा आनंद से भोग रहे थे। बुढ़िया को आज होली बहुत अच्छी लगी। क्या हुआ, जो उसके बच्चे नहीं आए, ये भी तो बच्चे ही हैं, उसके न सही किसी के तो हैं। अकेलेपन ने अपने-पराये का भेद मिटा दिया। बुढ़िया की आँखों के गड्ढों से जलधारा बहने लगी। मन के आँगन का सारा कूड़ा-करकट धुलकर स्वच्छ हो गया।

कहती।

आज बच्चे अपना पिटारा लेकर बुढ़िया की देहरी तक पहुँचे तो बुढ़िया बाहर निकली और पुकारा, 'ऐ लड़के सुन', सुनते ही दोनों भागने लगे। बुढ़िया फिर चिल्लाई, 'अरे सुनो तो भागो मत, मैं कुछ दे रही हूँ तुम्हें!' सहमे से दूर खड़े बच्चों ने बुढ़िया के स्वर से अंदाजा लगाया कि कोई खतरा नहीं है। बुढ़िया की आँखों के गड्ढ़ों में करुणा का जल देख बच्चों का भय दूर हुआ। बुढ़िया अंदर से कुछ पूड़ियाँ और हलवा लेकर आई और अखबार में लपेट कर उन्हें दे दिया। एकदम ताजा गर्म भोजन देख बच्चों की आँखों में चमक दौड़ गई, मानो कई घण्टों से गुल बिजली एकाएक जल उठे और घर को रोशन कर दे। बच्चों की आँखों में खुशी मिश्रित प्रश्न तैर गए। बुढ़िया बोली, 'आज बरसी है तुम्हारे दादा की।' बच्चों को कुछ समझ नहीं आता देख फिर बोली, 'मैं तुम्हारी दादी जैसी ही तो हूँ ना?' अब बच्चों का ध्यान बड़े-बड़े कौर मुँह में डालने में अधिक था। उन्हें ज्यादा रुचि नहीं थी कि कौन दादा है, कौन दादी। बुढ़िया करुणा में भीगी उन बच्चों में अपने पोते-पोती ढूँढ़ रही थी।

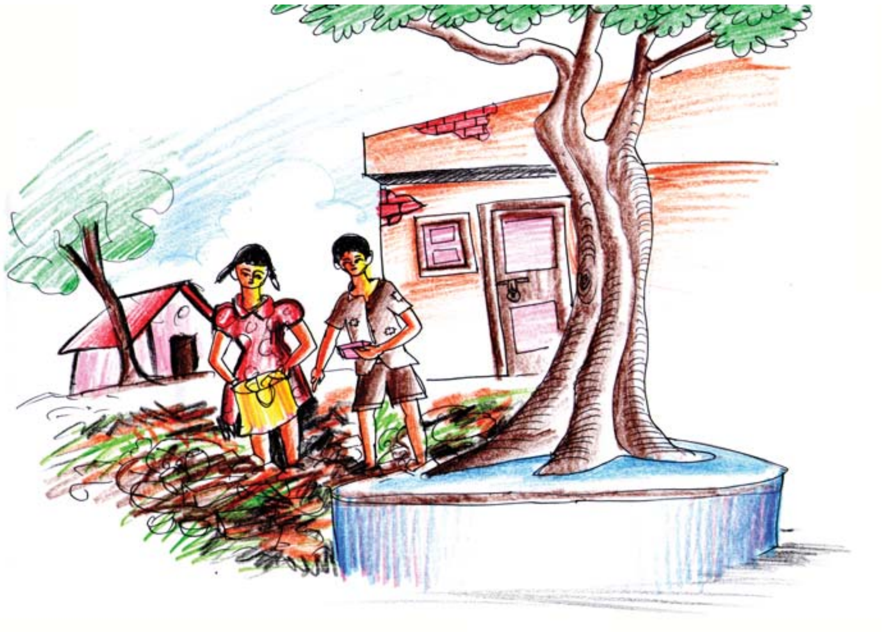

खा-पीकर बच्चे अब धींगा मस्ती करने लगे। लड़की की फटी मैली फ्राक, उलझे रस्सी से बाल न जाने कितने दिनों से नहीं नहाई, देह पर मैल की परतें जमी थीं। पर भरे पेट आँखें कांच के कंचों की तरह इधर-उधर उछलने लगीं। लड़का गोरा था, पर मुँह पर चल रहे मैल के रेले, फटी निकर, बढ़े नाखून, टूटे बटन वाली शर्ट पर भरते ही राजा बन गया। दोनों भाई-बहन आवारा मस्त जिंदगी में केवल आज को ही जी रहे थे, न बीते कल की स्मृतियाँ थीं, न आने वाले भविष्य की खोज खबर। जो कुछ था, वो आज ही था। भर पेट गरम हलवा पूड़ी। बुढ़िया भी कई दिन बाद खुश दिखाई दी, तृप्त भाव से घर में चली गई। अब धीरे-धीरे एक अदृश्य डोर बुढ़िया और बच्चों को बाँधने लगी। रोज वह कुछ न कुछ खाने को उन्हें देने लगी।

मार्च में मस्त फागुनी हवा चल रही थी, गली में खड़े पीपल के पत्ते झर-झर कर इधर-उधर बिखरे थे। गली सूनी लग रही थी, आज बुढ़िया को बच्चे नजर नहीं आए। दिनभर वह अंदर-बाहर के चक्कर काटती रही। कल होली है और वह उदास है, बेटे-बहू नहीं आ रहे, बच्चों की परीक्षा है। इसलिए आज बेटे का फोन आने के बाद से वह उदास है। आज कुछ पकाया भी नहीं। गली में कई बार झांका, बच्चे भी नजर नहीं आए। आज बुढ़िया खाट पर जा पड़ी। थोड़ी देर में दरवाजे के बाहर कुछ आहट पाकर वह उठी, देखा बच्चे कचरा बीनने में मशगूल थे। सहसा बुढ़िया भीतर गई, सोचने लगी 'क्या दूँ बच्चों को, आज तो भोजन भी नहीं बना', इधर-उधर डिब्बें टटोल कर दो गुड़ की डलियाँ और थोड़े भुने चने ले कर गली में आई। बच्चों को बुलाया और कागज के टुकड़े में लपेटा चबेना उन्हें पकड़ा दिया। मीठी झिड़की देकर पूछा 'कहाँ गये थे रे?' बच्चे 'चुप'।

उनको इस इंतजार की कहाँ आदत थी, वो तो यूँ ही आवारा हवा के झोंके की तरह इस गली, उस गली फिरते रहते हैं। उनकी कोई राह देखे, उनका ध्यान रखे, ये बड़ी कीमती चीज़ें थीं उनके लिए और इस तीमारदारी का अनुभव उन्हें था भी नहीं। बच्चे गुड़-चना लेकर चबाने लगे, फिर कचरा बीनने में लग गए।

बुढ़िया ने सांझा का दिया-बाती किया और बेसन भूनने बैठ गई। क्या हुआ जो अकेली है, शगुन के लिए त्योहार पर कुछ तो बनाना ही होगा, वरना अपशगुन होगा, अपने बेटे-बहू और पोते-पोती की सलामती के लिए त्योहार का दिन सूना नहीं रहने देगी वह। रात देर तक मठरियाँ और मिठाई बनाती रही। सुबह बड़े चाव से पूड़ियाँ तली, सब्जी बनाई। खुशी-खुशी पूजा पाठ किया। अब वह अकेली कहाँ है? कचरा बीनने वाले दोनों बच्चों की तस्वीर उसकी आँखों के आगे तैर गई। सुबह से रंग खेलते युवाओं की टोलियाँ गीत गाती गली-गली घूम रही थी। बुढ़िया की आँखें खिड़की के बाहर जा टँगी। आज मंगलायतन में बड़ी धूम-धाम है। बाहर आँगन में थालियों में रंगों की ढेरियाँ एक लंबी कतार में रखी हुई हैं, दूसरी तरफ एक लंबी कतार है तरह-तरह की मिठाइयों नमकीन से सजे थालों की। बर्फी, गुझिया, कचौड़ी, फल, मेवे सभी कुछ तो है। घर में आने-जाने वालों का तांता

लगा था। भीतर से नाश्ता-पानी खा पीकर सब गली में इकट्ठा हो गए। अब उड़ने लगी गुलाल, अबीर, भर-भर पिचकारियाँ एक-दूसरे पर रंग लगाने में घर के सारे लोग और मेहमान व्यस्त होने लगे। बुढ़िया भी प्रसन्नता से पड़ोसियों की हो-हुल्लड़ देख खुश हो रही थी। इसी मस्तों की टोली में कचरा बीनने वाले दोनों बच्चे भी शरीक हो गए। त्योहार का दिन तो अमीर-गरीब सभी पर आता है। सड़क पर बिखरे रंग को उठा-उठा कर दोनों बहन-भाई 'होली है, होली है' कहकर एक-दूसरे को रंगने लगे। मंगलायतन की रौनक देख मालकिन इठलाती बार-बार सबको खाने का न्योता दे रही थी। इसी रेल-पेल में बच्चे मंगलायतन के पकवानों की पंक्ति के पास जा खड़े हुए। रंग-बिरंगी मिठाइयाँ देख लड़की के मुँह में पानी आ गया। लड़के ने अपनी बहन का हाथ पकड़ा और उसे रंग भरे थाल के पास ले आया। दोनों ने गुलाल की मुट्ठी भरी ही थी कि मालकिन ने जोर से झकझोर कर रंग छुड़वाया और गुस्से व घृणा में भरकर बोली 'बेशर्मो! यहाँ किससे पूछकर घुसे, चलो बाहर भिखमंगे कहीं के!' घर के जवानों ने दोनों आवारा बच्चों को बाहर उठाकर फेंक दिया।

दोनों फिर गली में आ पड़े। अब सड़क पर बिखरे रंगों और छूटे-फूटे गुब्बारों से खेलने लगे। दोनों जमीन पर लोट-लोट कर एक-दूसरे पर रंग मलते रहे। क्षणभर पहले हुई दुर्गति का कोई असर नहीं था। लड़के के कान जरूर थोड़े झनझना रहे थे, पर वो अपना मजा कम नहीं करना चाहता था। यह महसूस करनेवाला भाव भी अमीरी से ही जुड़ा है। धक्के खाते-खाते उनकी सारी समझ भोंथरी हो गई। कितनी तपस्या के बाद साधक जिस अवस्था में पहुँचता है, 'न सुख है, न दु:ख है' उस अवस्था में बच्चे कबके पहुँच चुके।

खिड़की पर टंगी बुढ़िया का मन पिघल आया, वह कब से बच्चों की राह देख रही थी, झटपट उठी और इशारे से बच्चों को भीतर बुलाया। आँगन में दोनों को बिठाकर थाली भर मिठाई, पूड़ियाँ और सब्जी परोस दी। बच्चों को मीठी झिड़की देते हुए बोली, 'काहे को गए सामने वालों के घर, अब मत जाना बाबू, लगी क्या? तुम्हें जोर से मारा?' बच्चे खाने पर पिल पड़े। पिछली दुत्कार का उन पर कोई असर नहीं था। बचपन से ही लात-फटकार खाते-खाते अब उन पर असर नहीं हो रहा था। बुढ़िया ने फिर पूछा, 'तुम्हें चोट लगी?'

दोनों ने 'न' में गर्दन हिला दी। उनके सामने न भूत था, न भविष्य, बस थाली भरा वर्तमान था, जो वे पूरा आनंद से भोग रहे थे। बुढ़िया को आज होली बहुत अच्छी लगी। क्या हुआ, जो उसके बच्चे नहीं आए, ये भी तो बच्चे ही हैं, उसके न सही किसी के तो हैं। अकेलेपन ने अपने-पराये का भेद मिटा दिया। बुढ़िया की आँखों के गड्ढ़ों से जलधारा बहने लगी। मन के आँगन का सारा कूड़ा-करकट धुलकर स्वच्छ हो गया।

- विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
राममनोहर लोहिया महाविद्यालय
चूरू (राजस्थान)
manjudinesh.8@gmail.com

गजल

- डॉ वीरोत्तमा पातर 'सरगम'

1.
बर्फ जैसी पिघल रही हूँ मैं
फिर भी दिन-रात चल रही हूँ मैं
मैंने माँगी थी धूप फागुन की
क्यूँ दिसंबर में जल रही हूँ मैं
मुस्कुराहट सजा के होंठों पर
खुद को हर आन छल रही हूँ मैं
जिंदगानी है किस कदर कड़वी
जहर जैसे निगल रही हूँ मैं
इतने सुंदर थे पल लड़कपन के
आज तलक हथ मल रही हूँ मैं
वो तो साया है ढलनेवाला
जिसकी खातिर मचल रही हूँ मैं
कोई धोखा है जिंदगी 'सरगम'
जिसकी गोदी में पल रही हूँ मैं

2.
रंग लिए हमजोली आई
सावन में क्या होली आई।
तन्हाई में बरसों फूँकी
तब कोयल सी बोली आई।
तुम बिन सूखी ऋतु बीती अब
जामुन और निबोली आई।
चंचल ऋतु की दुल्हन सँवरी
आहा बसंती डोली आई।
वंशी की धुन पर सखियों की
राधा लेकर टोली आई।
बरसों प्रीत के रंग में डूबी
'सरगम' तब रंगोली आई।।

- सहायक निदेशक
हिन्दी शिक्षण योजना, विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9581341715

लगा वर्दी में दाग ....

- श्री सुजीत आर कर -

हुआ यूँ कि मेरे दूर के एक चाचा के घर चोरी हो गयी। चोर भी ऐसा था कि उसने रातभर खाँसते रहनेवाले चाचा की परवाह तक नहीं की, वल्कि उन्हें दो-चार तमाचे जड़ते हुए चला गया। मैंने जब इसका कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि 'चोर जेवर और कीमती सामानों के साथ-साथ मेरी खाँसी की दवा भी लेता जा रहा था। पास में खड़ी चाची सब सुन रही थी। उन्हें अपने बीमार मरद पर भयंकर गुस्सा आ रहा था। मैं अपनी चाची के बारे में कुछ बताना चाहूँगा। वे चाचा से लगभग पंद्रह साल छोटी हैं और बहुत खूबसूरत हैं। उनके सामने चाचा 'शोले के सांभा' लगते थे। चाची को चाचा फूटी आँख नहीं सुहाते थे।

बीमार चाचा से अचानक सख्त लहजे में बोली, 'तुमने चोर का पांव ही क्यों छोड़ा? दो-चार घूँसा और खा लेते तो कौन सी आफत आ जाती?' यह सुनकर चाचा तुनक गये और अपनी कंकाल देह के साथ एक झटके में खड़े हो गये, 'अरी भाग्यवान, वह क्या मेरा ससुर था, जो उसके पाँव के नीचे पड़ा रहता?'

'अब क्या करना है यह तो बताओ?' दोनों के बीच मैं पिस रहा था। 'मैं यहाँ कुछ नहीं कहूँगी, अब जो भी कहना है, थाने जाकर कहूँगी', चाची ने तमकते हुए कहा। इसपर चाचा ने कहा, 'अरे भाग्यवान अब घर तो लुट ही गया है, थाने जाकर क्या अपने आप को लुटाओगी?' मैंने भी मोर्चा संभाला, 'अरे चाची, छोड़िए जेवर को। चाचा ठीक कह रहे हैं, थाने में पुलिसवाले जेवर की कम, लेकिन आपकी खबर ज्यादा लेंगे।'

चाची पर इसका असर कुछ भी नहीं हुआ। वे अकेली थाने चली गयीं। चाचा ने अपना माथा पीट लिया। जेवर गया तो गया, अब हाथ से पत्नी भी जाएगी। न जाने पुलिसवाले इसके साथ कैसा बर्ताव करेंगे? अब चाचा ने पुलिसवालों को कोसना शुरु कर दिया। 'स्साले लूले हो जायें। कमबख्त रड़वा हो जायें। उनकी वर्दी में दाग लगे, हमेशा के लिए लाईन हाजिर हो जायें और न जाने क्या-क्या?' बेचारे चाचा बीमारी से एकदम पीले पड़ गए थे, लेकिन पुलिस वालों को गालियाँ देते समय लाल हो रहे थे। 'अरे, यह खड़े-खड़े मेरा मुँह क्या देख रहा है? जा अपनी चाची को बचा।' चाचा मेरे पर बिगड़ उठे। मैं भागा-भागा थाने पहुँचा।

'सर, मेरी चाची आयी है?' तम्बाकू फाँकते हुए एक सिपाही से मैंने पूछा। 'अरे मेरे राजा, जब यहाँ इतने चाचा हैं तो कोई न कोई चाची टकरायेगी ही। जरा अपनी चाची की हुलिया तो बता भतीजे?' इतना रंगीन मिजाज पुलिसवाले को मैंने आज तक नहीं देखा। चाचा ठीक ही कह रहे थे कि यहाँ चाची का अकेले आना ठीक नहीं था। 'जी... वह गोरी सी और खूबसूरत भी हैं। थोड़ी भौहें चढ़ाई रहती हैं और नाजुक सी हैं।' 'तू सीधे टी.आई. के पास चला जा। ऐसे सामानों को वही डील करते हैं। तेरी चाची वहाँ जरूर मिल जायेगी। और सुन...? दरवाजा खटखटा लेना फिर अंदर जाना।'

मैं टी.आई. के सामने पहुँचा। टी.आई. का कक्ष खुला दिखा। चाची वहां बैठी थीं और रो रोकर अपना दुखड़ा सुना रही थीं। टी.आई. अपने हाथ में उनका हाथ लेकर उसे सहला रहा था और सारे गहने दिला देने हेतु सांत्वना भी दे रहा था। मैंने कहा, 'सर जी, प्रणाम...।' 'कौन है बे तू। यहाँ तुझे किसने भेजा। चल भाग जा यहाँ से।' मुझे वह ऐसे लताड़ने लगा जैसे मैं कोई खजला देशी कुत्ता हूँ। 'ऐ जी, ये हमारे भतीजे हैं जी।' चाची ऐसे शरमा के कह रही थीं, जैसे वह टी.आई. सचमुच में मेरा अपना चाचा हो। 'अब तू यहाँ क्यों खड़ा है। तेरी चाची से अभी कुछ पूछताछ करनी है।' खाकी वाले को मेरा वहाँ बैठना जरा भी नहीं भा रहा था। मैं भी कोई कम ढीठ नहीं था। मैं जब आया हूँ, तो चाची को लेकर ही जाऊँगा चाहे कुछ भी हो। 'सर, चाची से जो पूछना है जल्दी पूछ लीजिए, क्योंकि घर में चाचा की जान हलक में रूकी हुई है। वे कह रहे थे कि चाची के हाथ से गंगाजल पिऊँगा।' 'अरे नाशपीटे, क्या कह रहा है तू?' चाची, एकाएक तमतमाकर खड़ी हो गयीं और मुझे भला-बुरा कहने लगीं। मैं सब कुछ सुनने को तैयार था, बशर्ते चाची यहाँ से शीघ्र निकलें तो सही। मैंने जैसे ही चाची का हाथ पकड़कर उन्हें उठने को कहा, वैसे ही वर्दीवाले ने मेरे हाथ पर डंडा जमा दिया।

'अबे, दूर रहकर बात कर। मैं तुम जैसों को बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। मेरा बीस साल का तजुर्बा है, कोई घास नहीं छीले हैं।' वह बके जा रहा था और चाची उसके सामने इठलाए जा रही थीं। 'ऐ जी, ये हमारे भतीजे हैं जी।' वहाँ से किसी तरह मैं चाची को लेकर घर आया और चाचा के हवाले किया और खुद मोहल्ले के नंगे-लुच्चे, आवारा लड़कों से मिलने चला गया, क्योंकि मेरे मन में पुलिस वाले से बदला लेने की हलचल मची हुई थी।

लगभग एक घंटे बाद पुलिस की गाड़ी चाचा के दरवाजे के सामने आकर रुकी। उस गाड़ी से वही पुलिस वाला और साथ में एक आदमी को लेकर उतरा। 'शांति, तेरा पति अलविदा हो गया है कि अभी भी वह हैं?' चाची ने सीधा सवाल दागा, 'आप मेरा जेवर लाए कि नहीं? और ये आदमी कौन है?' इसपर वर्दी वाले ने खीसें निपोरते हुए कहा, 'अरे शांति वर्दी पर दाग नहीं लगने दूँगा। बस अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखना।'

- दरोगापारा, रायगढ़ (छत्तीसगढ़)
मोबाइल: +91 9424181509

वातानुकूलन प्रणाली विभाग (ए सी एस)

इस्पात संयंत्र, विद्युत संयंत्र, ऑयल रिफाइनरी जैसे भारी उद्योगों के लिए वातानुकूलन व रेफ्रिजरेशन प्रणाली बहुत ही महत्वपूर्ण है। स्वचालन, कंप्यूटरीकरण आदि में वृद्धि के अनुरूप वातानुकूलन संबंधी आवश्यकताएँ भी दिन-व-दिन बढ़ रही हैं। संयंत्र के प्रभावी प्रचालन हेतु डिजाइन के अनुरूप तापमान, नमी व वायु की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए वातानुकूलन की अत्यंत आवश्यकता है।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के वातानुकूलन प्रणाली विभाग द्वारा पर्यावरण की स्थिति के अनुकूल विभिन्न वातानुकूलन उपकरणों का निम्नलिखित उपयोगों के आधार पर अनुरक्षण किया जाता है।

- कोक ओवेन बैटरियों (डोर एक्स्ट्रैक्टर कार, चार्जिंग कार, पुशर कार, लोको कार) की चलती मशीनों, भारी तप्त धातु क्रेन, द्रव इस्पात प्रहस्तन क्रेन, ब्लूम प्रहस्तन क्रेन, टंडिश प्रहस्तन आदि के लिए संचालित उच्च परिवेशी वातानुकूलन इकाइयाँ।
- विद्युतीय नियंत्रण कक्ष, आई बी एम कंप्यूटर केंद्र, पी एल सी कक्ष आदि में शीतलित जल के माध्यम से संचालित वायु प्रहस्तन इकाइयाँ।
- नमी को नियंत्रित करते हुए वातानुकूलन, एम बी यू (मुख्य बर्न यूनिट), ऑपरेशन थिएटर, प्रयोगशाला आदि।
- सम्मेलन कक्षों व प्रेक्षागृहों के लिए आवश्यक वातानुकूलन प्रणाली।
- पल्पिट ऑपरेटर, सम्मेलन कक्ष, नियंत्रण कक्ष आदि के लिए शीतलित जल की उपलब्धता के आधार पर जल-शीतलन, वायु शीतलन कंडेंसर युक्त 5.0 टी आर, 7.5 टी आर, 10 टी आर वातानुकूलन पैकेज।
- पैनल वातानुकूलन मशीनों द्वारा सी एन सी खराद मशीनों की पी एल सी पैनलों का शीतलन किया जाता है। साथ ही ऑयल चिल्लरों के माध्यम से सी एन सी खराद स्पिंडल ऑयल, बेयरिंग्स के भंडारण हेतु -80^0 सेंटीग्रेड पर प्रचालित डीप फ्रीजर का अनुरक्षण किया जाता है।
- इसके अलावा पूरे संयंत्र में लगे हुए विभिन्न प्रकार के वातानुकूलन मशीनों, जल शीतलन मशीनों का अनुरक्षण किया जाता है।

विभाग की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण

संगठन के वातानुकूलन विभाग द्वारा निम्नलिखित वातानुकूलन इकाइयों का अनुरक्षण किया जाता है:

- संयंत्र में वायु प्रहस्तन इकाई, पैकेज ए.सी., क्रेन ए.सी., विंडो ए.सी., स्प्लिट ए.सी., जल शीतलक, पैनल/पेंडेंट ए.सी., ऑयल चिल्लर, डीप फ्रीजर, आर एम एच पी व सिंटर संयंत्र के यार्ड मशीन केबिन आदि जैसी विभिन्न वातानुकूलन व रिफ्रिजरेशन इकाइयाँ।
- संयंत्र के बाहर एवं उक्कुनगरम, अर्थात मुख्य प्रशासनिक भवन, वी एस जी एच, उक्कुनगरम क्लब, स्टील क्लब, उक्कु हाऊस, तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान के प्रेक्षागृह, टाऊनशिप दूरभाष केंद्र, गुरजाडा कलाक्षेत्रम, हिल टॉप अतिथि गृह, तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान के पुस्तकालय एवं प्रबंधन विकास केंद्र की विभिन्न केंद्रीय वातानुकूलन प्रणालियों व पैकेज वातानुकूलन प्रणालियों का संचालन तथा अनुरक्षण।

अनुभाग क्षेत्र	संचालन क्षेत्र
सी ओ व सी सी पी	सी ओ व सी सी पी एवं आर एम एच पी की वातानुकूलन इकाइयों का अनुरक्षण
सिंटर संयंत्र	सिंटर संयंत्र, धमन भट्ठी, तापीय विद्युत संयंत्र
इस्पात गलन शाला	इस्पात गलन शाला व वायु पृथक्कीकरण संयंत्र
सी आर एम पी	सी आर एम पी, केंद्रीय भंडार, ऊर्जा व दूरसंचार, केंद्रीय कंप्यूटर सेंटर, कार्य पालक निदेशक (संकर्म) का सम्मेलन कक्ष, वेतन अनुभाग आदि
एल एम एम एम	एल एम एम एम व एम आर एस
वॉयर रॉड मिल	वॉयर रॉड मिल, एम एम एस एम व रोल शॉप
वर्कशाप	विंडो ए.सी., वाटर कूलर, पैनल/पेंडेंट ए.सी., ई आर एस समन्वय आदि
संयंत्र के बाहर	सभी केंद्रीय ए.सी.संयंत्र व पैकेज ए.सी. संयंत्रों का प्रचालन व अनुरक्षण

उपरोक्त प्रणालियों के संयंत्र, संयंत्र के बाहर एवं उक्कुनगरम में पूर्ण रूप से फैले होने के कारण इस विभाग के अंतर्गत नौ जगहों पर स्थापित अनुभागों द्वारा निम्नलिखित अनुसार इन प्रणालियों का समय पर संचालन, प्रचालन एवं मरम्मत सुनिश्चित की जाती है।

प्रशीतन (Refrigeration), शीतलन क्षमता के निर्धारण की मापन इकाई है। एक टन प्रशीतन, 12000 बी टी यू (British Thermal Unit)/घंटे के बराबर है। सामान्यत: वातानुकूलन उपकरणों का आकार टनों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। किसी एक परिवार के लिए सामान्यत: 2-5 टी.आर. के वातानुकूलन उपकरण की आवश्यकता होती है। वातानुकूलन उपकरणों की निहित क्षमता रेटिंग, आंतरिक उपयोग हेतु 80 एफ और बाह्य वातावरण के लिए 95 एफ के ए आर आई प्रमाणित तापमान स्तरों के निष्पादन पर आधारित होता है। किसी प्रणाली के टनों की संख्या, प्रणाली की कुल बी टी यू क्षमता होती है। वातानुकूलन हेतु किसी कार्य क्षेत्र का आकार निम्नलिखित अनुसार टन प्रशीतन प्रणाली के सही आकार को निर्धारित करता है।

1 टी.आर. = 12000 बी.टी.यू./घंटा = 3024 के सी.ए.एल./घंटा = 3.51 के.डब्ल्यू.

वातानुकूलन विभाग द्वारा निम्नलिखित उपस्करों का अनुरक्षण किया जाता है:

क्र.सं.	उपस्कर	रेंज	मात्रा
1	केंद्रीय ए सी संयंत्र	30 - 120 टी आर	26
2	वायु प्रहस्तन इकाई	10 - 72 टी आर	297
3	फैन क्वॉयल इकाई	1.5, 2.0, 3.0 टी आर	252
4	पैकेज ए सी	5.5, 11.0, 17.0, 22.0 टी आर	450
5	क्रेन ए सी	3.0 टी आर	131
6	विंडो ए सी	1.0 टी आर, 1.5 टी आर, 2.0 टी आर	1350
7	स्प्लिट ए सी	1.5 टी आर, 3.0 टी आर	167
8	डक्टेबुल स्प्लिट ए सी	3.0 टी आर, 5.0 टी आर	362
9	पैनल/पेंडेंट ए सी	250 डब्ल्यू, 1000 डब्ल्यू, 1500 डब्ल्यू, 3500 डब्ल्यू	30
10	डीप फ्रीजर	-80^0 सेंटीग्रेड	3
11	प्रेसिशन ए सी	15.0 टी आर	2
12	वाटर कूलर	40 लीटर, 120 लीटर	156
13	ऑयल/वाटर चिल्लर	3.0 टी आर	7

वातानुकूलन ऐसी प्रक्रिया है, जिससे तापमान, नमी, वायु प्रवाह और वायु की शुद्धता का नियंत्रण होता है। इसे वायु के उपचार की प्रक्रिया के रूप में भी परिभाषित किया जाता है, जिससे तापमान, नमी के नियंत्रण के साथ-साथ अनुकूलित क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वायु की शुद्धता और वितरण भी होता है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु योगदान:

पर्यावरण में ओजोन परत को क्षति पहुँचानेवाले सी एफ सी, एच सी एफ सी जैसे रेफ्रिजरेंट्स को कम करने हेतु कई सक्रिय उपाय किये जा रहे हैं।

आर आई एन एल के ध्येय 'एक सम्मानित निगमित नागरिक के रूप में स्वच्छ व हरित पर्यावरण को सुनिश्चित करते हुए अपने आसपास स्थित विभिन्न समुदायों के विकास' की पूर्ति हेतु वायुमंडल में ओजोन परत को क्षति पहुँचानेवाले सी एफ सी रेफ्रिजरेटरों के उपयोग से बचने के संबंध में पर्यावरण व वन मंत्रालय द्वारा निर्धारित मांट्रियल प्रोटोकॉल एंड ओ.डी.एस. फेस आउट निया-2000 के अनुसार आर-12, आर-114, आर-13 जैसे सी.एफ.सी. रेफ्रिजरेटरों के उपयोग के निवारण हेतु स्थायित्व योजना तैयार की गई है।

केंद्रीय ए सी संयंत्रों का उपयोग ऐसी जगहों पर किया जाता है, जहाँ शीतलन लोड 30 टी आर से अधिक हो। कुछ संयंत्रों में एक ही कार्यक्षेत्र के विभिन्न प्रयोक्ताओं को शीतलित जल की आपूर्ति हेतु शीतलित इकाइयाँ भी लगाई गई हैं। वायु प्रहस्तन इकाइयों का उपयोग निर्धारित क्षेत्र से गरम हवा को प्राप्त कर उसे ऊष्मा विनिमय केंद्र में शीतलित जल के माध्यम से ठंडा करके फिर उसी क्षेत्र में भेजने हेतु किया जाता है। फैन क्वॉयल इकाई में भी लगभग इसी प्रौद्योगिकी का अनुसरण किया जाता है। पैकेज वातानुकूलन इकाइयों का मध्यम स्तर के शीतलन लोड के लिए उपयोग किया जाता है। क्रेन ए सी यूनिट 90^0 सेंटीग्रेड के परिवेशी तापमान तक उपयोग में लाये जाते हैं। ये यूनिट कोक ओवेन बैटरियों के चार्जिंग कार, पुशर कार, लोको कार व डोर एक्स्ट्रैक्टर कार, इस्पात गलन शाला के तप्त धातु क्रेन, द्रव इस्पात प्रहस्तन क्रेन व ब्लूम प्रहस्तन क्रेन आदि में लगाये जाते हैं।

वाटर कूलर के उपयोग से 15^0 से 18^0 सेंटीग्रेड के तापमान पर शीतलित पेयजल की आपूर्ति हेतु किया जाता है। ऑयल चिल्लरों का उपयोग सी एन सी लेथ के शीतलक के शीतलन हेतु किया जाता है।

बाल - कविताएँ

शहीदों को सलाम

हिंद वासियों, याद रखना
दिल से निकाल न देना,
वतन के खातिर फाँसी चढ़े, जो
उन्हें देख मुँह मोड़ न लेना।

जवानी के संघर्ष को उनके
मिट्टी में न मिला देना,
माँ भारती के दामन छूने वालों को
नाकों चने चबवा देना।

दुश्मन को पैगाम हमारा
पंगा हमसे ना लेना,
माँ का दर्द पता है हमको
हमको मजबूर ना करना।

इरादे अपने पक्के हैं
आसमान को छूना है,
फौलादी अपनी ताकत है
चट्टानी अपना सीना है।

गर्व से जीना सीखा है हमने
आजादी के दिवानों से,
बलिदान का पाठ पढ़ा हमने
भारत के मतवालों से।

सुनो जवानों! गोली मारो
बॉलीवुड के गानों को,
भारत की पहचान बनाओ
इन्कलाब के नारों को।

माँ

जग पूजे कंकड़-पत्थर
माँ का मरम ना जाना कोई
माँ के मरम को जाने जो
दुनिया उसकी होई।

माँ, ईश्वर से बड़ी बहुत है
जैसे धरती और आकाश
ईश्वर लेता छीन सभी, पर
माँ करती न्योछावर अपनी हर एक सांस।

रात अंधेरी हो या
दिन का हो तूफान
माँ की ममता कभी न हारी
जब संकट में हो संतान।

कभी प्यार की डाँट लगाती
कभी लाड़ से पास बुलाती
बच्चों का दुख अपना समझकर
अपनी खुशियाँ बिखरा देती।

धरती पर ईश्वर ने
ऐस करामात दिखलाया है
अपने बदले इस दुनिया में
माँ का रूप बनाया है।

माँ का कदर न जाना जिसने
सबसे बड़ा बदनसीब है,
माँ के प्यार की कीमत
यारों! दुनिया में अनमोल है।

माँ की महिमा सबसे ऊँची
क्या मोह क्या माया
पूजे उसको जग सारा
नर, नारी जग जाया।

कलयुग में माँ ने
अपनी किस्मत फूटी पाई,
बच्चों ने माँ के ममता की
कीमत को ठुकराई।

- मास्टर गुरुविंदर सिंह
बारहवीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय, उक्कुनगर
मोबाइल: +91 9490607159

दो शिकायतें हैं आपसे

आप थे, हैं और रहेंगे महान
हमारे अपने डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम
प्यार तो बहुत करते हैं आपसे
लेकिन दो शिकायतें भी हैं आपसे,

यूँ तो आप हमारे देश के राष्ट्रपति थे
लेकिन सबके सामने दोस्तों की तरह पेश आते थे।
कम से कम छोटों का तो लिहाज कर लेते
उनके साथ भी आप बच्चे बन जाते थे।

कहते तो थे आपको पूरे राष्ट्र का मिसाइल मैन
लेकिन ऐसे मिसाइल क्यों बनाया
जिससे सिर्फ झगड़े ही बनते हैं।

राष्ट्रपति थे आप हमारे देश के
आपकी सैलरी भी ज्यादा ही होगी
और सुख-सुविधाएँ मिली हैं वे अलग
जब आपके घर वाले पहली बार दिल्ली घूमने आये थे
तो आपने अपनी तरफ से खर्च क्यों उठा लिया
एक हुक्म तो किया होता साहब
सब मुफ्त में हो गया होता
बस ये ही दो शिकायतें थीं आपसे।
अमर रहेगें आप और
अमर रहेंगी आपकी ये यादें।

- फरमान अली अंसारी
बारहवीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय, उक्कुनगर
मोबाइल: +91 7036890051

एक सपना

उम्मीद का मन में दीप जलाए
चली जा रही हूँ मैं,
एक सपने के पीछे भाग रही हूँ मैं
सपना क्या है?
जो चाहे उसे पल में ही पा लेना
सारी दुनिया को इन हथेलियों में भर लेना
अंधेरों में भी भाग रही हूँ मैं
रोशनी की एक किरण को ढूँढ़ रही हूँ मैं
न जाने कब होगा पूरा मेरा सपना
जो मुझे लग रहा था कुछ अपना
लग रहा था खो जाऊँ इस प्यारे सपने में
और कभी न आऊँ इस झूठी दुनिया में
पर क्या फायदा?
कल फिर होगा सवेरा
और टूट जाएगा सपनों का घेरा
पर सपना देखना नहीं छोड़ूँगी मैं
और एक दिन उसे पा लूँगी मैं।

- सुश्री किरण हरदे
बारहवीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय, उक्कुनगर
मोबाइल: +91 8341835710

मदर्स डे

मदर्स डे की सुबह
मेरी बेटी ने सुंदर कार्ड थमाया
बोली प्यार से यूँ, माँ खास आपके लिए है बनाया
देख नन्हीं कलाकारी, मेरा मन हर्षाया
उसमें उंडेला प्यार देख, मेरा मन भर आया
उसी लम्हा, अपनी माँ का चेहरा याद आया
तो फोन घुमाकर उनको शुभकामना दी
औ' पूछा, माँ क्या कभी आपने भी मदर्स डे मनाया?
हँसके बोली मेरी माँ, था तब ऐसा जमाना कहाँ
मदर्स डे मनाने को किसको फुरसत मिलती थी
एक को जन्मा, एक को पाला, यूँ ही जिंदगी चलती थी
मदर्स डे, चिल्ड्रन्स डे, आजकल के चोंचले हैं,
देखना है सही माइने प्यार के,
तो झाँको चिड़ियों के घोंसले
तन छोटा हुआ तो क्या हुआ
पर हौसले हैं बड़े
उनका हर दिन लेवर्स डे
हर रात मदर्स डे होती है
दूर दूर से तिनके लाकर अपना आशियाँ संजोती हैं
दाना दाना मुँह में डाल बच्चों का पेट भरती हैं।
फिर भोजन की तलाश में नई उड़ानें भरती हैं
शाम से पहले घर लौट यूँ फर्ज अदा करती हैं
अगर मदर्स डे मनाना है तो
अपना समय और धन का नेकी से कर उपयोग
ढकिए किसी अधनंगी माँ का तन
चिल्ड्रन्स डे मनाओ दे के भूखे बच्चों को अन्न
लेवर्स डे के दिन मत दुखाओ किसी शरीफ का मन
ऐसे करके आप करेंगे एक पंथ दो काज
एक आपका चोंचला हो जाएगा
दूजा बनेगा सुखी समाज

- शेख शमीम बानू
बारहवीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय, उक्कुनगर

सपना जलेबियों का

- शेख शमीम बानू -

उन दिनों मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ रही थी। एक दिन मैं स्कूल फीस भरने के लिए चार सिक्के अपनी जेब में लेकर विद्यालय गई थी। हालांकि विद्यालय पहुँचते ही मैंने पाया कि उस दिन कक्षाध्यापक नहीं आए थे। अब तो यह हमारी फीस अगले दिन ही जमा हो पाएगी।

इसके बाद मेरी जेब के सिक्के फुदकने लगे। मुझे पूरे दिन इन्हें संभालना मुश्किल हो रहा था। जब मैं विद्यालय से बाहर आई तो मेरी जेब के सिक्के अचानक बोलने लगे और जेब से बाहर निकलने के लिए ऐसे फड़फड़ाने लगे, जैसे उन्हें पंख लग गए हों और जेब खोलते फुर्र हो जाएंगे। उनकी खन-खन की आवाज मेरे कानों में बार-बार गूँजने लगी। विद्यालय के प्रवेश द्वार पर पहुँचते-पहुँचते मुझे अपनी जेब के मुँह को जोर से बंद करना पड़ा। क्योंकि सामने ही मिठाई की दूकान जो लगी थी।

अचानक एक सिक्के ने कहा, 'अरे बुद्धू! मन के बहाव के वेग को क्यों रोकने की चेष्टा कर रही हो? क्या तुम ऐसा तो सोच नहीं रही हो कि अपने मन के वेग को तुम रोक लोगी? ये जो ताजी जिलेबियाँ कढ़ाहियों से गरम-गरम निकल रही हैं, वे किसके लिए निकल रही हैं? अरे मूरख आज की सोचो, कल किसने देखा है? और तुम्हारी जेब के सिक्कों की आवाज भी तो तुमसे वही कह रही है।

मेरे मन ने कहा, 'नहीं, मैं एक अच्छी लड़की हूँ। सिक्के मुझे गलत राह पर ले जाने की कोशिश मत करो। मेरे घर में इन चीजों की कोई कमी नहीं है। वैसे भी खाने-पीने की बाहर की चीजें अच्छी नहीं होती। साथ ही तुम सब इतने उतावले क्यों हो रहे हो? कल तो मैं तुम सबको विद्यालय में जमा ही कर दूँगी। यदि मैंने आज तुम्हें खर्च कर दिया तो कल कहाँ से पैसे लाऊँगी? मास्टर जी को क्या मुँह दिखाऊँगी? तुम्हें पता नहीं है कि मास्टर जी को गुस्सा आता है तो वह बेंच पर खड़ा कर देते हैं और घंटी बजने तक ऐसे ही खड़ा रहना पड़ता है। अच्छा होगा कि तुम मेरे कान खाना बंद करो और मुझे सीधा घर जाने दो।'

मेरी बातें सिक्कों को नहीं भायी। उन लोगों ने फिर से एक बार एक साथ चिल्लाना शुरु कर दिया। उधर से गुजरते लोग भी मेरी जेब की तरफ ही घूर रहे थे। फिर मैंने उन्हें अपनी मुट्ठी में जोर से बंद कर दिया।

कुछ कदम चलने के बाद मैंने अपनी मुट्ठी को ढीला कर दिया। अचानक सबसे बड़े सिक्के ने कहा, 'हम तुम्हारे भले के लिए कह रहे हैं और तुम उल्टा हमें चुप करा रही हो? एक बात सच सच बताओ, क्या तुम्हें स्वादिष्ट जलेबियाँ खाने की इच्छा नहीं है? और वैसे भी तुम्हें तो कल स्कॉलरशिप मिलनेवाला है। तुम उससे फीस भर देना।'

'जो तुम कह रहे हो, वह सही नहीं है', मैंने कहा। 'लेकिन गलत भी तो नहीं। रुको मुझे सोचने दो। ये जलेबियाँ स्वादिष्ट और गरम-गरम लग रही हैं। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती।' यह कहकर मैं तुरंत घर की ओर बढ़ने लगी। सिक्के मुझे रास्ते भर परेशान कर रहे थे। मैं नंगे पाँव बाजार की ओर भागी। हलवाई को पूरे एक रुपए की जलेबियाँ देने के लिए कहा।

जलेबियाँ लेकर मैं एक गली के कोने में चली गई। मैंने इतनी सारी जलेबियाँ खा ली थीं कि अगर मेरे पेट को थोड़ा सा दबाओ तो मेरे नाक-कान से जलेबियाँ निकलती।

अगले दिन मैं फिर स्कूल पहुँची। आज मन में प्रबल लालसा थी कि आज छात्रवृत्ति मिलेगी। आज मैं फीस भी भर दूँगी और कुछ पैसे मेरी जेब खर्च के लिए भी हो जाएंगे।

लेकिन नोटिस बोर्ड पर चिपकायी गई एक सूचना ने मेरे होश उड़ा दी। उसमें लिखा था कि छात्रवृत्ति अगले महीने की **25** तारीख को मिलेगी। मेरी स्थिति तो अब 'काटो तो खून नहीं' जैसी हो गई। मैंने अल्लाह से दुआ माँगना शुरु किया। शायद कोई फरिश्ता आए और चार रुपए मुझे दे दे। भागती हुई मैं एक पेड़ के नीचे पहुँची। मैं फूट-फूट कर रोने लगी। अब जलेबियों का स्वाद मुझे कड़वा लगने लगा। जलेबियों से मुझे नफरत होने लगी। मैंने अल्लाह से दुआ माँगने लगी कि 'या अल्लाह मात्र चार रुपए मेरे बैग में किसी तरह डलवा दे।'

फिर बड़े ही विश्वास के साथ मैंने अपने बैग के पास आकर उसे टटोला। मुझे लगा था कि शायद अल्लाह ने दया करके मेरे बैग में चार रुपए डाल दिया होगा। लेकिन यह भी एक छलावा निकला। मैं जोर जोर से रोने लगी। उल्टे दूसरे दिन कक्षा से मेरी अनुपस्थिति की खबर मेरे घर तक चली गई। घर पर माँ ने समझाया कि 'बेटा! अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखने से चरित्र निर्माण होता है।'

तभी अचानक से किसी ने मेरे चेहरे पर पानी के बूंदें छिड़कीं। आँख खोलकर देखा तो माँ मुझे उठाने की कोशिश कर रही थी। फिर मुझे ज्ञात हुआ कि यह एक सपना था।

- बारहवीं कक्षा
केंद्रीय विद्यालय, उक्कुनगरम
विशाखपट्टणम

मौन

'मौन सर्वोत्तम भाषण है।' गांधीजी का यह विचार कुछ गूढ़ अर्थ वाला जरूर दीखता है, लेकिन सत्य के बिल्कुल करीब है, क्योंकि मौन हमें आत्मचिंतन की ओर ले जाता है। साथ ही यह हमें नाप-तोल कर बोलने की सामाजिक अवधारणा की तरफ मोड़ने की कोशिश करता है। प्राचीन काल में जो महात्मा अपने जीवन को सात्विक और चिंतनशील बनाने के लिए मौन धारण करते थे, उन्हें मुनि की संज्ञा दी जाती थी। हालांकि बाद में इस शब्द का साधारणीकरण हो गया और उसके बाद किसी भी साधु के लिए मुनि शब्द का प्रयोग होने लगा।

मौन तपस्या को सात्विक तपस्या माना जाता है। इससे मन, वचन, कर्म के साथ-सा थ ईर्ष्या, काम, क्रोध आदि पर स्वत: नियंत्रण हो जाता है। प्राय: ऐसा होता है कि जब हम किसी की बहुत चुभने वाली बात को भी नजरंदाज कर देते हैं, तो उससे संभावित बहुत बड़ा विवाद टल जाता है और कभी-कभी ऐसा भी देखने के लिए मिलता है कि हम अनावश्यक मुद्दों में उलझकर विवाद मोल लेते हैं। इसी वजह से अनुभवी लोग आम जनता को अनावश्यक विवादों से बचने के लिए मौन साधना का सुझाव देते हैं।

भारतीय जनमानस में भी अधिक बोलने वाले को वाचाल और अविश्वसनीय माना गया है, अर्थात अधिक बोलने से विवाद बढ़ने की संभावना बनी रहती है और मौन साधने से विवाद तो रुकता ही है, साथ ही सोच-समझकर बात करने से निष्कर्षपूर्ण बात करने का मौका भी मिल जाता है।

आधुनिक काल के मनोवैज्ञानिक भी मौनव्रत के महत्व को स्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि मौन रहने से मनुष्य में आंतरिक शक्ति का संचय होता है और यथासमय उस संचित शक्ति का उपयोग किया जा सकता है। भारतीय दर्शन में मौन साधना को सभी साधनाओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। मानस तप को सबसे सात्विक तप कहा गया है। गीता के बारहवें अध्याय के एक प्रसंग में कहा गया है कि 'ईश्वर मौन व्रत धारण करने वाले अपने भक्तों को सबसे उच्च श्रेणी की कोटि में रखते हैं।' अंग्रेजी में भी एक कहावत है कि 'मौन एक रक्षा कवच है, मूर्खों का भी और ज्ञानियों का भी।'

शास्त्रों में भी कहा गया है कि 'मौनेन कलहनास्ति'। योगशास्त्र के अनुसार मौन एक अनूठा व्रत है। इसका प्रभाव दीर्घगामी होता है। मौन से कभी भी दूसरों को नुकसान नहीं पहुँचता, जबकि अधिक बोलने से समाज में ईर्ष्या, द्वेष, कलह आदि बढ़ते हैं। इसीलिए यह कहावत प्रचलित है कि 'पहले बोली चलती है, फिर बाद में गोली।' महाभारत कथा में द्रौपदी के दुर्योधन पर किए गए कटाक्ष को ही युद्ध का प्रमुख कारण माना जाता है।

ईश्वर ने मानव शरीर में अपने विस्मयकारी चमत्कार को कूट-कूट कर भरा है। कहा जाता है कि मानव शरीर की बनावट, उसकी अवधारणाओं, उसकी संवेदनाओं और संवेगों को जान लेने वाला ब्रह्मज्ञानी हो सकता है। अत: मौन को महत्व इसलिए दिया जाता है कि मौन, मानव मन को नियंत्रित करके उसे अंतर्ज्ञान की ओर प्रवृत्त करता है और मनुष्य जितना अपने आप में डूबता है, उतना ही अपना आत्म साक्षात्कार कर पाता है। आत्म साक्षात्कार करने वाला व्यक्ति ही बुद्ध और विवेकानंद जैसा बन पाता है।

आजकल मानव जीवन सामान्यत: बहुत भागदौड़ पूर्ण और तनावग्रस्त हो गया है। साथ ही छोटे-छोटे विवादों पर बड़ी-बड़ी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। हमारे समाज में असहनशीलता की स्थिति इतनी खराब हो गई है कि आए दिन मामूली कहासुनी के फलस्वरूप हत्या आदि की घटनाएँ सुनने के लिए मिलती रहती हैं या फिर किसी के विवादित बयान दे देने के कारण समाज में विद्रोह भड़क उठता है, जिसके फलस्वरूप कई बेकसूर लोगों की जान चली जाती है और सैकड़ों लोगों की जिंदगी बर्बाद हो जाती है।

अक्सर लोग सोचते हैं कि अधिक अथवा जोर से बोलने से कोई काम जल्दी हो जाता है। लेकिन ऐसा संभव कभी-कभी भय के कारण हो तो जाता है, किंतु मनुष्य के सात्विक गुणों का वहाँ लोप हो जाता है और इससे सभ्य समाज की अवधारणा को क्षति पहुँचती है। इसीलिए स्वामी विवेकानंद ने भी कहा है कि 'आप जितना कम बोलोगे, लोग आपको उतना ही ध्यान से सुनेंगे।'

अत: मौन साधना जीवन का नितांत अंग है। हालांकि इसे साधना बहुत ही कठिन है। फिर भी अपनी आत्मशक्ति अथवा आत्मज्ञान में वृद्धि के लिए मौन धारण करना जरूरी होता है। मौन का उद्देश्य मनुष्य के भीतर की घृणा, ईर्ष्या-द्वेष और क्रोध आदि जैसे मानसिक संवेगों को नियंत्रित करते हुए उसकी आत्मशुद्धि करना होता है और साथ ही उसे ईश्वरत्व से युक्त करना होता है। मनोवैज्ञानिकों ने भी माना है कि मौन से मानसिक शक्तियाँ प्रबल होती हैं और मनुष्य संकल्पशील निर्णय लेने में सक्षम बनता है।

स्वर्गलोक में बफे पार्टी

- श्री ओम प्रकाश मंजुल -

यूँ तो स्वर्गलोक में नित्य ही आनंद रहता है, पर आज के आनंद की बात ही निराली थी। संपूर्ण धाम में मानों हर्ष का सागर बह चला हो और वह भी ज्वार के साथ। जैसा गुड लुक शरीरों में ऊपर से प्रतीत हो रहा था, उससे कहीं अधिक फील गुड लोगों के मन में था। आज उल्लास और उछाल के चंद्रमुखी या सूरजमुखी ही नहीं, सर्वतोमुखी होनेवाली बात ही थी, क्योंकि जो कभी न हुआ, वह आज स्वर्ग में होने जा रहा था - एक अद्‌भुत, अपूर्व चीज। आज स्वर्ग में बफेट पार्टी का आयोजन था। वैसे तो स्वर्गलोक में भूलोक के सापेक्ष सुविधाएँ व विलासिताएँ कहीं अधिक थीं, पर केवल एक चीज की कमी देवलोक के निवासियों के दिलों को आरे की तरह चीरे जा रही थी। और यह थी भूलोक की बफेट पार्टी। तथाकथित भारतीय सेलेब्रिटीज द्वारा दी जानेवाली बफेट पार्टीज को देखकर कभी-कभी देवी-देवता ईर्ष्यावश इतने डिप्रेस्ड हो जाते थे कि व्रजबालाओं की भाँति रो-रोकर परनाले बहा देते थे। हालाँकि भोले-भोले भूवासी इसे शुभ मुहूर्तसूचक इंद्र देव की दया-दृष्टि से होनेवाली वाटर वृष्टि समझ बैठते थे। यूँ देवलोक में भी दावतें उड़ती ही रहती थीं, पर इतनी सुहावनी और लुभावनी नहीं होती थीं, जितनी अपने मृत्युलोक में बफेट पार्टी में होती हैं। स्वर्ग में लकड़ी या फाइबर का फर्नीचर नहीं होता। वहाँ मणि-माणिक्य खचित सोने-चांदी के फर्नीचर होते हैं और रत्नजटित रजत व स्वर्ण पात्रों में भोजन परोसा जाता है। स्वर्ग में सर्विस भी हमारे यहाँ जैसे वेटर नहीं करते, वहाँ सर्विस को बेटर बनाने के लिए वेटरी का कार्य यक्ष और गंधर्व करते हैं।

पार्टी का प्रोग्राम स्वर्ग में हो जरूर रहा था, पर इसके मेजमान दैत्य थे और मेहमान देव। यह एक बफेट पार्टी थी। इसके पृष्ठ में छिपे षडयंत्र का देवताओं को इल्म न था, अन्यथा वे अपनी नाक न कटवाते। ('वह षडयंत्र ही क्या, जो पता चल जाये, याने पकड़े गये तो झाँसा राम, नहीं पकड़े गये तो आसा राम।') दरअसल एक बार दैत्यों को देवों ने पार्टी देकर उनकी जड़ें काट ली थीं। उसी का बदला लेने के लिए आज सैकड़ों साल बाद (जिसे देवता भूल भी चुके थे) दैत्यों ने बफेट पार्टी की दैत्यलीला रची थी। देवताओं ने उस समय राक्षसों के समक्ष शर्त रखी थी कि व्यंजनों को कोई भी अपने हाथ से उठाकर नहीं खायेगा। दानवों को देवताओं द्वारा प्रस्तुत छप्पन भोज्यों को खाना तो था ही और अपना हाथ भी लगाना नहीं था। सो वे सारे के सारे जानवरों की तरह भोजन पर टूट पड़े और सीधे मुँह से से ही माल को उचेलने लगे। वे लप्सी-खीर जैसे तरल पदार्थों को नाक और मुँह दोनों से हड़ोपने लगे। पूर्णत: तृप्त हो जाने के बाद जब वे तनकर खड़े हुए तो पता चला, किसी की नाक में कढ़ी लगी हुई है, किसी के गाल में गाजर के हलुआ का लेप लगा हुआ है। किसी के माथे पर रसमलाई चिपक रही है तो किसी के कानों में अंदर तक गुलाबजामुन का वक्खर पैठ चुका है। किसी की मूँछों पर रायता लग गया है, किसी की दाढ़ी दही से सनी हुई है, किसी की पलकें पनीर से पुत गयी हैं तो इमरतियाँ किसी के सींगों का ऐसा श्रृंगार कर रही हैं, जैसे कुंडल कानों का किया करते हैं। नाक में नमक घुस जाने के कारण कुछ नानस्टॉप छींके जा रहे हैं, तो आँखों में मिर्च पड़ जाने पर कुछ आँखें मलते हुए रोते-चीखते जा रहे हैं। कुछ गले में तंदूरी का फंदा लग जाने के कारण हुच-हुचा रहे हैं। कुछ ने पानी पीने का प्रयत्न किया तो वह जमीन पर गिर गया। यदि जमीन पर नहीं गिरा तोमेज पर ऐसा लुढ़का कि कुछ पानी जाम की तरह छलककर पड़ोसी की प्लेट में पड़ गया और मामला उठा-पटक तक पहुँच गया। कपड़े तो ऐसे हो गये, मानो रंग-बिरंगे चित्रों से मॉडर्न आर्ट अपनी पूरी सज-धज के साथ अवतरित हो गयी हो। और चेहरे ईस्टमैन कलर से लेकर वेस्टमैन कलर और नार्थमैन से लेकर सदनमैन कलर तक, गेवाकलर के साथ जितने भी कलर होते हैं, में रंजित होकर ऐसे चित्र-विचित्र बने थे कि उन्हें देखकर एक बार तो रामजेठमलानी जैसे गंभीर और ज्येष्ठ अधिवक्ता भी बिना हँसे न रह पाते। जब मेजमान देवताओं की बारी आयी तो जिस किसी भी देवता ने अपने हाथ से व्यंजनों को उठाया, खुद न खाकर दूसरे को खिलाता रहा। देवता भोग भी लगाते जा रहे थे और दैत्यों को व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ भोंग भी सुनाते जा रहे थे। देवों ने डटकर भोग भी लगाया और 'मि.क्लीन' भी बने रहे। यह समझिए, उस समय दोनों की स्थितियाँ बिल्कुल ऐसी थीं, जैसे भूलोक पर अभिजात (Snole & Aristocrat) तथा सर्वहारा (सब तरह से हारा) वर्गो की है।

प्रत्येक कार्य को नियत समय पर संपन्न करने के आदी देवता आज खाने के लिए काफी लेट हो चुके थे। सो, भूख से बिलबिला उठे थे। अच्छे मालों पर हाथ साफ करने की लालसा में आज प्रात: का कलेऊ भी उनने कामचलाऊ ही किया था। सो, वे खाने के लिए ऐसे दौड़े, जैसे मृत पशु पर गिद्ध दौड़ता है। लजीज व्यंजनों के लिए लार टपका रहे देवताओं ने यह भी नहीं देखा कि बर्तनों में पात्रता भी है या नहीं, वे साफ भी हैं या नहीं। कइयों ने ऐसी प्लेटें और चम्मचें हथियालीं, जिनपर विगत बफेट की जूठन अब तक लगी हुई थी। अनेकों ने आपाधापी में सलाद

हेतु मूली की जगह प्याज और गाजर की जगह चुकंदर की कतरनें उठा लीं। दैत्यों ने दिल्लगी के लिए एक पात्र में काली तोरई को खीरा की तरह खाँप दिया था। भूख से अंधे और जल्द चाटने को आतुर देवताओं ने काली तोरई की पीसों को ही खीरा की खाँपें समझकर प्लेट में रोप लिया। कागज के रुमालों की हालत यह थी कि कुछ लोग उतावली में एक साथ **3-4** रुमाल ले उड़े, जबकि बहुतों के पल्ले एक भी न पड़ा। कुछ दैत्य पानी के पात्रों में शराब भरकर भी लुत्फ लेने के मूड में थे, पर उनके गुरु शुक्राचार्य ने अच्छी वाली आँख मारकर कह दिया, 'शिष्यों! वत्सों! धोखे का काम शिकार पुर वाले करते हैं। हमारा तो खुला खेल फर्रूखाबादी है। धोखे से मदिरा पिलाकर इन्हें डिगाया, तो क्या डिगाया, हम तो पानी पिलाकर ही इनका 'डम डम डिगा डिगा' कर देंगे। बस तुम देखते जाओ।' अपनी प्लेट को सुसज्जित करने की बेताबी में एक देवता पीछे से आये रेला के धक्के से अगले पर ऐसे गिरे कि अगले की टोपी टमाटर वाले टब में जा डूबी। बाद में ज्ञात हुआ कि इनको धक्का लगने का कारण रेला न होकर मुक्का था। जिसने पीछे के प्रेसर से उनपर गिर पड़ने का ड्रामा किया था, उनसे अगले की पिछले ही सप्ताह औरतबाजी को लेकर मुक्कावाजी हुई थी, जिससे पिछले का जबड़ा अब भी दर्द कर रहा था। ऐसे ही एक देवता चमचा से अभी कोफ्ता निकाल ही रहे थे कि पिछले ने उनसे चमचा तो छीन ही लिया, उन्हें आगे भी धकेल दिया और खुद अपनी प्लेट में, **2** कोफ्ते उड़ेल लिये। ऐसी धींगा मुश्ती में आप ही यदि आगे रहे होते तो आपको भी कोफ्त होता कि 'यार कहाँ जानवरों की पार्टी में आ गये।'

यहाँ तक तो तब भी गनीमत रही। मजा तो तब आया, जब खाने का सिनेरियो शुरु हुआ। लोगों ने एक ही प्लेट में दाल, चावल, सब्जी, पूड़ी, पापड़, पनीर, रायता, रसगुल्ले और न मालूम क्या-क्या अल्लम-गल्लम रख-भरकर वहीं सूतना शुरु कर दिया। प्लेट में सारी चीजें मिलकर लुगदी बन रही थीं। लग रहा था, मानो प्लेट नहीं नाद है, जिसमें भैंस के लिए अनेक चीजों से मिलकर बननेवाली 'सानी' कर रखी हो। देवगुरु, बृहस्पति जैसों का यह हाल था कि चावल (जिसे हाई प्रोफाइल लोग 'पुलाव' कहते हैं) और पनीर के मिश्रण में एक ओर से रसगुल्लों का रस और दूसरे छोर से रायते का छाछ मिलने के लिए डाँस करते आ रहे थे। दोनों ऐसे आतुर लगे, जैसे झगड़े के बाद दोनों पासादी राजीनामा होने पर आपस में गले मिलने और हाथ मिलाने को आतुर होते हैं। और गुरुदेव इस मल्टी टेस्टनल रसायन को ऐसे हड़ोपे जा रहे थे कि कहीं पास वाला न झपट्टा मार बैठे। ऐसी ही चिंता चतुर्दिक खड़े होकर खा रहे देव समाज में देखी गई। आम देवों की हालत और भी अधिक दर्शनीय थी। पानी पास में न होकर बहुत दूर रखा हुआ था। और पानी के ही इंचार्ज वरुण की हालत बहुत करुण थी। उनके गले में पुलाव अटक जाने के कारण उनकी हालत इतनी पतली हो गई कि वे खड़े-खड़े ही खुल्ल-खुल्ल करने लगे। उनके खाँसने से कुछ गर्भवती देवियाँ तो समय की नजाकत को भाँपते हुए वहाँ से खिसक लीं। पर वरुण की घाटी से **2-4** गर्म सीत निकलकर पास खा रहे पवन देव की प्लेट में सुशोभित हो गये। यह कहिए, दोनों टैक्टफुल देवता थे, अन्यथा दोनों में हाथापाई हो जाती। पास में खड़ी सुंदरियों के लिहाज के कारण भी दोनों को शांत रहना पड़ा। अलबत्ता दोनों के बीच शीत युद्ध का शिलान्यास तो हो ही गया। देवताओं की दशा बिगाड़ने में चम्मच मैडम ने भी अहम भूमिका निभाई। देवता नक्शे बाजी में सभी चीजें चम्मच से ही काटकर और उठाकर खा रहे थे। जिस चम्मच से टिक्की और पकौड़ी भी मनचाहे ढंग से नहीं कट पा रही थीं, उससे कुछ एक्स्ट्रा नक्शेबाज रोटी को भी काटने की कोशिश कर रहे थे। चावलों के चहेतों को चम्मच से मजा कम, सजा अधिक मिल रही थी। मुँह की थैली को एकबारगी भरने के लिए उन्हें धारा प्रवाह गति से चार चम्मच दाल व सब्जीयुत चावल मुँह में भरने पड़ते थे, तब मुँह चलाने में स्वाद आता था। पूरी पार्टी में एक देवता अवश्य ऐसे देखे गये, जो हाथ से चावल खा रहे थे। वे जड़भरत जैसे भोंदू और अज्ञानी भी थे। वे विभिन्न स्टालों पर जाकर पूछते फिर रहे थे, 'यह क्या है?' 'इसे क्या कहते हैं?' 'इसे खाया जाता है या पिया जाता है?' 'यह किसके साथ खाया जाता है?' इत्यादि। गनीमत थी, जो इन्होंने नहीं पूछा, 'यह किसके साथ बिछाया जाता है?' कुछ चतुर और शातिर दिमाग देवताओं ने चीजों को एक साथ प्लेट में नहीं रखा। वे क्रम-क्रम करके पकवान ला रहे थे। पर उनकी चालाकी ने सीधे-साधे लोगों की नाक में ही दम कर दिया था। फार एक्जांपल, दूसरे राउंड में एक ही लुक लंब-तड़ंग देवता मुख्य मेज से बैंगन का भुर्ता भर कर ला रहे थे कि एकाएक एक सफेद बुर्राक वस्त्रीय देवता पर दो-तीन चम्मच भुर्ता गिर गया। उनकी वेश-भूषा एकदम भूतल पर विद्यमान भोले बाबा जैसी थी ही तो गुस्सा क्यों न आता। वे जोर से झल्लाए, 'क्या गिरा दिया मेरी बुर्राकी शर्ट पर, इसे आज ही पहना है। दिखाई नहीं देता?' रोवस्ट गॉड ने आँखें तरेर कर मरियल देवता को बताया, 'दिखाई नहीं देता, बैंगन का भुर्ता है?' 'अरे, तब कुछ नहीं। थैंक्यू भैया! थैंक्यू! बैंगन का भुर्ता तो मुझे बेहद पसंद है, प्यारे!' मरियल ने अपनी राय जाहिर की। (जबकि भुर्ता उनकी प्लेट में नहीं, पीठ पर गिरा था।) अमिताभ जैसे एक संतफुटी देवता तीसरे राउंड में पीने के लिए जब रायता लेकर आ रहे थे, तो अफरा-तफरी में सचिन जैसे देवता की कनपटी पर ऐसा पड़ा कि कान के गर्भ-गृह

तक पहुँच गया। काफी मजेदार माजरा वह भी था, जब एक $8^1 \times 4^1$ के मुकस्सर वाले देवता गर्मागर्म गुलाब जामुन ला रहे थे और लाते समय गर्म बक्खर की धार एक देवता की कैप पर धारा प्रवाहित हो गयी। वह उनकी चांद पर ऐसे चप्प से हुई कि उन्होंने बिलबिलाकर कैप उतार ली। उनके कैप उतारते ही, वहाँ खड़े लोग खिलखिलाकर हँसने लगे, क्योंकि उनकी चांद पर एक भी बाल न होने के कारण उनका सिर सर न होकर चाँद का टुकड़ा था। कुछ सब्जियों में शोरबा कम था और अरहर की दाल भी गाढ़ी होकर भात हो रही थी, पर माथे से चू-चूकर गिरनेवाले पसीने और आलराउंड शोर शराबे ने इस कमी को महसूस नहीं होने दिया।

भोज्य पदार्थो के रूप-रस-गंध के मर्मज्ञ, कैटर्स गंधर्व लोक से बुलाये गये थे। ये माने हुए पाकशास्त्री थे। इन्हें पाकविज्ञान का इतना सूक्ष्मतम ज्ञान न था कि एक ग्राम से लेकर एक क्विंटल तक की दाल-सब्जी में कंप्यूटर से कंसल्ट करके नमक-मिर्च, घी-तेल तथा मसाले डालते थे। इनकी प्रिपरेशन एकदम ऑप्टीमम प्रिपरेशन होती थी। इनके द्वारा प्रयुक्त किसी भी सामग्री में न्यूनाधिकता का सवाल ही नहीं उठाया जा सकता था। पर कहते हैं, कितना ही होशियार तैराक हो और होशियार चढ़ाक हो, तैराक की मौत पानी और चढ़ाक की मौत पेड़ से ही होती है। इंग्लिश में इसीलिए ‘To err is human’ कहा गया है। इधर गेस्ट पार्टी में धूमधाम के साथ ही कोहराम भी मचा हुआ था और एक कोने में कैटर-कंपनी में चैटरिंग चल रही थी। हालांकि वे इतना धीमा भी नहीं बोल रहे थे, पर बफेट पार्टी की बुलंद चिल्ल-पों में उनकी आवाज नक्कार खाने में तूती की आवाज जैसी लग रही थी। मास्टर कैटर अपने कारीगर शिष्यों से कह रहा था, ‘सालों! कितनी बार समझा चुका हूँ कि खाना बनाते वक्त मत पिया करो। हरिया के बच्चे ने शाही पनीर में दूना नमक झोंक दिया और टल्ली (संकेत करते हुए) तुम्हें तो बीड़ी पीने से ही फुरसत नहीं मिलती तो नमक-मिर्च क्या कद्दू देखेगा?’ इसपर टल्ली ने आत्मविश्वास से लबालब होकर तपाक से जवाब दिया, ‘उस्ताद! तुम्हारे सर की कसम मैंने कद्दू में थोड़ा-थोड़ा करके श्वार नमक गेरा था।’ उस्ताद चिल्ला ही पड़ता, पर खेल बिगड़ने के भय से जुबान दबाकर रह गया। बोला, ‘कद्दू के बच्चे! तेरी टमाटर की सब्जी में तो नमक पड़ा ही नहीं है।’ ‘ऐं?’ मेन कारीगर ने जिस अनुपात में आँखें बिगाड़ी, उतनी ही डिग्री में आवाज को धीमाकर टल्ली के और करीब खिसककर कहा, ‘ऐं के बच्चे! साले! कहीं आम पार्टी होती, तो लेने के देने पड़ जाते। (देवताओं की ओर संकेत कर) पर, ये खुद ही इतने मस्त हैं कि इन्हें अपनी ही खबर नहीं है। आखिर बफेट के साथ इन हसीन बेवफाओं की अदाओं को भी इन्ज्वाय करना है इन अय्याशों को।’

सबसे ज्यादा दिल्लगी वहाँ आयी, जब एक सुंदर देवबाला को एक मनचले देवता ने कुहनी मार दी। तरुणी युवक की ओर देखकर मुस्कुराहट में जवाब देना ही चाहती थी कि ‘जनाब!’ उसने तिरछी दबी नजर से अपने पति-पदार्थ को नजारा देखते हुए देख लिया। फिर क्या था, तरुणी ने तहलका मचा दिया। हालांकि इतनी बड़ी पार्टी में ऐसी छोटी-मोटी छेड़कानियाँ जाने कितनी ही हो रही थीं। इंद्र जिस पार्टी में हों, वहाँ ऐसी हरकतें होने से रह जायें, यह संसार का आठवाँ आश्चर्य होगा। एक बोनसाई ब्रांड के देवता हाई वोल्टेज फिराक में थे कि सब लोग उनकी ओर मुखातिब हों। सो, डेढ़ टाँग से ही सारी समर भूमि मथे डाल रहे थे। कभी इससे तो कभी उससे हाथ ही मिलाते रहे और सेल्फी से ही बंधे रहे। फोटोग्राफर भी इन्हें ‘संदू’ से संबोधित करते हुए जगह-जगह तरह-तरह के इनके फोटो खींचते रहे। शायद यह सनंदन थे, इसीलिए लोग-बाग इन्हें ‘संदू’ और ‘संदूप’ कहकर पुकारते थे। यह गुटका देव देवता कम ‘समाज सेवी’ अधिक प्रदर्शित हो रहे थे। सभी देवताओं में एक सर्वाधिक स्मार्ट देव अति अदा के साथ घूमते हुए खा रहे थे। उनकी आयु करीब 70 की रही होगी। पर उनके बाल सारे के सारे स्याह थे। उनकी शक्ल कुछ-कुछ ‘हसीना मान जाएगी’ के हीरो जैसी थी। सफारी सूट पर उन्हें काला चश्मा बहुत फब रहा था। यह देव कुछ-कुछ पूर्व दर्शित से लग रहे थे। शायद उज्ज्वला शर्मा, मेरा मतलब, एन.डी. तिवारी के क्षेत्र, देवात्मा हिमालय की सीधवाले स्वर्ग क्षेत्र से थे। टहल-टहल कर खाने की उनकी शौकिया मजबूरी भी थी। खाना खाते समय उनकी नजर प्लेट पर नहीं, प्लेटे नियम की उड़न-तश्तरियों पर उड़ती रहती थी। इसलिए हाथ का चम्मच जैसे ही प्लेट के तरल भोज्य में डालते तो इधर-उधर किसी न किसी देवमोशाय पर 2-4 लाल-पीले छींटे पड़ ही जाते थे। और जब ये लोग मि.स्मार्ट पर लाल-पीले होते थे, तो उन्हें वहाँ से भागना पड़ता था। एक फाइव स्टार एरिस्टोक्रेट को काशीफल में इतनी मिर्च महसूस हुई कि उन्हें ठौर पर ही सारे इनपुट को डाउनलोड करना पड़ा और सारा आउटपुट एक अति शिष्ट देवता की प्लेट में अपलोड हो गया। यह माजरा किसी को मालूम न चल पाया। चाट के स्टालों पर चुटकी लेने लायक कई मामले प्रकाश में आये। सारे प्रसंग तीन घंटे की फिल्म में भी न आ पायेंगे। बतौर बानगी बस 2-3 एपिसोड प्रस्तुत हैं - बताशा के स्टाल पर देवगण ऐसे टूट रहे थे, जैसे मछलियों पर बंगाली गिरते हैं। बताशाव्वाय भी एन्ज्वाय करता हुआ सर्विस कर रहा था। हुआ यह कि बताशा खाते ही एक देवता ने जो शायद कहीं दूसरी जगह खोये हुए थे, बाउल नीचे डाल दिया। उधर बताशा सर्व करनेवाला लड़का मस्त था ही। उसे बस एक ही होश था कि

'बताशा खिलाते जाओ।' सो उसने जलजीरा भरकर बताशे को उनके मुँह में ठूँस दिया। गलती खानेवाले की भी थी। उन्हें वहाँ से आगे बढ़ जाना चाहिए था। वह दूर खड़ी देवियों को देखने में इतना खो गया कि उन्हें यह भी याद नहीं रहा कि वे वहीं खड़े हुए हैं और उनका मुँह अब भी ऐज इट वाज खुला हुआ है। ऐसा तो अनेक मामलों में हुआ कि मीठी की जगह खट्टी और खट्टी की जगह मीठी खटाई पड़ गई है। फ्रूट चाट के स्टाल पर एक देवता का किशोर पुत्र तरबूज के पीस को बिना बीज निकाले ही विदाउट स्टॉप निगले जा रहा था। उसके मस्तिष्क में यह सतत अवेयरनेस थी कि यदि बीज बीन-बीन कर तरबूज खाएगा, तो देवसमाज उसे बैकवर्ड समझेगा। एक सज्जन चम्मच से प्लेट में कुछ चीन्ह रहे थे। पासस्थ देवता ने पूछा, 'क्या काजू ढूँढ़ रहे हैं, प्रभु!' वे तमतमाकर बोले, 'यार! कभी तो सीरियस हो जाया करो। यहाँ पतंगा पड़ गया है और आपको काजू, किशमिश की पड़ी है।' अगले ने मामले को हल्का करने के हिसाब से कहा। पर उन्हें क्या मालूम था कि अगला इसे हमला समझ बैठेगा। बोले, 'यहाँ तो एक भी पतंग उड़ता नजर नहीं आ रहा है? सीलिंग के नीचे पतंगें आ भी कैसे सकते हैं, भैया!?' अगले ने माथा (उनका नहीं, अपना) पीटते हुए कहा, 'कैसे-कैसों से पाला पड़ जाता है यार! भाई मेरे! मैं पतंगा कह रहा हूँ, पतंगा (moth), पतंग या पतंगे नहीं? देख नहीं रहे, बल्ब के चारों ओर पतंगे ऐसे चक्कर काट रहे हैं, जैसे इंद्र एण्ड पार्टी रूपवती देवियों की परिक्रमा कर रही हो। एक पतंगा मेरी प्लेट में भी पड़ गया है। उसी को निकाल रहा हूँ। इधर एक देवता, जो लेट हो गये थे, अभी भी हाँफ रहे थे। पता चला, वे यमराज थे। यूँ वे पर्सनाल्टी से ही वी आई पी लग रहे थे। देर इसलिए हो गयी थी कि वे अभी-अभी मृत्युलोक में एक सम्मन तामील करके आये थे। सम्मन तामीली में देर इसलिए हो गयी थी कि सम्मन एक वकील का था और बदकिस्मती से वकील एक प्रभावशाली पार्टी से एम.पी. भी था। घर पहुँचे तो दरवाजा बंद मिला, क्योंकि यमरानी भी पार्टी में आई हुई थी। वैसे भी 'हैवन बैंक्वेट हाल', जहाँ बफेट पार्टी चल रही थी, उनके आवास के पास ही था। सो, पार्टी की सुगंध बाकायदा उनके यहाँ तक बदस्तूर जा रही थी। तुरंत ही वे बैंक्वेट हाल की ओर मुड़े और गेट पर खड़े पहरेदार को भैंसा सौंपते हुए कड़ी चेतावनी दी, 'देखो! मेरे वाहन पर विशेष ध्यान रखना। भले ही पार्टी में आतंकवादी घुस आयें, पर मेरा भैंसा सुरक्षित रहना चाहिए। इसके बाद वे दौड़कर दावत उचेलने में व्यस्त हो गये।

भोजनोपरांत देवलोक वासी मिठाइयों के चक्कर लगाते देखे गये। देवता अधिकतर रबड़ी की इमरतियों पर और पत्नियाँ रसगुल्लों पर टूट रही थीं। मजे और अजूबे की बात यह थी कि जिन लोगों को घर पर ठंडा पानी लगने से कोल्ड एलर्जी और निमोनियाँ हो जाती है, वे यहाँ आइसक्रीम पर हल्ला बोल रहे थे। कुछ अल्ट्रा स्मार्ट देवताओं ने नेहरू जी की जादूगरी को भी प्रदर्शित व चरितार्थ किया। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू एलर्ट सिटिजन और एलर्ट लीडर तो थे ही, जादूगर भी थे। वह नेहरू जी का जमाना था। उस समय नेहरू जी विश्व में ऐसे हीरो माने जाते थे, जैसे बारात में दूल्हा। बात शायद इंग्लैंड की है। नेहरू जी अपनी कैबिनेट के विदेश मंत्री तथा एक-दो अन्य मंत्रियों सहित शाही पार्टी में निमंत्रित थे। चाय-नाश्ता ले चुकने के बाद नेहरू जी मेजमान, एटली की ओर मुखातिब होकर बोले, 'डियर प्राइम मिनिस्टर! मैं मैजिक भी जानता हूँ, देखेंगे? इसे भी मैं अभी डिस्कवर कर रहा हूँ', (संबंधित मंत्री की ओर संकेत करके) 'देखिए तो! और चम्मच हो तो निकालिए।' मंत्री ने चम्मच निकालकर मेज पर रख दिया। (असल में चाय पीते समय और लोग तो चाय की चुस्कियों में मस्त रहे थे, पर नेहरू जी की खोजी आँखें मंत्री के कारनामे देखती रही थीं। भारत को बदनामी से बचाने के लिए नेहरू जी को उपरोक्त नाटक करना पड़ा था।)

बफे पार्टी का सांगोपांग आँखों देखा हाल केवल ब्रह्माजी और सरस्वती जी ही सुना सकते हैं। यहाँ बहुत लिखे को भी बहुत कम समझें। सने-पुते देव-देवियों को देखकर प्रथमदृष्ट्या होली का माहौल लग रहा था। अंतर था तो बस इतना भर कि होली में चेहरा-मोहरा रंगों से रंजित होता है, जबकि बफे पार्टी में लोगों के वस्त्र व वपु रंग-बिरंगे व्यंजनों से रंगे-पुते थे। इसका प्रमुख कारण यह रहा कि उन्होंने भोजन को बफर स्टॉक के पास खड़े होकर ही भोगना शुरु कर दिया था। देवताओं की दुर्गति देखकर अंततः वयोवृद्ध ब्रह्माजी से नहीं रहा गया। उन्होंने देव समाज को फटकारते हुए कहा, 'आप लोग बफर स्टॉक के पास ही खाने पर ऐसे टूट पड़े थे, जैसे भैंसें नाद में पड़ी सानी (घास, भूसा, खली, चोकर, अनाज आदि का पानी में सना मिश्रण) खाने में भिड़ी हों तथा ज्यादा और जल्दी खा लेने की होड़ में एक-दूसरे को सींग मारती जा रही हों। आप लोगों ने, मेरा मतलब गणमान्य और संभ्रांत जनों ने बफे पार्टी को वास्तव में 'बफेलो पार्टी' बचाकर रख दिया। लोग आपको इतना सम्मान व श्रद्धा देते हैं, पर आपमें इतना भी विवेक नहीं रहा कि वहीं खड़े होकर भोजन चारा की तरह चरने लगोगे तो टकराओगे ही। तुम्हें भोजन की मुख्य मेज से दूर हटकर भोग लगाना चाहिए था।' देवताओं की दुर्गति और अपमान को देखकर दैत्य आज मन ही मन मुस्कुरा रहे थे।

- 'कामायनी' कायस्थान
पूरनपुर-पीलीभीत (उत्तर प्रदेश) 262122
मोबाइल: +91 9457822961

राम की मुस्कुराहट : आज का अनिवार्य आदर्श

- डॉ.टी हैमावती -

मुस्कुराहट मनुष्य के प्रसन्नचित्त होने का प्रतीक है। जब आदमी खुश होता है, उसके चेहरे पर अनायास ही मुस्कुराहट प्रकट हो जाती है, जिससे उसके चेहरे की सुन्दरता तो बढ़ ही जाती है, साथ ही उसके साथी-संगी भी सुखद वातावरण का अनुभव करने लगते हैं। भारतीय पौराणिक आख्यानों में ऐसे अनेक महापुरुषों का वर्णन मिलता है, जिन्होंने अपनी मुस्कुराहट से अपने चारों ओर के माहौल को बहुत ही खुशनुमा बनाया था। ऐसे पात्रों का सृजन करके यदि कोई आधुनिक उपन्यासकार एक भव्य उपन्यास का सृजन करें तो उसका स्वागत किए बिना सहृदय पाठक कैसे रह सकेगा? डॉ. नरेन्द्र कोहली के उपन्यास इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। आजकल ऐसे अनेक उपन्यासकार देखने को मिलते हैं, जो वर्तमान समाज में व्याप्त मूल्यह्रास का चित्रण करके छोड़ देते हैं। लेकिन पौराणिक आख्यानों पर आधारित नरेन्द्र कोहली के उपन्यास वर्तमान समाज के लिए वहुत ही प्रासंगिक हैं।

माना जाता है कि राम की मुस्कान बहुत ही मोहक तथा मनोहारी होती है। जो भी उन्हें मुस्कुराते हुए देखता है, चाहे वह उनका सेनापति हो या उनका मित्र, उनकी दृष्टि राम की मुस्कान में विंध जाती है। उस मुस्कान को देखने के पश्चात् वे राम की किसी भी बात पर तर्क नहीं कर पाते और उनकी हर बात को स्वीकार कर लेते हैं। राम की मुस्कान में इतनी शक्ति व दृढ़ता होती है। डॉ.नरेन्द्र कोहली ने 'अभ्युदय' में राम की मुस्कुराहट का जो चित्रण किया है, उसे पढ़कर कोई भी पाठक कुछ क्षण के लिए वहीं अटक जाता है। सिनेमा या टी वी में हास्यपूर्ण दृश्य देखते वक्त दर्शक का अभिभूत होना स्वाभाविक है। किन्तु कोई उपन्यास पढ़ते वक्त पाठक का ऐसा तल्लीन हो जाना शायद विरले ही होता है। नरेन्द्र कोहली ने राम की मुस्कान का इतना सुन्दर व मार्मिक चित्रण किया है कि उसे पढ़कर पाठक भाव विभोर हो जाता है।

आम तौर पर इन्सान विभिन्न संदर्भों में मुस्कुराता है, हँसता है, ठहाका लगाता है, ठठाकर हँसता है और कभी-कभी अट्टहास भी करता है। राम कथा में ऐसी घटनाएँ प्राय: बहुत कम चित्रित हुई हैं, जबकि राम ने ठहाका लगाया हो या अट्टहास किया हो। उनका संपूर्ण जीवन सदैव संघर्षमय रहा। जब से उन्होंने होश संभाला, निरंतर अनेकानेक समस्याओं से जूझते रहे। माता कैकेयी के प्रति राजा दशरथ के अत्यधिक मोह के कारण माता कौशल्या के प्रति उपेक्षा तथा उदासीनता ने राम को बचपन से ही आर्द्र बना दिया था। माता सुमित्रा से प्राप्त संस्कारों ने उन्हें सदा न्याय तथा सम्मान के लिए संघर्ष करने हेतु प्रेरित किया है। उनके अनुसार व्यक्ति यदि दुर्वल अथवा संरक्षणहीन हो तो अन्य लोगों द्वारा उसका अपमान सहज व आसान हो जाता है। इसलिए उन्होंने हमेशा अन्याय के विरुद्ध युद्ध किया और मानव जाति को भी संघर्षशील बनने की प्रेरणा दी। इतने संघर्षपूर्ण जीवन में भी उनके अधरों पर अकसर चमकनेवाली मुस्कुराहट लोगों को मंत्रमुग्ध कर देती थी।

सिद्धाश्रम में राक्षसी ताड़का एवं उनके पुत्र मारीच व सुबाहु के अत्याचारों से ऋषि विश्वामित्र व्याकुल और क्षुब्ध होकर महाराजा दशरथ से सहायता माँगने अयोध्या पहुँचते हैं। दशरथ सहायता करने की प्रतिज्ञा करते हैं और अपनी चतुरंगिणी सेना लेकर उनकी सहायता के लिए आना चाहते हैं। किंतु विश्वामित्र चाहते हैं कि राजा दशरथ केवल अपने पुत्र राम को दस दिनों के लिए उनके साथ भेजें। इस पर राजा दशरथ दु:खी हो जाते हैं और राम को भेजने में आनाकानी करते हैं। परंतु गुरु वशिष्ठ के समझाने पर वे राम को भेजने के लिए तैयार होते हैं। सुमित्रा अपने तेरह वर्ष के पुत्र लक्ष्मण को भी राम के साथ भेज देती है। वन में राक्षसों के अत्याचारों के कारण होनेवाली विविध विडंबनापूर्ण घटनाओं का वर्णन करते हुए ऋषि विश्वामित्र जब राम से कहते हैं कि 'जिसने स्वयं कभी पीड़ा नहीं देखी, वह दूसरों की व्यथा को नहीं देख पाता।' सुख एक बहुत बड़ा अभिशाप है, जो व्यक्ति को दूसरों की व्यथा की ओर से अंधा कर देता है। फिर भी साधारण व्यक्ति की जिंदगी से परिचित कराने और न्याय-अन्याय का संघर्ष कराने मैं तुम्हें वन में लाया हूँ' तो वे

> राक्षस व्यापारियों से राम बात करते हैं तो वे समझाते हैं कि उनके जलपोत युद्ध के लिए उपयोगी नहीं हैं। तब विभीषण वानरों की निर्धनता की ओर व्यंग्य करते हैं तो वे सह नहीं पाते और सतेज होकर कहने लगते हैं कि 'चाहे जलपोत मिलें या न मिलें, इस जलयान का हम उपयोग कर सकें या न कर सकें, किन्तु आगे से राक्षस लोग इसका उपयोग नहीं कर पाएँगे।' यह कहते समय उनकी वाणी आत्म विश्वास से पूर्ण दीखती है। राम की बातें सुनकर विभीषण जब संकुचित हो जाता है तो पुन: अपने अधरों पर मधुर मुस्कान दिखाकर उनको निर्भय कर देते हैं और उस जल पत्तन को अधिकार में लेने का आदेश देकर वापस चले आते हैं।

उदासी के साथ वक्र ढंग से मुस्कुराते हैं और कहते हैं कि 'एक उपेक्षित माता के सबकी आँखों में खटकनेवाले पुत्र होने के नाते मैं दुख से अनभिज्ञ नहीं हूँ। आपके साथ मुझे भेजने के लिए पिता ने जो आनाकानी की, उसका कारण मेरे प्रति उनका मोह नहीं है, बल्कि किसी न किसी रूप में बढ़ती हुई मेरी उपयोगिता है।'

राम की मुस्कान सदा निर्द्वंद्व और असमंजस रहित होती थी। वे जब कोई निर्णय लेते थे अथवा किसीको कोई वचन देते थे तो निर्द्वंद्व रूप से मुस्कुराते हुए बोलते थे। लंका में प्रवेश करने के प्रयास में सागर संतरण हेतु जलपोतों के लिए प्रयत्न करते समय राम विभीषण, नल, नील आदि के साथ सागर तट पर चलते हुए रावण के एक जल पत्तन पर पहुँचते हैं। परंतु तब तक रावण के सैनिक वह पत्तन खाली कर देते हैं। वहाँ तेजधर नामक ग्रामीण अपने साथियों के साथ राक्षस व्यापारियों को घेरा रहता है। तेजधर अपने और अपने साथियों को राम के सैनिक घोषित करता है। राक्षस व्यापारियों से राम बात करते हैं तो वे समझाते हैं कि उनके जलपोत युद्ध के लिए उपयोगी नहीं हैं। तब विभीषण वानरों की निर्धनता की ओर व्यंग्य करते हैं तो वे सह नहीं पाते और सतेज होकर कहते हैं कि 'चाहे जलपोत मिलें या न मिलें, इस जलयान का हम उपयोग कर सकें या न कर सकें, किन्तु आगे से राक्षस लोग इसका उपयोग नहीं कर पाएँगे।' यह कहते समय उनकी वाणी आत्म विश्वास से पूर्ण दीखती है। राम की बातें सुनकर विभीषण जब संकुचित हो जाता है तो पुन: मधुर मुस्कान के साथ वे उनको अभयदान देते हैं और उस पत्तन को अधिकार में लेने का आदेश देकर वापस चले आते हैं।

अक्सर लोग जब नाराज होते हैं तो उनकी नाराजगी उनके मुख पर दिखाई देती है और दुख देनेवाले व्यक्ति से वे बात करना नहीं चाहते, यहाँ तक कि उनका मुख भी देखना नहीं चाहते। कुछ दिनों के पश्चात् उनकी नाराजगी यदि खत्म भी हो जाए और वे उस व्यक्ति से थोड़ा बहुत बातें भी कर लें, फिर भी उनके मन से यह कसक या पीड़ा नहीं जाती कि अमुक व्यक्ति ने उनका दिल दुखाया है, उन्हें क्लेश पहुँचाया है। परन्तु राम की नाराजगी क्षणिक होती थी। नाराज होने के कुछ क्षणों के पश्चात् राम के अधरों पर जो मुस्कुराहट उभरकर आती थी, वह सचमुच अद्वितीय तथा अलौकिक होती थी। यह प्रवृत्ति दुनिया के बहुत ही कम व्यक्तियों में देखने को मिलती है। इसका मतलब यह नहीं है कि राम को क्रोध ही नहीं आता। उनको क्रोध भी आता है। किंतु उनका क्रोध सात्विक होता है। इसी सात्विक क्रोध के कारण वे न केवल संपूर्ण मानव जाति को पीड़ा पहुँचानेवाले राक्षसों के संहार की दीक्षा ग्रहण करते हैं, बल्कि आर्य संस्कृति में पोषित होकर राक्षसों जैसे व्यवहार करनेवाले अयोध्या के सेनापति बहुलाश्व और उनके पुत्र देवप्रिय को भी मृत्यु दंड देने में संकोच नहीं करते।

ऐसी मान्यता है कि राम बहुत ही सुन्दर, सुडौल, सुगठित शरीर वाले युवक हैं। उनके इस दिव्य सुन्दर रूप को और भी अलौकिक करनेवाली है उनकी मुस्कान। वे जब मुस्कुराते हैं तो देखनेवाले देखते ही रह जाते हैं, न कुछ बोल पाते और न ही कोई दूसरी चीज देख पाते। ताड़का वध के पश्चात विश्वामित्र जनकपुरी के सम्राट सीरध्वज के पास स्थित शिवधनुष को तोड़कर उनकी पोषित पुत्री सीता के साथ राम के विवाह का प्रस्ताव रखते हैं तो पहले राम अत्यंत चकित हो जाते हैं, क्योंकि जब वे विश्वामित्र के साथ यज्ञ के संरक्षण के लिए आए थे तो उनके मन में विवाह की बात नहीं थी। भले ही वे जानते हैं कि उनको विश्वामित्र के साथ भेजते समय राजा दशरथ राम के विवाह के बारे में चर्चा कर रहे थे। शिवधनुष को लेकर विश्वामित्र के मन में बड़ी आशंका है कि यदि वह राक्षसों के हाथ में पड़ गया तो संपूर्ण आर्यावर्त उनसे पीड़ित होगा। यही नहीं, अज्ञातकुलशीला होने के कारण अत्यंत रूपवती और अद्वितीय सुन्दरी होने पर भी सीरध्वज अपनी पोषित पुत्री सीता के लिए उपयुक्त वर ढूँढ़ नहीं पा रहे हैं। 'राम को सबका उद्धार करना होगा। यही उनका धर्म है, यही समय का सत्य है, खंडित सत्य सत्य नहीं होता, सामूहिक सत्य ही सत्य हो सकता है।' यह सब सोचकर राम विश्वामित्र को विवाह की सहमति दे देते हैं। फिर भी वे विश्वामित्र के सम्मुख यह शंका रखते हैं कि जनककुमारी सीता की इच्छा जानना जरूरी है तो विश्वामित्र उन्हें समझाते हैं कि सीता वीर्यशुल्का घोषित हो चुकी है। यह सुनकर राम मौन हो जाते हैं। किन्तु सीरध्वज के प्रांगण में प्रणाम और आशीर्वाद के शिष्टाचार के बीच सीता राम को देखकर आकर्षित हो जाती है कि 'ऊँचा शरीर, चौड़े कंधे, शरीर पर कहीं अनावश्यक चर्बी नहीं, व्यायाम और कठिन प्रशिक्षण में तपा हुआ, दृढ़ माँसपेशियों वाला सुगठित शरीर, साँवला रंग, सहज, ऋजु, भोले चेहरे पर बड़ी-बड़ी गहरी-गंभीर आँखें, तीखी नाक और होंठों की मुस्कान... इस मुस्कान के आगे कुछ नहीं सोचा जाता, कुछ भी नहीं।' सीता के सहज एवं उत्फुल्लित आनंद को देखकर राम आश्वस्त हो जाते हैं।

राम की वाणी और मुस्कान में ऐसी अमोघ शक्ति होती थी कि उसके प्रभाव से शय्या पर पड़ा रोगी भी दौड़ने-दौड़ाने योग्य हो जाता है। वानरराज सुग्रीव अपने भाई बालि के डर से भागकर ऋष्यमूक पर्वत की गुफाओं में छिपा रहता है। बालि द्वारा अपनी पत्नी पर आधिपत्य किये जाने के बावजूद कातरता के कारण वह बालि से लड़ना नहीं चाहता। वह राम से मित्रता करता है और राम की क्षमता की परीक्षा भी लेता है। फिर भी वह राम-लक्ष्मण को बालि के सामने जाने से मना करता है, क्योंकि उसके मन में यह

शंका बनी रहती है कि राम और लक्ष्मण के तेज को देखकर कहीं बालि उनके साथ मित्रता न कर लें। तब राम उसे लड़ने के लिए प्रेरित करते हैं और मुस्कुराते हुए कहते हैं कि 'बालि से युद्ध तुम करोगे। लड़ना तुमको ही पड़ेगा, क्योंकि पीड़ित तुम हो। प्रतिशोध तो तुम्हें ही लेना होगा। जो पीड़ित लड़ता नहीं है, उसका उद्धार संभव नहीं है।' राम की इस कमनीय मुस्कान और मीठे शब्दों से सुग्रीव में आत्म विश्वास का संचार होता है और वह बालि से लड़ने के लिए तैयार हो जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कुछ विशेष प्रसंगों के अंतर्गत 'अभ्युदय' उपन्यास में डॉ.नरेंद्र कोहली ने सहृदय पाठक को यह संदेश दिया कि भगवान द्वारा केवल इन्सान को दिया हुआ अद्भुत वरदान 'मुस्कुराहट' का सही उपयोग केवल राम जैसे अवतार पुरुष ही कर सकते हैं। यदि हम उनकी मुस्कुराहट को देखकर थोड़ा-सा भी सीख लें तो हम भी विकट परिस्थितियों में मुश्किल से ही सही, मुस्कुराने की आदत डाल लें तो हमारा जीवन कितना सुखमय होगा, हमारे मानव संबंध कितने अच्छे होंगे, समाज को हम कितना अमूल्य योगदान दे सकेंगे और तद्वारा देश की प्रगति में अपना हाथ बंटा पाएंगे।

हमारे मुस्कुराने से कई लोग हमारे प्रति आकर्षित हो जाते हैं और लोगों के साथ हमारे संबंध अच्छे बनते है। इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति तब तक धनवान नहीं माना जा सकता, जो मुस्कुराना नहीं जानता हो। मुस्कुराने से हमारे व्यवहार के प्रति काफी सद्भावना बढ़ती है। एक छोटी-सी मुस्कुराहट हतोत्साहित लोगों के मन में उत्साह भर देती है। चिंतित लोगों को खुश कर देती है। श्रांत लोगों की थकान दूर कर देती है। लेकिन याद रखें कि मुस्कुराहट भीख में मिलनेवाली चीज नहीं है, उधार में भी यह नहीं मिल सकती, इसे खरीदा नहीं जा सकता, इसकी चोरी भी संभव नहीं है। यह आत्म-संतुष्टि का प्रतीक है। यह जितनी सहज होगी, प्रतिफल भी उतना ही सहज होगा।

ऐसे बहुमूल्य तथ्य साहित्यिक कृतियों में कदाचित मिलते हैं, लेकिन उनकी तरफ किसी समालोचक का ध्यान नहीं जाता। साहित्य में चित्रित सामाजिक विघटन या मूल्यह्रास का जितना भी विवेचन किया जाए, उसकी तुलना में मानव व्यक्तित्व को सुधारने और उसे विकास के पथ पर आगे ले जानेवाले ऐसे तथ्यों का उपन्यास साहित्य में अनुसंधान करके एक जगह रख दिया जाए तो सहृदय पाठक के लिए काफी उपयोगी हो सकता है।

- प्रबंधक (राजभाषा)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम-530031
मोबाइल: +91 7032911968

संदर्भ ग्रंथ :

1. नरेन्द्र कोहली कृत 'दीक्षा' - पृष्ठ सं.36
2. नरेन्द्र कोहली कृत 'दीक्षा' - पृष्ठ सं.177
3. नरेन्द्र कोहली कृत 'युद्ध - 1' - पृष्ठ सं.206

गजल

- डॉ वीरोत्तमा पातर 'सरगम'

1.
वीत गया क्यूँ प्यारा बचपन
ममता का गहवारा बचपन।
काश, मुझे कोई लौटा दे
चंदा सा उजियारा बचपन।
दिल में चुटकी सी लेता है
मेरा और तुम्हारा बचपन।
चढ़ती ढलती उम्र के लम्हों
जीत गए तुम हारा बचपन।
याद तुम्हें भी आता होगा
चंदा जुगनू तारा बचपन।
गलियों, सखियों और कालेज में
छूट गया बेचारा बचपन।
लेकर फिरती हूँ आँखों में
'सरगम' पारा पारा बचपन।

2.
चल न पाऊँ जिन पे वो राहें न दे
जिंदगी को साँवली रातें न दे।
बेकसों के हाल पर जो नम न हों
ऐ खुदा ऐसी मुझे आँखें न दे।
सर छुपाने को नशेमन चाहिए
अब मुझे टूटी हुई शाखाएँ न दे।
जिनको सुनकर दूसरों को रंज हो
मेरे होंठों को वही बातें न दे।
मान जख्मी हो जिन्हें लेकर मेरा
मुझको तू ऐसी भी सौगातें न दे।
जिनको 'सरगम' हो निभाना दर्देसर
रेशमी रिश्तों को वो शर्तें न दे।

- सहायक निदेशक
हिन्दी शिक्षण योजना, विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9581341715

आओ भाषा सीखें

मई के दूसरे इतवार को पूरे विश्व में माताओं के सम्मान में 'मदर्स डे', यानि 'मातृ दिवस' मनाया जाता है। दुनिया में माता-पिता से बढ़कर कोई पूज्य नहीं हैं। माताओं के स्मरण में 'सुगंध' के इस अंक में यह निम्नलिखित संवाद दिया जा रहा है। आशा है कि पाठक हमारे इस प्रयास से संतुष्ट होंगे।

मुरली : रवि! आज मुझे शापिंग के लिए जाना है और एक अच्छा सा तोहफा खरीदना है।
మురళి : రవి! ఆజ్ ముఝే షాపింగ్ కే లియే జానా హై ఔర్ ఏక్ అచ్ఛా సా తోహ్ఫా ఖరీద్నా హై.
మురళి : రవి! ఈరోజు నేను షాపింగ్ కి వెళ్ళాలి, ఇంకా ఒక మంచి బహుమతి కొనాలి.
मुरली : रवि! ईरोजु शापिंग कि वेल्लालि, इंका ओक मंचि बहुमति कोनालि।
रवि : क्या, कोई खास बात है?
రవి : క్యా, కోయి ఖాస్ బాత్ హై?
రవి : ఏం, ఏమైనా విశేషం ఉందా?
रवि : एम्, एमैना विशेषम् उंदा?
मुरली : हाँ, कल इतवार को 'मदर्स डे' है। इस मौके पर मैं माँ के लिए एक अच्छा सा तोहफा खरीदना चाहता हूँ।
మురళి : హాఁ, కల్ ఇత్వార్ కో 'మదర్స్ డే' హై. ఇస్ మౌకే పర్ మైఁ మాఁ కే లియే ఏక్ అచ్ఛా సా తోహ్ఫా ఖరీద్నా చాహ్తా హూఁ.
మురళి : అవును, రేపు ఆదివారం 'మదర్స్ డే'. కాబట్టి నేను అమ్మకోసం ఒక మంచి కానుక కొనాలనుకుంటున్నాను.
मुरली : अवुनु, रेपु आदिवारम् 'मदर्स डे'। काबट्टि नेनु अम्मकोसम् ओक मंचि कानुक कोनालनुकुंटुन्नानु।
रवि : 'मदर्स डे'... यह क्या होता है?
రవి : 'మదర్స్ డే'.... యహ్ క్యా హోతా హై?
రవి : 'మదర్స్ డే'.... అంటే ఏంటి?
रवि : 'मदर्स डे' ... अंटे एंटि?
मुरली : यार, तुम 'मदर्स डे' के बारे में कुछ नहीं जानते...?
మురళి : యార్, తుమ్ 'మదర్స్ డే' కే బారే మేఁ కుఛ్ నహీ జాన్తే...?
మురళి : అరే, నీకు 'మదర్స్ డే' గురించి ఏమీ తెలీదా...?
मुरली : अरे, नीकु 'मदर्स डे' गुरिंचि एमी तेलीदा...?
रवि : मैंने 'चिल्ड्रेन्स डे' के बारे में सुना है, लेकिन मदर्स डे क्यों मनाया जाता है, यह पता नहीं।
రవి : మైఁనే 'చిల్డ్రన్స్ డే' కే బారే మేఁ సునా హై, లేకిన్ మదర్స్ డే క్యోం మనాయా జాతా హై, యహ్ పతా నహీఁ.
రవి : నేను 'చిల్డ్రన్స్ డే' గురించి విన్నాను, కాని మదర్స్ డే ఎందుకు జరుపుకుంటారో, నాకు తెలీదు.
रवि : नेनु 'चिल्ड्रन्स डे' गुरिंचि विन्नानु, कानि मदर्स डे एंदुकु जरुपुकुंटारो, नाकु तेलीदु।
मुरली : रवि...! माताओं ने समाज की जो सेवा की है, उसकी स्मृति में 'मदर्स डे' मनाया जाता है।
మురళి : రవి....! మాతావోఁ నే సమాజ్ కీ జో సేవా కీ హై, ఉస్‌కీ స్మృతి మేఁ 'మదర్స్ డే' మనాయా జాతా హై.
మురళి : రవి...! తల్లులు సమాజానికి చేసిన సేవలకు గుర్తుగా 'మదర్స్ డే' జరుపుతారు.
मुरली : रवि...! तल्लुलु समाजानिकि चेसिन सेवलकु गुर्तुगा 'मदर्स डे' जरुपुतारु।
रवि : अच्छा, मुझे बिल्कुल मालूम नहीं है।
రవి : అచ్ఛా, ముఝే బిల్‌కుల్ మాలూమ్ నహీఁ హై.
రవి : అవునా, నాకు అసలు తెలీదు.
रवि : अवुना, नाकु असलु तेलीदु।
मुरली : अमेरीका की एक महिला मेरी जार्विस ने सरकार से 'मदर्स डे' मनाये जाने का अनुरोध किया था।
మురళి : అమెరీకా కీ ఏక్ మహిలా మేరీ జార్విస్ నే సర్కార్ సే 'మదర్స్ డే' మనాయే జానే కా అనురోధ్ కియా థా.

మురళి : అమెరికాకు చెందిన మేరీ జార్విస్ అనే ఒక మహిళ 'మదర్స్ డే' జరపాలని ప్రభుత్వాన్ని కోరింది.
मुरली : अमेरिकालो मेरी जार्विस अने ओक महिला 'मदर्स डे' जरपालनि प्रभुत्वान्नि कोरिंदि।
रवि : इसकी कोई वजह है क्या?
రవి : ఇస్‌కీ కోయీ వజహ్ హై క్యా?
రవి : దీనికి కారణం ఏమైనా ఉందా?
रवि : दीनिकि कारणम् एमैना उंदा?
मुरली : मेरी जार्विस की माँ चाहती थी कि महिलाओं, खासकर माताओं के सम्मान में कोई खास दिन होना चाहिए।
మురళి : మేరీ జార్విస్ కీ మాఁ చాహ్‌తీ థీ కి మహిలావోఁ, ఖాస్‌కర్ మాతావోఁ కే సమ్మాన్ మేఁ కోయీ ఖాస్ దిన్ హెూనా చాహియే.
మురళి : మేరీ జార్విస్ తల్లి మహిళలకు, ముఖ్యంగా తల్లుల గౌరవార్థం ఒక రోజును కేటాయించాలని కోరుకునేది.
मुरली : मेरी जार्विस तल्लि महिललकु, मुख्यंगा तल्लुल गौरवार्थम् ओक रोजुनु केटाइंचालनि कोरुकुनेदि।
रवि : तो...
రవి : తో...
రవి : అయితే...
रवि : अइते...
मुरली : अमेरीकी सरकार के समक्ष उन्होंने अपनी बात रखी। लेकिन उनकी इच्छा पूरी होने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई थी।
మురళి : అమెరీకీ సర్‌కార్ కే సమక్ష్ ఉన్హోంనే అప్‌నీ బాత్ రఖీ. లేకిన్ ఉన్‌కీ ఇచ్ఛా పూరీ హెూనే సే పహ్‌లే హీ ఉన్‌కీ మృత్యు హెూ గయీ థీ.
మురళి : ఆమె అమెరికా ప్రభుత్వానికి తన కోరికను తెలియజేసింది. కాని తన కోరిక తీరేలోపు ఆమె మరణించింది.
मुरली : आमे अमेरिका प्रभुत्वानिकि तन कोरिकनु तेलियजेसिंदि। कानि तन कोरिक तीरेलोपु आमे मरणिंचिंदि।
रवि : अच्छा, उसके बाद क्या हुआ...?
రవి : అచ్ఛా, ఉస్‌కే బాద్ క్యా హువా...?
రవి : అవునా, ఆ తరువాత ఏమైంది...?
रवि : अवुना, आ तरुवात एमैंदि...?
मुरली : उनकी बेटी मेरी जार्विस ने 'मदर्स डे' मनाने की अपनी बात फिर से सरकार के समक्ष रखी।
మురళి : ఉన్‌కీ బేటీ మేరీ జార్విస్ నే 'మదర్స్ డే' మనానే కీ అప్‌నీ బాత్ ఫిర్ సే సర్‌కార్ కే సమక్ష్ రఖీ.
మురళి : ఆమె కుమార్తె మేరీ జార్విస్ 'మదర్స్ డే' జరపాలన్న తన కోరికను ఇంకోసారి ప్రభుత్వానికి తెలియజేసింది.
मुरली : आमे कुमार्ते मेरी जार्विस 'मदर्स डे' जरपालन्न तन कोरिकनु इंकोसारि प्रभुत्वानिकि तेलियजेसिंदि।
रवि : क्या सरकार ने उनकी बात स्वीकार कर ली?
రవి : క్యా సర్‌కార్ నే ఉన్‌కీ బాత్ స్వీకార్ కర్ లీ?
రవి : అయితే ప్రభుత్వం ఆమె కోరికను అంగీకరించిందా?
रवि : अइते प्रभुत्वम् आमे कोरिकनु अंगीकरिंचिंदा?
मुरली : **9** मई, **1914** के दिन अमेरीका ने राष्ट्रीय स्तर पर 'मदर्स डे' मनाये जाने की घोषणा की।
మురళి : 9 మయీ, 1914 కే దిన్ అమెరీకా నే రాష్ట్రీయ స్తర్ పర్ 'మదర్స్ డే' మనాయే జానే కీ ఘోషణా కీ.
మురళి : 9 మే, 1914 న అమెరికాలో జాతీయ స్థాయిలో 'మదర్స్ డే' జరపాలని ప్రకటించారు.
मुरली : **9** मे, **1914** न अमेरिकालो जातीय स्थाइलो 'मदर्स डे' जरपालनि प्रकटिंचारु।
रवि : क्या उस दिन माताओं का सम्मान किया जाता है?
రవి : క్యా ఉస్ దిన్ మాతావోఁ కా సమ్మాన్ కియా జాతా హై?
రవి : అంటే ఆ రోజు తల్లులను గౌరవిస్తారా?
रवि : अंटे आ रोजु तल्लुलनु गौरविस्तारा?
मुरली : नहीं, लड़ाई में शहीद नौजवानों के प्रति उनकी माताओं के समक्ष श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

మురళి : నహీం, లడాయి మేం షహీద్ నౌజవానోం కే ప్రతి ఉన్‌కీ మాతావోం కే సమక్ష్ శ్రద్ధాంజలి అర్పిత్ కీ జాతీ హై.
మురళి : లేదు, యుద్ధంలో మరణించిన సైనికుల పట్ల వారి తల్లుల సమక్షంలో శ్రద్ధాంజలి ఘటిస్తారు.
मुरली : लेदु, युद्धंलो मरणिंचिन सैनिकुल पट्ल वारि तल्लुल समक्षंलो श्रद्धांजलि घटिस्तारु।
रवि : और...
రవి : ఔర్...
రవి : ఇంకా....
रवि : इंका...
मुरली : **1934** में अमेरीकी राष्ट्रपति फ्रेंक्लिन डी ने 'मदर्स डे' के अवसर पर एक डाक टिकट जारी किया।
మురళి : 1934 మేం అమెరీకీ రాష్ట్రపతి ఫ్రాంక్లిన్ డీ నే 'మదర్స్ డే' కే అవసర్ పర్ ఏక్ డాక్ టికట్ జారీ కియా.
మురళి : 1934 లో అమెరికా రాష్ట్రపతి ఫ్రాంక్లిన్ డీ 'మదర్స్ డే' సందర్భంగా ఒక తపాలా బిల్లు విడుదల చేసారు.
मुरली : **1934** लो अमेरिका राष्ट्रपति फ्रैंक्लिन डी 'मदर्स डे' संदर्भगा ओक तपाला बिल्लु विडुदल चेसारु।
रवि : अच्छा...
రవి : అచ్ఛా....
రవి ఓహో....
रवि : ओहो...
रवि : माँ बच्चों की पहली गुरु होती है। उन्हें बोलना, चलना सब कुछ माँ ही सिखाती है।
రవి : మాం బచ్చోం కీ పహ్‌లీ గురు హోతీ హై. ఉన్హే బోల్‌నా, చల్‌నా సబ్ కుఛ్ మాం హీ సిఖాతీ హై.
రవి : పిల్లలకు తల్లే మొట్టమొదటి గురువు. వాళ్ళకి మాట్లాడడం, నడవడం అంతా తల్లే నేర్పుతుంది.
रवि : पिल्ललकु तल्ले मोट्टमोदटि गुरुवु। वाल्लकि माट्लाडडम्, नडवडम् अंता तल्ले नेर्पुतुंदि।
मुरली : महात्मा गांधी जी ने भी अपनी माँ को दिये वचन के मुताबिक दक्षिण अफ्रीका में माँस नहीं खाया।
మురళి : మహాత్మా గాంధీ జీ నే భీ అప్‌నీ మాం కో దియే వచన్ కే ముతాబిక్ దక్షిణ్ అఫ్రీకా మేం మాంస్ నహీం ఖాయా.
మురళి : మహాత్మా గాంధీగారు కూడా తన తల్లికిచ్చిన మాట ప్రకారం దక్షిణ ఆఫ్రికా లో మాంసం ముట్టలేదు.
मुरली : महात्मा गांधीगारु कूडा तन तल्लकिच्चिन माट प्रकारम् दक्षिण आफ्रिका लो मांसम् मुट्टलेदु।
रवि : ऐसे कई लोग हैं, जिन्होंने अपनी माता की बातों सम्मान किया और जीवन में सफलता हासिल की।
రవి : ఐసే కయీ లోగ్ హైం, జిన్హోంనే అప్‌నీ మాతా కీ బాతోం కా సమ్మాన్ రఖా ఔర్ జీవన్ మేం సఫలతా హాసిల్ కీ.
రవి : తమ తల్లికిచ్చిన మాటకు కట్టుబడి జీవితంలో విజయాలు సాధించినవాళ్ళు చాలామంది ఉన్నారు.
रवि : तम तल्लिकिच्चिन माटकु कट्टुबडि जीवितंलो विजयालु साधिंचिनवाल्लु चालामंदि उन्नारु।
मुरली : हम कितना भी प्रयास करें, लेकिन माँ का ऋण चुका नहीं सकते।
మురళి : హమ్ కిత్‌నా భీ ప్రయాస్ కరేం, లేకిన్ మాం కా ఋణ్ చుకా నహీం సక్‌తే.
మురళీ : మనం ఎంత చేసినా తల్లి ఋణం ఎప్పటికీ తీర్చుకోలేము.
मुरली : मनम् एंत चेसिना तल्लि ऋणम् एप्पटिकी तीर्चुकोलेमु।
रवि : चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलकर अपनी माँ के लिए कोई तोहफा ले लूँ।
రవి : చలో, మైం భీ తుమ్హారే సాథ్ చల్‌కర్ అప్‌నీ మాం కే లియే కోయీ తోహ్‌ఫా లే లూం.
రవి : పద, నేను కూడా నీతో పాటు వచ్చి మా అమ్మకు ఏదేని కానుక తీసుకుంటాను.
रवि : पद, नेनु कूडा नीतो पाटु वच्चि मा अम्मकु एदेनि कानुक तीसुकुंटानु।
मुरली : अच्छा, चलो।
మురళి : అచ్ఛా, చలో.
మురళి : సరే, పద.
मुरली : सरे, पद।

- प्रवंधक (राजभाषा), राजभाषा विभाग
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
मोबाइल: +91 9866321109

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिल्ली स्थित कार्यालय का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 09.06.2015 को राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र के दिल्ली स्थित क्षेत्रीय कार्यालय का हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित निरीक्षण किया गया। निरीक्षण कार्यक्रम में समिति के उपाध्यक्ष डॉ सत्यनारायण जटिया, संयोजक श्री हुक्मदेव नारायण यादव, समिति के माननीय सदस्यगण श्री जयप्रकाश नारायण यादव, श्री संतोष कुमार, श्री शादी लाल बत्रा तथा समिति के सचिव श्री सूरज भान एवं अन्य प्राधिकारी भी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड - विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो. मधुसूदन ने समिति के माननीय उपाध्यक्ष महोदय एवं माननीय सदस्यों एवं इस्पात मंत्रालय के प्राधिकारियों का पुष्पगुच्छ एवं शाल ओढ़ाकर स्वागत किया। तत्पश्चात समिति के उपाध्यक्ष महोदय एवं माननीय सदस्यों ने राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की समीक्षा की एवं संगठन में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु उपयुक्त मार्गदर्शन व दिशानिर्देश भी दिये। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पो. मधुसूदन ने उन्हें शतप्रतिशत अनुपालन का आश्वासन दिया।

इस समीक्षा कार्यक्रम के दौरान इस्पात मंत्रालय की ओर से संयुक्त सचिव महोदया श्रीमती उर्विला खाती, निदेशक श्री टी श्रीनिवास तथा संयुक्त निदेशक श्री शैलेश कुमार सिंह एवं राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड - विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र के निदेशक (कार्मिक) डॉ जी बी एस प्रसाद, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) - गैर संकर्म व मानव संसाधन विभाग, श्री टी सुंदर, क्षेत्रीय प्रबंधक (उत्तर) श्री अरविंद पांडे एवं राजभाषा विभाग के प्राधिकारी उपस्थित थे।

जरा गौर करें

‘उम्मीदों के दिये बुझाया नहीं करते
दूर हो मंजिल, पाँव डगमगाया नहीं करते
हो दिल में जिसके जज्बा मंजिल छूने का
वो मुश्किलों से घबराया नहीं करते ...’

महज एक साल की उम्र में ही पिता के साये से वंचित एक लड़की ने अपनी माँ और परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से इस उक्ति को साबित कर दिखाया। अपनी बड़ी बहन और भाई के साथ स्कूल जाने वाली उस बच्ची का मन हमेशा खेलकूद में अधिक लगता था। वह फुटबाल, वॉलीबाल और हॉकी खेलने में ज्यादा दिलचस्पी दिखाती थी। जब कभी मौका मिलता, वह मैदान में खेलने चली जाती। उसका इस प्रकार मैदान में खेलना जाने-पहचाने लोगों को खटकता था। कुछ लोग तो उसपर फब्तियाँ भी कसते थे। फिर भी उसने बड़ी हिम्मत से सबका सामना किया। घर के सदस्यों के प्रोत्साहन से उसने बहुत सी प्रतियोगिताओं में भाग लिया और कई पुरस्कार भी जीते।

उसकी प्रतिभा खेलकूद तक ही सीमित न थी। उसने कानून की पढ़ाई करके एल.एल.बी. की परीक्षा भी पास कर ली। केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सी.आई.एस.एफ.) के नौकरी के बुलावे पर जब वह नोयडा जा रही थी तो रेलगाड़ी में कुछ बदमाशों ने उसके गले की चेन खींचने का प्रयास किया। उसने अकेले उन बदमाशों से जूझने का निर्णय लिया। पर बदमाशों के आगे उसकी एक न चली और बदमाशों ने उसे लात मारकर चलती गाड़ी से बाहर फेंक दिया। गाँव वालों की मदद से उसे अस्पताल पहुँचाया गया। उसे बहुत चोटें आई थीं। उसका एक पैर बेकार हो गया। जान बचाने के लिए उसके बायें पैर को काटना पड़ा।

इसके बावजूद भी वह विकलांगता को चुनौती दी। उसने बचेंद्री पाल के सहयोग से आवश्यक प्रशिक्षण लेकर अपने कृत्रिम पैर के सहारे ही माउंट एवरेस्ट पर फतह पाने का निर्णय लिया और **29** मई, **2013** को मात्र **26** साल की उम्र में माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा फहरा दिया। यह महिला और कोई नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले की अरुणिमा सिन्हा है, जो अब अपने दृढ़ संकल्प एवं मेहनत से दुनिया भर के लोगों के लिए प्रेरणा-स्रोत बन गई हैं। भारत सरकार ने **66**वें गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान अरुणिमा सिन्हा को खेलकूद के क्षेत्र में उसकी अद्भुत व विशिष्ट सेवा हेतु ‘पद्मश्री’ से सम्मानित किया।

अरुणिमा सिन्हा मात्र अपनी इस कामयाबी से संतुष्ट नहीं हैं। वह विकलांग लोगों को सहयोग देकर उन्हें जीवन में असाधारण सफलता हासिल करने के योग्य बनाना चाहती हैं।

आर.आइ.एन.एल RINL
VIZAG STEEL
Pride of Steel
नवरत्न कंपनी